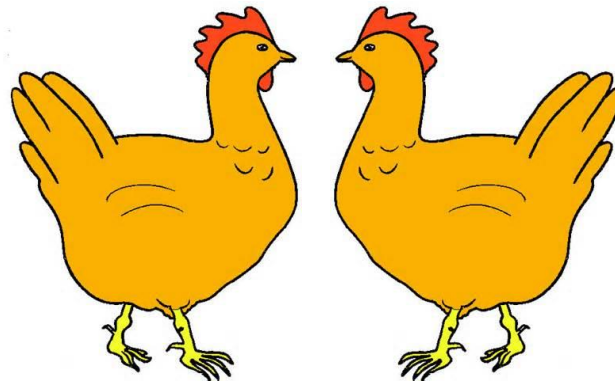


देश विदेश की लोक कथाएँ — जानवरों की भाषा :



जानवरों की भाषा



चयन और अनुवाद

सुषमा गुप्ता

2022

Book Title: Jaanvaron Ki Bhasha (Folktales of Animal Language)
Cover Page picture : Two Roosters Conversing
Published Under the Auspices of Akhil Bhartiya Sahityalok

E-Mail: hindifolktales@gmail.com

Website: www.sushmajee.com/folktales/index-folktales.htm

Copyrighted by Sushma Gupta 2018

No portion of this book may be reproduced or stored in a retrieval system or transmitted in any form, by any means, mechanical, electronic, photocopying, recording, or otherwise, without written permission from the author.

Map of the World



विंडसर, कॅनेडा

2022

Contents

देश विदेश की लोक कथाएँ	5
जानवरों की भाषा	7
1 राजा अश्वपति	9
2 कृतज्ञ साँप	12
3 जानवरों की भाषा-1	21
4 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी	44
5 एक बैल और एक गधा	54
6 जानवरों की बोली	66
7 साँप की भेंट जानवरों की भाषा	77
8 मारो लेकिन सुनो भी	87
9 चिड़ियों की भाषा-1	99
10 चिड़ियों की भाषा-2	109
11 चार राजकुमार	115
12 जानवरों की भाषा-3	149

देश विदेश की लोक कथाएँ

लोक कथाएँ किसी भी समाज की संस्कृति का एक अटूट हिस्सा होती हैं। ये संसार को उस समाज के बारे में बताती हैं जिसकी वे लोक कथाएँ हैं। आज से बहुत साल पहले, करीब 100 साल पहले, ये लोक कथाएँ केवल ज़बानी ही कही जाती थीं और कह सुन कर ही एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी को दी जाती थीं इसलिये किसी भी लोक कथा का मूल रूप क्या रहा होगा यह कहना मुश्किल है।

आज हम ऐसी ही कुछ अंग्रेजी और कुछ दूसरी भाषा बोलने वाले देशों की लोक कथाएँ अपने हिन्दी भाषा बोलने वाले समाज तक पहुँचाने का प्रयास कर रहे हैं। इनमें से बहुत सारी लोक कथाएँ हमने अंग्रेजी की किताबों से, कुछ विश्वविद्यालयों में दी गयी थीसेज़ से, और कुछ पत्रिकाओं से ली हैं और कुछ लोगों से सुन कर भी लिखी हैं। अब तक 2500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी हैं। इनमें से 400 से भी अधिक लोक कथाएँ तो केवल अफ्रीका के देशों की ही हैं।

इस बात का विशेष ध्यान रखा गया है कि ये सब लोक कथाएँ हर वह आदमी पढ़ सके जो थोड़ी सी भी हिन्दी पढ़ना जानता हो और उसे समझता हो। ये कथाएँ यहाँ तो सरल भाषा में लिखी गयी हैं पर इनको हिन्दी में लिखने में कई समस्याएँ आयी हैं जिनमें से दो समस्याएँ मुख्य हैं।

एक तो यह कि करीब करीब 95 प्रतिशत विदेशी नामों को हिन्दी में लिखना बहुत मुश्किल है चाहे वे आदमियों के हों या फिर जगहों के। दूसरे उनका उच्चारण भी बहुत ही अलग तरीके का होता है। कोई कुछ बोलता है तो कोई कुछ। इसको साफ करने के लिये इस सीरीज़ की सब किताबों में फुटनोट्स में उनको अंग्रेजी में लिख दिया गया है ताकि कोई भी उनको अंग्रेजी के शब्दों की सहायता से कहीं भी खोज सके। इसके अलावा और भी बहुत सारे शब्द जो हमारे भारत के लोगों के लिये नये हैं उनको भी फुटनोट्स और चित्रों द्वारा समझाया गया है।

ये सब कथाएँ “देश विदेश की लोक कथाएँ” और “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” नाम की सीरीज़ के अन्तर्गत छापी जा रही हैं। ये लोक कथाएँ आप सबका मनोरंजन तो करेंगी ही साथ में दूसरे देशों की संस्कृति के बारे में भी जानकारी देंगी। आशा है कि हिन्दी साहित्य जगत में इनका भव्य स्वागत होगा।

सुषमा गुप्ता

2022

जानवरों की भाषा

प्रकृति के सभी प्राणी आपस में बात करते हैं और इसके लिये वे सब अपनी अपनी भाषा का इस्तेमाल करते हैं। एक दूसरे की भाषा समझना थोड़ा मुश्किल काम जरूर है पर नामुमकिन नहीं है। इसके लिये लोगों को उनकी भाषा सीखनी पड़ती है। क्या हो अगर दूसरों की भाषा किसी के वरदान से अपने आप ही आ जाये? यह तो कितने मजे की बात है। है न?

यहाँ ऐसी ही कुछ लोक कथाएँ दी जा रही हैं जिनमें या तो किसी के वरदान से या फिर ऐसे ही लोगों ने जानवरों की भाषा समझनी सीख ली है। पर सामान्यतया एक शर्त के साथ कि अगर वे यह बात किसी को बतायेंगे तो वे मर जायेंगे। पर करीब करीब सारी कथाओं में इस वरदान को पाने वाला जानवरों की बातें सुन कर हँस पड़ता है जिससे उसके पास बैठने वाले आदमी को यह लगता है कि वह क्यों हँसा क्योंकि उसको वहाँ हँसने वाली कोई बात नजर ही आती। इससे उसके साथ वाले आदमी को गलतफहमी हो जाती है और वह परेशान हो जाता है। उस गलतफहमी को दूर करने के लिये उस वरदान पाने वाले आदमी को अपनी वरदान वाली बात बनानी पड़ती है कि वह क्यों हँस रहा था क्योंकि वह उस आदमी को बार बार नहीं टाल सकता। और यह बता कर वह मर जाता है।

इन सब लोक कथाओं में एक बात बड़ी अजीब सी है कि यह समझ में नहीं आता कि वह आदमी मरने के डर से उस वरदान का भेद छिपा क्यों नहीं सका या वह हँसा ही क्यों। इन कथाओं में सारे ही आदमी इतने बेवकूफ क्यों हैं। लेकिन फिर उनके साथ होता क्या क्या है यह देखने वाली बात है।

इन लोक कथाओं में सबसे पहले वाली कहानी कहानी नहीं बल्कि एक सच्ची घटना है। और उसके हीरो का फैसला भी बहुत ही ठीक है। यह घटना भारत की एक धार्मिक पुस्तक से ली गयी है। आखिरी पाँच लोक कथाएँ पहली लोक कथाओं से बिल्कुल अलग है। इनमें से एक लोक कथा में एक लड़के ने जानवरों की भाषा सीखी है यानी कि वह शक्ति उसको वरदान में नहीं मिली। इस कथा में वह मरता भी नहीं है। दूसरी दो लोक कथाओं में भी एक स्त्री को जानवरों की भाषा आती है पर उसका यह गुण किसी को पता नहीं है इसलिये वह उससे अपना फायदा तो कर लेती है पर गलतफहमी की वजह से मारी जाती है।

ये कथाएँ बहुत शिक्षाप्रद हैं। आशा है कि ये लोक कथाएँ तुम लोगों को सीख देने के अलावा तुम लोगों का भरपूर मनोरंजन भी करेंगी।

1 राजा अश्वपति¹

हमें खुशी है कि जानवरों की भाषा के विषय पर इकट्ठा की गयी लोक कथाओं का यह संग्रह हम एक सच्ची कहानी से कर रहे हैं। अब जब यह सच्ची कहानी है तो हमें इसे “कहानी” न कह कर एक ऐतिहासिक घटना कहनी चाहिये।

बच्चों तुम लोगों ने रामायण तो पढ़ी होगी। रामायण अक्सर हर हिन्दू घर में मिल जायेगी। इसमें श्रीराम के बारे में लिखा हुआ है। श्रीराम अयोध्या के राजा दशरथ के सबसे बड़े बेटे थे। राजा दशरथ के तीन मुख्य रानियाँ थीं - कौशल्या कैकेयी और सुमित्रा।

पर इन तीनों रानियों से उनके कोई बेटा नहीं था। पहले उन्होंने कौशल्या से शादी की और जब उससे कोई बेटा नहीं हुआ तो फिर इसी आशा में कैकेयी और सुमित्रा से शादी की।

पर फिर भी जब उनके कोई बेटा नहीं हुआ तो उनको इसके लिये एक यज्ञ करना पड़ा जिससे उनके इन तीनों पत्नियों से चार बेटे हुए - कौशल्या के राम कैकेयी के भरत और सुमित्रा के लक्ष्मण और शत्रुघ्न।

कैकेयी कैकय देश के राजा अश्वपति की अकेली बेटी थी। राजा अश्वपति को यह वरदान था कि वह जानवरों की भाषा समझ

¹ The King Ashwapati. Taken from Ramayana.

सकते थे। पर साथ ही एक शर्त थी कि वह अगर यह बात किसी को बता देते तो वह मर जाते।

एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ बागीचे में टहल रहे थे कि वह दो हंसों की बात सुन कर जोर से हँस पड़े। पत्नी ने उनसे कई बार पूछा कि वह क्यों हँसे थे पर वह टालते रहे।

जब उसने उनसे बताने की बहुत जिद की तो उन्होंने उससे कहा कि अगर उन्होंने उसको बता दिया कि वह क्यों हँस रहे थे तो वह मर जायेंगे।

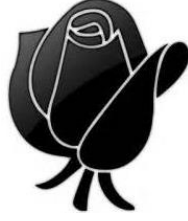
तो उसने कहा कि “आपको अपने प्राणों की चिन्ता है मेरे आत्मसम्मान की कोई चिन्ता नहीं। आप मुझे बतायें कि आप क्यों हँसे थे।”

जैसे ही उसने यह कहा तो राजा समझ गये कि यह स्त्री ठीक नहीं है। उन्होंने तुरन्त ही उससे अपना रिश्ता तोड़ कर उसको अपने राज्य से बाहर निकाल दिया।

उसके बाद कैकेयी को दासी मन्थरा ने पाला पोसा। बाद में जब कैकेयी को इस बात का पता चला चला तो उसने अपने मन में निश्चय कर लिया कि वह अपने जीवन में कभी कोई ऐसा काम नहीं करेगी।

पर होनी देखो कि उसने भी वही किया जिसके लिये उसने सोचा था कि वह वैसा काम नहीं करेगी। राजा दशरथ के बार बार कहने पर भी कि “मैं राम के बिना मर जाऊँगा। मेरे राम को वन

मत भेजो ।” कैकेयी नहीं मानी । उसने श्रीराम को वन भेजा और इस तरह उसकी मौत की जिम्मेदार बनी ।



2 कृतज्ञ साँप²

जानवरों की भाषा समझने वाली यह लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के सूडान देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

एक बार एक आदमी कहीं जा रहा था कि रास्ते में उसको दो साँप लड़ते हुए मिले। वह उनके पास गया तो उसने देखा कि उनमें से एक साँप की लड़ते लड़ते बहुत ही बुरी हालत हो गयी थी।

उस आदमी को उस घायल साँप पर बहुत दया आयी सो उसने एक डंडी उठायी और उन दोनों लड़ते हुए साँपों को अलग अलग कर दिया।

उसने बड़े वाले साँप को धमकी दी तो वह वहाँ से बड़ी तेज़ी से भाग गया। फिर उसने दूसरे साँप को डंडी से छू कर देखा कि वह अभी भी ज़िन्दा था कि नहीं। भगवान का लाख लाख धन्यवाद कि वह अभी भी ज़िन्दा था।

साँप बोला — “बहुत बहुत धन्यवाद आदमी। अगर तुम यहाँ न आते तो अब तक तो मैं मर ही गया होता। तुम्हारे इस उपकार के बदले मैं तुमको एक ताकत देता हूँ कि तुम सारे जानवरों की भाषा समझ सको कि वे क्या कह रहे हैं।”

आदमी ने पूछा — “क्या तुम सच कह रहे हो?”

² The Grateful Serpent – a folktale from Nuer Tribe, Sudan, Eastern Africa.

Translated from the book “African Folktales” by A Ceni. English Edition in 1998. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

“हाँ बिल्कुल। तुम वह सब जान जाओगे जो मच्छर, चूहा और गाय आदि जानवर बात करेंगे। पर ध्यान रखना कि यह बात तुम किसी से कहना नहीं नहीं तो तुम मर जाओगे।”

यह भेंट पा कर वह आदमी बहुत खुश हो गया। दोनों ने एक दूसरे को प्यार से विदा कहा और अपने अपने रास्ते चले गये।

उस शाम सोने से पहले उस आदमी ने अपने सारे दरवाजे और खिड़कियाँ बन्द कर लिये और सोने के लिये बिस्तर पर लेट गया।

कुछ देर बाद एक मच्छर दरवाजे से अन्दर आने की कोशिश करने लगा। जब वहाँ से उसको अन्दर आने का रास्ता नहीं मिला तो वह खिड़की पर गया। पर वहाँ भी उसको अन्दर आने की कोई जगह नहीं मिली तो गुस्से में आ कर वह बहुत जोर से भिनभिनाने लगा।



“सत्यानाश हो इस जगह का। यह घर तो ताबूत³ की तरह से कस कर बन्द है।

अब मैं इसके अन्दर कैसे घुसूँ?”

घर के अन्दर आदमी ने जब मच्छर की यह बात सुनी तो उसको हँसी आ गयी। उसकी पत्नी ने उसकी तरफ देखते हुए पूछा — “अरे तुम क्यों हँस रहे हो?”

अपनी दूसरी हँसी को रोकते हुए आदमी बोला — “कुछ नहीं कुछ नहीं।” और फिर वे सो गये।

³ Translated for the word “Coffin” – see its picture above.

कुछ देर बाद एक चूहे ने उसके घर में घुसने की कोशिश की। उसने भी घर का दरवाजा और खिड़कियाँ देखीं पर उसको भी वे घुसने के लिये नामुमकिन लगीं।

चूहे ने थोड़ी देर तो सोचा फिर वह सीधा छत की तरफ भाग गया। वहाँ उसको तख्तों के बीच में घर में घुसने की एक छोटी सी जगह मिल गयी सो वह वहाँ से घर में घुस गया।

उसने खाने वाली चीज़⁴ के लिये उस आदमी के घर के सारे कमरे छान मारे। उसके लिये उसने इधर चीज़ें गिरायीं उधर चीज़ें गिरायीं पर उसको खाने वाली चीज़ कहीं नहीं मिली।

यह देख कर वह गुस्से में चिल्लाया — “हूँह। सत्यानाश हो इस घर का। यह किस तरह का घर है कि मुझे यहाँ चीज़ का एक ज़रा सा टुकड़ा भी नहीं मिल रहा।”

बिस्तर में लेटे लेटे उस आदमी ने भी यह सुना तो वह फिर बहुत ज़ोर से हँस पड़ा। उसको हँसता सुन कर उसकी पत्नी ने फिर पूछा — “अब क्या हुआ? अब क्यों हँस रहे हो?”

आदमी ने अपने आपको बड़ी मुश्किल से रोकते हुए कहा — “ओह कुछ नहीं, कुछ नहीं। सचमुच में कुछ नहीं।”

⁴ Cheese is the processed Indian Paneer. It is very common ingredient of most European and American dishes.

रात गुजर गयी और सुबह हो गयी। जैसे वह रोज करता था उसी तरह उस सुबह को भी वह गायों के बाड़े में गया और उनको हरे हरे घास के मैदान में चराने के लिये ले गया।

रास्ते में सब गायें आपस में बात करती जा रही थीं और वह आदमी बड़े आराम से उनकी बातें सुनता हुआ चला जा रहा था। उसके बाद उनके दूध दुहने का समय आया तो उसकी पत्नी बैठने के लिये एक स्टूल और दूध दुहने के लिये एक बालटी ले आयी।

उसको देख कर सबसे बड़ी गाय रँभायी और बोली — “ओ गायों देखो ज़रा, यह स्त्री हमारा दूध चुराने आ गयी।”

यह सुन कर वह आदमी फिर जोर से हँस पड़ा।

इस बार उसकी पत्नी को गुस्सा आ गया — “तुम फिर हँस रहे हो? क्या बात है कल से तुम हँसे ही जा रहे हो।”

“नहीं नहीं कोई खास बात नहीं, बस ज़रा यूँ ही।” पर उसके पास ऐसा कोई बहाना नहीं था जिस पर कोई दूसरा उस पर विश्वास कर लेता।

उसी समय गाय ने फिर से रँभाना शुरू कर दिया — “नहीं नहीं, आज नहीं। आज मैं अपना दूध अपने बछड़े के लिये रखना चाहती हूँ।” और वह उसकी पत्नी से दूर हट गयी।

आदमी ने उसकी बात फिर से समझ ली तो वह फिर हँस पड़ा।

इस बार पत्नी से रहा नहीं गया तो वह बोली — “तुम क्या सोचते हो कि तुम किसका मजाक उड़ा रहे हो?”

उसने फिर से उसको यह कर शान्त किया — “ओह मेरी प्यारी पत्नी, किसी का नहीं, किसी का नहीं। तुम तो यूँ ही बस ज़रा ज़रा सी बात पर नाराज हो जाती हो...।”

वह बोली — “मैं देख रही हूँ कि कल से तुम एक बेवकूफ की तरह से बरताव कर रहे हो और मुझे बताते नहीं कि क्या बात है।” और अपना स्टूल और बालटी ले कर घर के अन्दर चली गयी।

शाम को वह स्त्री फिर से गायों को दुहने के लिये आयी तो वह बहुत थोड़ा दूध ही दुह पायी सो वह अपने पति से बोली — “देखना ये गायें मुझे दूध ही नहीं दुहने दे रहीं।”

गाय बोली — “क्या तुम यह दूध मेरे बछड़े को पिलाने के लिये ले जा रही हो?”

यह सुन कर तो वह आदमी हँसते हँसते दोहरा ही हो गया।

पत्नी बोली — “यह क्या कोई हँसने की बात है जो तुम इतनी ज़ोर से हँस रहे हो? तुम मेरा मजाक बना रहे हो। तुम मेरी बिल्कुल भी परवाह नहीं करते।”

एक बार फिर गाय रँभायी — “हो सकता है कि उसके पास इसकी कोई वजह हो।”

पति फिर हँस पड़ा। इस बार तो उससे अपनी हँसी रोकी ही नहीं गयी।

पत्नी बोली — “अगर तुम्हारा यही ढंग रहेगा तो मैं गाँव के अक्लमन्द लोगों के पास जाती हूँ और उनसे कहती हूँ कि वे रात को हमारे घर आयें। तब मैं उनको अपनी समस्या बताऊँगी और उनसे तलाक की प्रार्थना करूँगी।

अब पति के पास कहने को कुछ नहीं था। वह फिर से बहुत ज़ोर से हँस पड़ा कि शायद हँस कर वह अपनी पत्नी को शान्त कर सके पर ऐसा नहीं हुआ। वह शान्त नहीं हुई।

शाम को गाँव के बड़े लोग आये और आग के चारों तरफ बैठ कर उस स्त्री से बोले — “तुमने हमें यहाँ क्यों बुलाया है। बताओ तुम्हें क्या परेशानी है।”

“मेरा पति मेरे ऊपर बिना किसी वजह के हँसता रहता है। हम सोने जाते हैं तभी भी यह हँसता है। जब यह जानवर चराने ले जाता है तभी भी हँसता है जब मैं दूध दुहती हूँ यह तभी भी हँसता है। मुझे अच्छा नहीं लगता कि इस तरह से कोई मेरा मजाक बनाये।”

बड़े लोगों ने एक दूसरे की तरफ देखा और हाँ में सिर हिलाया कि हाँ यह स्त्री कह तो ठीक रही है। उन्होंने उसके पति से पूछा — “क्यों भाई क्या बात है? हमें बताओ कि तुम अपनी पत्नी पर हर समय क्यों हँसते रहते हो?”

पति बोला — “नहीं मैं उस पर नहीं हँसता।”

“तो फिर तुम किस पर हँसते हो?”

“मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है।”

“तुम हमारा बेवकूफ नहीं बना सकते। यह क्या बात हुई कि मुझे यह बताने की इजाज़त नहीं है। और इसमें न बताने की इजाज़त की क्या बात है। बताओ तुम किस पर हँसते हो।”

“अगर मैं थोड़े में कहूँ तो मैं इन जानवरों पर हँसता हूँ अपनी पत्नी पर नहीं।”

इस पर उन बड़े आदमियों ने फिर एक दूसरे की तरफ देखा और ना में सिर हिलाया। मामला बिल्कुल साफ था कि यह आदमी पागल हो गया था। इसके बाद वे सब वहाँ से एक दूसरे कमरे में चले गये और एक नतीजे पर पहुँचे।

उसके बाद वे सब वापस लौटे और बोले — “ओ स्त्री, आज से तुम आजाद हो। तुमको आज से इस आदमी से तलाक दिया जाता है क्योंकि तुम्हारा पति पागल हो गया है।”

पत्नी ने यह सुन कर रोना शुरू कर दिया और पति ने उसे फिर से टालमटोल कर के समझाना शुरू किया कि यह सब क्या था। पर बड़े लोगों का फैसला किसी तरह से टाला नहीं जा सका। और अब उनका दिमाग भी बदला नहीं जा सकता था।

इस तरह से उनकी यह शादी खत्म हो गयी। गाँव के लोगों ने उस दुखी जोड़े से सहानुभूति प्रगट की और पति अपनी पत्नी से बचने के लिये वह गाँव छोड़ कर एक अकेली जगह चला गया।

वह वहाँ कुछ दिन रहता रहा कि उसको वही साँप फिर से मिल गया जिसको उसने बचाया था।

साँप बोला — “हलो आदमी, तुमसे फिर से मिल कर बहुत खुशी हुई। पर तुम यहाँ इस जगह क्या कर रहे हो?”

आदमी बोला — “काश तुम जानते कि मेरे साथ क्या हुआ है। मुझे तुम्हारी दी हुई भेंट अपने गाँव वालों को बतानी पड़ी और उन सबने सोचा कि मैं पागल हो गया हूँ।

मेरी पत्नी मुझे छोड़ कर चली गयी, मुझे अपना गाँव भी छोड़ना पड़ा। इस बात को कोई नहीं मान सकता कि तुम मेरे लिये कितनी खुशकिस्मती ले कर आये।”

साँप बोला — “तुम आदमी लोग भी कितने बेवकूफ होते हो। तुम लोग यह तो देखते नहीं कि क्या सच है। तुम लोगों को तो बस जो कुछ ऊपर से दिखायी देता है तुम लोग उसी को सच समझ लेते हो।

सुनो। जो लोग तुमको पागल कह रहे हैं वे खुद ही सबसे बड़े पागल हैं। उनके बारे में सोचना छोड़ो। तुम एक ऐसी पत्नी से बच गये जो तुमको समझ ही नहीं सकी। अच्छा हुआ कि तुम अपने बेवकूफ साथियों से भी बच गये।

तुमसे ज़्यादा किस्मत वाला और कौन होगा। खुश रहो और देवता तुम्हारी रक्षा करें।”

आदमी ने सोचा “यह तो ठीक है। यह साँप ठीक कह रहा है। अब मैं एक आजाद और खुशकिस्मत आदमी हूँ।”

और खुशी से सीटी बजाते हुए वह आजाद चिड़ियों की बातचीत सुनने के लिये एक मक्का के खेत की तरफ चल दिया।



3 जानवरों की भाषा-1⁵

जानवरों की भाषा समझने वाली यह पहली लोक कथा अफ्रीका महाद्वीप के घाना देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

बहुत समय पहले की बात है कि एक बार एक आदमी अपनी पत्नी के साथ अकेला रहता था। वे दोनों इतने गरीब थे कि न तो उनके पास खाने के लिये काफी था न पहनने के लिये।

वे केवल गरीब ही नहीं थे बल्कि वे बेचारे किस्मत के भी मारे थे। वे इतने ज़्यादा बदकिस्मत थे कि वे कितनी भी कोशिश करें उनका कोई भी काम ठीक नहीं होता था।

अगर वे कभी कोई बकरी या कोई जानवर या सूअर अपने खाने या पैसे कमाने के लिये खरीदते तो वह मर जाता। और अगर वे खेती करते तो या तो उनकी खेती नष्ट हो जाती या फिर जानवर आ कर उसको खोद कर खा जाते।

एक दिन जब वे अपने टूटे फूटे घर में बैठे हुए थे जिसमें बारिश के मौसम में पानी टपकता रहता था और जब सूरज निकलता था तो धूप आती रहती थी तो पति अपनी पत्नी से बोला —
“शायद मेरे पास मेरी गरीबी का जवाब है।”

⁵ Animal Language – a folktale from Ghana, West Africa, Africa. Translated from the Book : “The Orphan Girl and the Other Stories”. By Offodile Buchi. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

उसकी पत्नी बोली — “कोफी⁶, मुझे चिढ़ाओ मत। कोई भी हमें हमारी इस गरीबी से बाहर नहीं निकाल सकता। हम लोगों ने सब कुछ तो कर के देख लिया। हमें किसी से भी कुछ नहीं मिलता। अब तो मैंने इस बारे में सोचना भी छोड़ दिया है।”

पति बोला — “हमें इस तरह से हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठना चाहिये अरबा⁷। तुम्हीं ने तो मुझसे कहा था कि उम्मीद नहीं छोड़नी चाहिये और अब तुम ही ऐसी बात कर रही हो?”

पत्नी बोली — “ठीक है ठीक है। तो अब बताओ तुम्हारे पास इस गरीबी का क्या जवाब है?”

पति बोला — “मैं सोचता हूँ, हालाँकि मुझे पता नहीं कि यह मेरा सोचना कुछ काम करेगा या नहीं पर फिर भी।



मैं सोच रहा हूँ कि मैं सरदार कूमा⁸ के पास जाऊँ और उससे उन पाम⁹ के पेड़ों में से उनका रस निकालने का काम माँग लूँ जिनसे उसके यहाँ शराब निकलती है। और तुम मेरी पत्नी उस शराब को बेचने के लिये बाजार ले जाओ।”

अरबा बोली — “यह तो बहुत ही अच्छा विचार है पर क्या वह तुमको यह काम देगा?”

⁶ Kofi – a very common name of a Ghanaian man

⁷ Araba – a name of a Ghanaian woman

⁸ Chief Kumah

⁹ Palm trees – its sap is used to make palm wine which is known as Taadee in India.

पति बोला — “पता नहीं वह देगा भी या नहीं पर इसको भी मालूम करने का एक ही तरीका है कि वहाँ जाया जाये और कोशिश की जाये। और इसमें मेरा कुछ जाता भी नहीं है।

इसके अलावा उसके खेत में तो इतने सारे पाम के पेड़ हैं कि मुझे नहीं लगता कि वह मुझे थोड़े से पाम के पेड़ का रस भी नहीं निकालने देगा।

लोगों का कहना है कि वह बड़ा अमीर और दयालु है और इसी लिये लोग उसको “पैसों का सरदार”¹⁰ कहते हैं।”

इस बीच अरबा अपनी मुर्गियों के उन अंडों को गिन रही थी जिनमें से बच्चे निकलने वाले थे। उसने अपनी आँखें बन्द की और सोचने लगी कि वह उस शराब से मिले पैसे को कैसे खर्च करेगी।

वह नये कपड़े खरीदेगी और अपने घर की टपकती हुई छत ठीक करायेगी। उसने सोचा कि कल मिसेज नैटी¹¹ जो पोशाक पहने हुई थी वह नीले रंग में बहुत अच्छी लगेगी। हाँ, नीला रंग। यही रंग तो उसको चाहिये।

अगले दिन बहुत सुबह ही कोफ़ी अपने उस पैसों वाले सरदार के पास उसके कुछ पाम के पेड़ माँगने चल दिया।

जब वह वहाँ पहुँचा तो सरदार बोला — “मेरे बेटे, यह तो बताओ कि मेरे लिये उसमें क्या है? मैं तो एक व्यापारी हूँ और मैंने

¹⁰ Money Chief

¹¹ Mrs Natie

इतना सारा पैसा केवल अपना पैसा दे कर ही नहीं कमाया है। तो इसमें तुम मुझे यह बताओ कि मेरा हिस्सा कितना है।

जैसा कि हमारे लोग कहते हैं कि कोई मुर्गी अपने पड़ोसी के खाने पर नहीं जीती सो हमको आपस में एक व्यापार करना चाहिये। मैं तुम्हारे हाथ धोता हूँ और तुम मेरे हाथ धोओ।”

कोफी बोला — “मैं जानता हूँ कि आप एक न्याय प्रिय आदमी हैं इसलिये जो भी आप कहेंगे मुझे मंजूर है।”

सरदार कूमा बोला — “तो ऐसा करो कि तुम मेरे दस पाम के पेड़ ले लो और उनका रस निकाल लो। फिर जितना भी पैसा तुम उसकी शराब बेच कर बनाओगे उसको हम लोग बराबर बराबर बाँट लेंगे।



मैं बल्कि तुमको रस इकट्ठा करने के लिये कैलेबाश¹² भी दूँगा जिनमें तुम शराब भर सकते हो। सो अब इन कैलेबाश में से जो कैलेबाश भी तुम्हें चाहिये तुम ले लो।”

इतना कह कर उसने अपने पास रखे सब कैलेबाश उसको दिखा दिये।

¹² Dry outer cover of a pumpkin-like fruit which can be used to keep both dry and wet things – mostly found in Africa. See its picture above.

कोफी तो यह सुन कर बहुत ही खुश हो गया। उससे जितने भी कैलेबाश उठाये जा सकते थे उसने उठा लिये और अपने घर आ गया।

घर आ कर उसने अपनी पत्नी को सरदार से हुई इस बात के बारे में बताया तो वह भी बहुत खुश हुई। उसको लगा कि वह जो कुछ भी सोच रही थी वह बस अब सब सच होने वाला है।

अगले दिन कोफी गाँव के हर आदमी से पहले उठ गया। वह अपने नये काम पर जाने के लिये बहुत बेचैन था। वहाँ जा कर उसने पाम के पेड़ गिराये और उनमें से उनका रस निकाला।

वह सारा दिन बहुत मेहनत से काम करता रहा। यहाँ तक कि शाम को भी देर तक वह अपने काम में लगा रहा जब तक कि उसके पेट में खाने के लिये चूहे नहीं कूदने लगे।

उसने सोचा, “एक बार शराब निकल आये और बिक जाये फिर मैं जितना खाना खाना चाहूँगा उतना खाऊँगा पर अभी तो मुझे काम करना चाहिये।”

सो उस रात कोफी और उसकी पत्नी बहुत देर तक बात करते रहे। उन्होंने इतनी बातें की जितनी शायद उन्होंने पहले कभी नहीं की थीं। वे अचानक बहुत खुश थे और सुबह होने की राह देख रहे थे।

उन्होंने खेल खेले और अगले दिन की तैयारी की कि वह कितने कैलेबाश भर कर शराब निकालेंगे।

अगले दिन सुबह बहुत जल्दी ही कोफ़ी शराब इकट्ठी करने के लिये जंगल चल दिया।

जैसे ही वह अपने पहले पेड़ के पास पहुँचा वह चिल्लाया — “ओह नहीं।” उसने देखा कि उसका तो वहाँ कैलेबाश ही टूटा पड़ा था।

उसने पूछा — “किसने किया यह?”

पर उसको यकीन था कि दूसरे कैलेबाशों के साथ ऐसा नहीं हुआ होगा। ऐसा सोच कर उसने इस पहले पेड़ से निकाली शराब का ज़्यादा दुख नहीं मनाया।

फिर इस उम्मीद में कि दूसरे कैलेबाश तो ठीक ही होंगे वह दूसरे पेड़ की तरफ दौड़ा पर उसकी बदकिस्मती से वह कैलेबाश भी टूटा हुआ था।

इस तरह एक एक कर के वह हर पाम के पेड़ के पास गया पर उसको हर कैलेबाश टूटा मिला और उसकी सब शराब जा चुकी थी। अब वहाँ जो कुछ भी बचा था वह थे टूटे हुए कैलेबाश के टुकड़े और उस बिखरी हुई शराब के ऊपर मँडराते हुए मक्खियों और मधुमक्खियों के झुंड।

यह सब देख कर कोफ़ी बहुत परेशान सा अपनी पत्नी के पास अपने घर दौड़ा गया। उसकी पत्नी ने उसको इतना परेशान देख कर पूछा — “क्या हुआ कोफ़ी?”

कोफी बोला — “अरबा, हमारे ऊपर एक बार बिजली फिर गिर पड़ी है। मैंने तुमसे पहले ही कहा था कि मैं जो कुछ भी करने की कोशिश करता हूँ वह सब बेकार हो जाता है। जब मैं वहाँ शराब इकट्ठी करने गया तो वहाँ सारे कैलेबाश टूटे पड़े थे और कोई शराब नहीं थी।”

अरबा ने आश्चर्य और दुख से कहा — “ऐसी बात न करो कोफी। तुम तो बहुत मेहनती हो और हमारे भगवान को हमारे ऊपर कभी तो दया करनी पड़ेगी। तुमको अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।

मुझे यकीन है कि वहाँ उन पेड़ों में शराब थी तो जरूर पर मुझे यह लगता है कि कोई उसको चुरा कर ले गया है और अपनी चाल को छिपाने के लिये वे बरतन तोड़ गया है।”

कोफी धीरे से बोला — “तुम ठीक कहती हो शायद। मुझे ऐसे ही हाथ पर हाथ रख कर नहीं बैठ जाना चाहिये और अपनी कोशिश करते रहना चाहिये।”

अरबा मुस्कुरा कर बोली — “छोड़ देने की बात छोड़ो।”

कोफी ने जब अरबा की मुस्कुराहट देखी तो अरबा फिर बोली — “यही तो वह आदमी है जिससे मैंने शादी की थी।”

इस तरह अपनी पत्नी के उत्साह भरे शब्द सुन कर कोफी फिर से सरदार कूमा के पास और कैलेबाश उधार माँगने गया। उसने पाम के पेड़ों में से रस निकालने के लिये फिर से उनको काटा और उनके

नीचे रस को इकट्ठा करने के लिये उनमें कैलेबाश बाँधा और घर आ गया।

पर अगली सुबह जब वह फिर से रस इकट्ठा करने के लिये उन पेड़ों के पास गया तो वे सारे कैलेबाश फिर से टूटे पड़े थे और फिर से मक्खियाँ और मधुमक्खियाँ उनके रस के ऊपर लड़ रहीं थीं।

इस बार कोफ़ी को विश्वास हो गया कि यह काम किसी चोर का ही था उसकी बदकिस्मती का नहीं।

सो कोफ़ी सरदार कूमा के पास फिर से कुछ और कैलेबाश उधार माँगने के लिये गया। इस बार उसने शराब इकट्ठा करने के लिये उनको लगा कर यह देखने के लिये वहीं बैठने का फैसला किया कि वह यह देखे कि उसके साथ ऐसा कौन करता है।

कैलेबाश लगा कर वह एक ऐसी जगह छिप कर बैठ गया जहाँ से वह अपने पेड़ों को ठीक से देख सकता था।

वह बड़े धीरज से इन्तजार करता रहा। पर इन्तजार करते करते वह थक गया सो वह सोने ही वाला था कि मच्छरों के झुंड की भिनभिनाहट ने उसको जगा दिया।

अब बजाय इसके कि वह उनको अपनी ठोड़ी और कान पर हाथ मार कर मारता उसने उनको अपना हाथ हिला कर ही हटा दिया। उसको लगा कि अगर उसने मच्छरों को मारा तो शायद चोर को पता चल जाये कि वह वहाँ छिपा हुआ है।

फिर कई घंटों तक कोफ़ी फिर से इन्तजार करता रहा पर वे मच्छर उसको बहुत तंग कर रहे थे। तभी उसने अपने कुछ ही गज पीछे एक डंडी के टूटने की आवाज सुनी।

एक पल के लिये उसको यह सोच कर आश्चर्य हुआ कि वह वहाँ उस गहरे जंगल में था ही क्यों। क्या वे बरतन उसकी ज़िन्दगी से ज़्यादा कीमती थे? अगर वह चोर कोई जंगली जानवर हो जिससे वह नहीं लड़ सकता हो तो? या फिर... ?

तभी उसको एक बरतन के टूटने की आवाज सुनायी दी। उसने चाँद की बहुत ही धुँधली रोशनी में देखने की कोशिश की तो उसको लगा कि एक हिरन उसके एक कैलेबाश के पास खड़ा था।

वह उस हिरन की तरफ देख ही रहा था कि उस हिरन ने एक पेड़ के नीचे से कोफ़ी का एक बरतन खींच लिया और उस बरतन का सारा रस अपने बरतन में पलट लिया और कोफ़ी का बरतन तोड़ कर जमीन पर फेंक दिया।

कोफ़ी उस हिरन के पीछे उसके सींगों को निशाना बनाते हुए भागा। हालाँकि हिरन तुरन्त ही कूद कर वहाँ से भाग लिया पर कोफ़ी उसका पीछा करता ही रहा। उसने सोच रखा था कि आज वह इस हिरन को अपने हाथ से जाने नहीं देगा।

यह दौड़ सुबह तब तक चलती रही जब तक सूरज निकला और इस तरह वे एक ऊँची पहाड़ी पर जा पहुँचे।



कि तभी पहाड़ी से नीचे उतरते समय कोफ़ी को जानवरों का एक झुंड अपनी मीटिंग करता मिल गया। उस मीटिंग के बीच में एक शेर बैठा था और कोफ़ी को लगा कि वह उनका राजा था।

भागते भागते कोफ़ी रुक गया। वह बोला — “अब मुझे पता चल गया कि यह जंगली जानवरों का काम है।”

वह हिरन भागते भागते जानवरों के उस झुंड में घुस गया और जा कर शेर के सामने अपने दोनों आगे वाले पैर फैला कर और अपना सिर उनके बीच में रख कर बैठ गया जैसे वह उसको सिर झुका कर प्रणाम कर रहा हो।

शेर बोला — “क्या बात है हिरन? क्या यह तुम्हारे लिये काफी नहीं था कि हमने तुम्हारे ऊपर खुले जंगल में ध्यान देना बन्द कर दिया था? और अब तुमने हमारे घरों में भी हमारा पीछा करना शुरू कर दिया?”

इससे पहले कि शेर अपनी बात खत्म करता हिरन ने हॉफते हुए अपनी कहानी सुना दी। बन्दर जो शेर का सहायक लगता था उसने कोफ़ी से शेर को यह बताने के लिये कहा कि वह शेर को यह बताये कि वह उनके दोस्त का पीछा क्यों कर रहा था।

कोफ़ी ने उनको अपनी कहानी बताने में ज़रा सा भी समय बरबाद नहीं किया।

उसने उनको बताया कि किस तरह उसकी किस्मत उसका साथ नहीं दे रही थी और किस तरह फिर उसने यह सोचा कि ये पाम के पेड़ उसको अमीर बना देंगे। और फिर किस तरह उसको यह पता लगा कि वह हिरन उसकी शराब चुरा रहा था।

फिर उसने शेर से उसकी मीटिंग में दखल देने के लिये माफी माँगी और अपने घर अपनी पत्नी के पास वापस जाने की आज्ञा माँगी।

शेर बोला — “मैं बहुत ही न्याय प्रिय जज हूँ। और तुम्हारे कहानी कहने से मुझे लग रहा है कि यह हिरन की गलती है कि उसने तुम्हारा पाम का रस चुराया। उसको हमारे दरबार के लिये शराब खरीदने के लिये काफी पैसे दिये गये थे पर उसने उसे तुमसे चुराना ज़्यादा अच्छा समझा।

उसने उस पैसे का क्या किया यह तो मुझे नहीं पता। इसके लिये तो मैं उससे बाद में निपटूँगा पर तुमको मैं एक बहुत ही खास भेंट देना चाहता हूँ। यह भेंट तुम्हारी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी।

और वह भेंट यह है आज के बाद तुम्हारे अन्दर सब जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ जायेगी।”

कोफी वहाँ इस इन्तजार में खड़ा रहा कि उसको वह भेंट कब मिलेगी जो उसकी मुश्किलों को दस गुना आसान बना देगी। क्योंकि

उसको ऐसा लग ही नहीं रहा था कि यह भेंट कोई ऐसी भेंट थी जो उसकी मुश्किल आसान कर सकती थी।

शेर बोला — “अब तुम जा सकते हो। अब हम अपने दोस्त के बारे में बात करेंगे कि उसका हमें क्या करना है।”

कोफी ने जानवरों को अपना सिर झुका कर वहाँ से जाते हुए सोचा यह तो बड़ी अजीब सी बात है। यह क्या भेंट हुई पर कहीं शेर नाराज न हो जाये इसलिये उसने शेर को धन्यवाद दिया और वहाँ से जाने के लिये मुड़ा कि शेर बोला — “तुम्हारी भेंट के बारे एक और बात।”

“क्या?” कोफी ने कुछ परेशान सा होते हुए पूछा।

“तुम यह बात किसी को नहीं बताओगे और अगर बताओगे तो तुम मर जाओगे।”

कोफी ने शेर को एक बार फिर धन्यवाद दिया और वहाँ से लौट पड़ा। हालाँकि जब वह लौट रहा था तो वह बहुत ही नाउम्मीद सा लौट रहा था।

वह सोच रहा था — “यह क्या भेंट थी? जानवरों की भाषा समझ कर मैं अपने नुकसान को कैसे पूरा कर पाऊँगा? यह तो बहुत बड़ा मजाक था मेरे साथ।

और इसके बारे में बात न करना तो और भी बड़ा मजाक है। इससे तो मैं मर जाना ज़्यादा पसन्द करूँगा बजाय इसके कि मैं इसके बारे में चुप रहूँ।”

इतनी लम्बी दौड़ से थका हुआ और नाउम्मीद कोफ़ी अपने घर चला गया। उसको डर था कि उसकी पत्नी तो पागल ही हो जायेगी जब उसको लगेगा कि वह इतनी देर तक घर से बाहर रहा।

पर उसको बड़ा आश्चर्य हुआ जब उसने अपनी पत्नी को समझदार पाया कि उसने उससे उसके बाहर रहने को बारे में ज़्यादा कुछ खास नहीं पूछा। वह तो बस उसके वापस आने पर बहुत खुश थी।

वह बोली — “तुम इतनी देर तक थे कहाँ? तुम्हारा चेहरा तो बहुत ही खराब लग रहा है। तुम ठीक तो हो न? क्या तुम चोर को पकड़ सके?”

वह बोला — “वह चोर हिरन था जो हमारी बदकिस्मती बन कर आया था। मैं उसके पीछे भागा भी पर उसको पकड़ नहीं सका।”

उस रात कोफ़ी फिर से अपने पाम के पेड़ों को देखने के लिये गया कि हिरन कहीं फिर से तो उसकी पाम की शराब लेने के लिये न आया हो। पर अबकी बार हिरन वापस नहीं आया था। अगले दिन सुबह उसके सारे कैलेबाश पाम की शराब से भरे हुए थे।

यह देख कर कोफ़ी बहुत खुश हुआ और सारे कैलेबाश घर ले आया और उनको अपनी पत्नी के बाजार ले जाने के लिये तैयार कर दिये।

अब वह रोज सुबह पाम की शराब घर ले आता और उसकी पत्नी उनको अच्छे दाम पर बाजार में बेच देती।

उस रात के बाद यानी जबसे कोफी ने उस हिरन का पीछा किया था उसकी किस्मत अब कुछ कुछ जाग गयी थी। अब उसके पास कुछ पैसे जमा हो गये थे जिनसे वह अपनी जरूरत की कुछ चीजें खरीद सकता था जैसे जानवर, बकरियाँ, घोड़े।

उसकी पत्नी भी अब पहले से बहुत खुश थी क्योंकि उसने भी कुछ नये कपड़े बनवा लिये थे ताकि वह अब लोगों में ठीक से दिखायी दे सके।

इस बीच कोफी भी अब जानवरों की भाषा समझने लगा था कि वे क्या कह रहे थे। अक्सर वह उनकी बातें समझ कर मुस्कुरा देता या फिर जोर से हँस पड़ता लेकिन फिर उसको अजीब लगता क्योंकि कोई नहीं जान पाता कि वह क्यों हँस रहा है।

एक गरम दिन को तीसरे पहर में अपने खेत को बोआई के लिये जोतने के बाद कोफी नदी पर नहाने गया।

वहाँ उसने सुना कि एक मुर्गी अपने दस बच्चों से कह रही थी — “यह आदमी इतना बेवकूफ कैसे हो सकता है कि केवल पानी अपने शरीर के ऊपर डालने के लिये ही अपने सारे कपड़े उतार दे।

कोई आश्चर्य नहीं कि उसको तो यह पता ही नहीं होगा कि सोने से भरा एक बक्सा तो इसके अपने मकान के पीछे की तरफ ही गड़ा है।

मैंने पिछली बार उसको वहाँ तब देखा था जब मैं वहाँ कीड़ों के लिये उस जगह को खुरच रही थी। पर फिर मैंने उसको मिट्टी से ढक दिया क्योंकि एक कुत्ते ने मुझे वहाँ से भगा दिया था।”

“हा हा हा हा”। कोफ़ी यह सुन कर हँसा तो वह मुर्गी उसकी इस हँसी से चौंक गयी सो वह जल्दी ही चुप हो गया। फिर यह यकीन करने के लिये कि वह कहीं सपना तो नहीं देख रहा उसने अपनी हथेली अपने चेहरे पर कई बार फेरी। उसको लगा कि नहीं वह कोई सपना नहीं देख रहा था यह सब वाकई उसने सुना था।

उसने अपनी छोटी उँगली अपने कान में डाल कर कान भी साफ़ किये। उसने देखा कि उसके कान भी ठीक ही थे।

फिर उसने मुर्गी को अपने एक बच्चे को डाँटते हुए सुना —
“उस कीड़े को अपने भाई के लिये छोड़ दे मैंने तुझे पहला कीड़ा दिया था न? तुझे बाँट कर खाना सीखना चाहिये।”

यह विश्वास करने के बाद कि उसने सब कुछ ठीक ही सुना था उसने अपना नहाना जारी रखा जैसे कुछ हुआ ही नहीं। नहा धो कर वह घर वापस आ गया।

रात हो जाने के बाद जब सब सो गये तो उसने अपना हल उठाया और अपने घर के पीछे गया और सोने से भरा बक्सा निकाल लिया।

अब क्या था अब तो उसके चारों तरफ़ सोना ही सोना हो गया था। और उस बक्से में तो इतना सारा सोना था कि वह और उसकी

पत्नी दोनों अपनी सारी ज़िन्दगी बिना कुछ किये धरे गुजार सकते थे।

पर यह सब बात वह अपनी पत्नी को तो नहीं बता सकता था न कि उसको यह कहाँ से पता चला कि वह सोना वहाँ था और फिर उसे कहाँ खोदना था।

उसने वह बक्सा एक सुरक्षित जगह छिपा दिया और जैसे जैसे उसको उसकी जरूरत पड़ती जाती थी वह उसमें से एक एक टुकड़ा घर लाने लगा।

अब क्या था कोफी और अरबा गाँव के ही नहीं बल्कि अपने देश के सबसे अमीर आदमी हो गये। अरबा गरीबों पर बहुत दयालु थी वह उनको अपने पैरों पर खड़ा होने में बहुत सहायता करती थी।

कोफी भी बहुत दयालु था पर वह अपना ध्यान और ज़्यादा पैसा बनाने पर और और ज़्यादा मशहूर होने पर लगा रहा था। उन दोनों की ज़िन्दगी इससे अच्छी हो ही नहीं सकती थी। वे दोनों बहुत खुश थे। जल्दी ही उनके एक बेटा हुआ जिसको वे बहुत प्यार करते थे।

एक रात जब कोफी और अरबा सोने के लिये लेटे तो कोफी ने एक चुहिया दरवाजे पर कराहती हुई सुनी।

एक चूहा उससे बोला — “ये लोग अब बहुत अमीर हो गये हैं। अब इन्होंने अपने सारे दरवाजे लोहे के लगवा लिये हैं।

हम लोगों के लिये पहले अच्छा था जब ये लोग गरीब थे क्योंकि तब इनके लकड़ी के दरवाजे थे और तब तुम्हारी कराहट इन के दरवाजे से हो कर अन्दर जा सकती थी पर अब नहीं जा सकती।”

“हा हा हा हा।” कोफी यह सुन कर हँस पड़ा। वह भूल गया था कि इस समय वह अपनी पत्नी के साथ था।

सो अरबा ने जैसे ही उसको हँसते हुए सुना तो वह सोते से जागी और उससे पूछा — “हँसने की क्या बात है कोफी? क्या तुम फिर से मेरे खर्चों पर हँस रहे हो?”

कोफी ने बात टाली — “नहीं नहीं। कुछ नहीं। मैं तो केवल सपना देख रहा था। तुम सो जाओ।” पर उसका हँसना इतनी जोर का था कि उसने बच्चे को भी जगा दिया।

और अरबा को यह अच्छा नहीं लगा क्योंकि बड़ी मुश्किल से तो उसने बच्चे को सुलाया था।

वह बोली — “यह तुम्हारा हँसना तुमको किसी दिन किसी मुश्किल में डालेगा। मैंने इसको कई बार टालने की कोशिश की है पर आजकल तो तुम किसी मरे हुए शरीर पर भी हँसते हो जो रोने वालों की भीड़ में होता है और फिर अपने आप ही बेवकूफ बनते हो।

अब मुझे इसे सुलाने के लिये फिर से दूध पिलाना पड़ेगा। काश तुम इसको दूध पिला सकते।”

“मुझे अफसोस है प्रिये कि मैं यह काम नहीं कर सकता। हा हा हा हा। पर तुम अब सो जाओ।”

जैसी कि एक बहुत पुरानी कहावत है कि जब कुत्ते की मौत आती है तो उसकी सूँघने की ताकत खत्म हो जाती है, खास कर के माँस की जो कि उसका सबसे प्यारा खाना है।

हालाँकि कोफी अब एक बहुत ही अमीर आदमी था पर वह अपनी एक पत्नी से सन्तुष्ट था पर क्योंकि कोफी के गाँव में एक से ज्यादा पत्नी रखना अमीरी की एक निशानी थी सो उसने निश्चय किया कि वह एक और शादी करेगा।

कोफी ने एक ऐसी सुन्दर लड़की से शादी की जिसको देख कर किसी को भी जलन हो सकती थी। वह लड़की कोफी को अरबा के साथ बिल्कुल नहीं देख सकती थी।

जब वे साथ साथ हँसते तो वह कहती कि वे उसके ऊपर हँस रहे थे। जब वे आपस में बात करते तो वह कहती कि वे उसकी बुराई कर रहे थे। वह बस तभी खुश रहती जब वे आपस में लड़ रहे होते।

एक दिन जब वे अपने घर के पिछवाड़े खाना बना रहे थे तो कोफी की दूसरी पत्नी वहाँ आयी तो कोफी ने कुछ कुत्तों को उसके बारे में बात करते सुना।

एक कुत्ते ने दूसरे से कहा — “इसको देखो यह फिर यहाँ है। जबसे यह यहाँ आयी है तबसे हमारा तो खाने का हिस्सा ही कम हो गया है।”

दूसरा बोला — “वह सोचती है कि वह अगर हमारा हिस्सा खा लेती है तो वह बहुत बड़ी हो जायेगी।”

कोफी फिर ज़ोर से हँस पड़ा। अरबा ने पूछा — “तुम किस बात पर हँस रहे हो? क्या तुम्हें पता नहीं कि अगर कोई आदमी अकेला हँसता है तो उसके जबड़े में दर्द हो जाता है?”

कोफी की दूसरी पत्नी बोली — “बहाने मत बनाओ कि तुम जानती नहीं हो कि मैं यहाँ क्यों हूँ। मैं तुमको सारी रात अपने बारे में बात करते और हँसते सुनती हूँ और अब तुम मेरे सामने भी यह सब करने लगे हो। भगवान जानता है कि जब मैं यहाँ नहीं होती हूँ तब तुम क्या करते होगे।”

अरबा ने उसको समझाने की बहुत कोशिश की — “मैं सच कहती हूँ कि मुझे यह नहीं मालूम कि यह क्यों हँस रहा है।” पर कोफी की दूसरी पत्नी कुछ सुनने को तैयार नहीं थी।

कोफी ने अरबा को बचाने की कोशिश भी की पर इससे यह मामला और बिगड़ गया। उसकी दूसरी पत्नी ने यह सोच लिया था कि कोफी अरबा को बहुत प्यार करता था और उसको किसी भी मुश्किल से बचाने के लिये कुछ भी कर सकता था।

इस तरह से कोफी अपनी दो पत्नियों के साथ काफी समय तक रहता रहा और एक दिन उसकी यह हँसी उसके लिये बहुत मँहगी पड़ गयी।

एक बार जब कोफी का बेटा बड़ा हो गया तो इस खुशी में उसने दो दिन की दावत का इन्तजाम किया। उसने दो गाय, दो बकरे और कुछ मुर्गे चुने और उनको मारने के लिये बँधवा दिया।

वह भीड़ में बैठा हुआ था और अपनी पत्नियों की सहेलियों को एक खास नाच नाचते देख रहा था।

उस समय उसने एक गाय को यह कहते सुना — “यहाँ तो कुछ मजा नहीं आ रहा है। यह कब खत्म होगा। मैं तो यहाँ से बहुत जल्दी चले जाना चाहती हूँ।”

तो कोफी का एक कुत्ता बोला — “जब तक तुम इसका आनन्द ले सकती हो अच्छा है कि तुम उसे ले लो क्योंकि कल को तो तुम्हारी हड्डियाँ भी मेरी हो जायेंगी।”

बदकिस्मती से इसी समय कोफी की दूसरी पत्नी अकेले नाच रही थी। कुत्ते की बात सुन कर कोफी को फिर एक बार हँसी का दौरा पड़ गया — “हा हा हा हा।”

उसको हँसता देख कर उसकी दूसरी पत्नी ने नाचना बन्द कर दिया और बोली — “बस, अब मैं और नहीं नाच सकती। सब लोग मेरे गवाह हैं कि तुम मेरे नाच पर हँस रहे हो क्योंकि मुझे नाचना नहीं आता न।”

कोफी ने कहा — “नहीं नहीं। ऐसा नहीं है मुझे तो बस ऐसे ही कुछ याद आ गया था और मैं हँस पड़ा।”

उसने पूछा — “तो बताओ कि ऐसी कौन सी चीज़ तुमको इस समय याद आ गयी थी जो तुम इतनी ज़ोर से हँस पड़े।”

पर कोफी तो इस डर से कि वह मर जायेगा उसको यह बता भी नहीं सकता था कि वह क्यों हँस रहा था। बिना किसी और अप्रिय घटना के यह सब खत्म हो जाये इसलिये कोफी ने उसको वायदा किया कि वह अपनी उस याद के बारे में उसको बाद में बता देगा।

कई दिन तक कोफी की दूसरी पत्नी उससे पूछती रही कि उस दिन दावत के दिन वह क्या सोच कर हँसा था पर उसने हमेशा ही उसे टाल दिया।

जब उसकी पत्नी और नहीं सह सकी तो वह इस मामले को लेकर गाँव के सरदार के पास पहुँची।

सरदार ने कोफी से कहा — “कोफी, अब यह मामला काफी दूर तक आ गया है मेरे दोस्त। अगर मैं तुम्हारी जगह होता तो मैंने इस मामले को अब तक कब का खत्म कर दिया होता।”

कोफी ने सरदार से कहा — “मुझे अफसोस है सरदार कि मैं यह नहीं बता सकता क्योंकि अगर मैंने बताया तो मैं मर जाऊँगा।”

यह सुन कर सरदार बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — “यह तो एक और अजीब बात है कि तुम क्या सोच रहे हो यह बताने से तुम

मर जाओगे। लगता है कि तुम मजाक कर रहे हो। ऐसा भला कौन है जो यह बता कर मर जायेगा कि वह क्या सोच रहा था?”

कोफी वहाँ चुपचाप खड़ा था उसकी समझ में नहीं आ रहा था कि वह क्या करे। अगर उसने अपने हँसने की वजह बता दी तो वह यकीनन मर जायेगा।

और अगर उसने नहीं बताया तो भी वह मर जायेगा, हालाँकि तब वह अपनी पत्नी की बातों से धीरे धीरे मरेगा।

सो उसने मरने का पहला तरीका चुना। उसने अगले दिन अपने सब दोस्तों को, परिवार वालों को और सरदार को अपने घर अपने मरने की दावत में बुलाया। उसने अब तक बहुत अच्छी ज़िन्दगी गुजारी थी सो वहाँ काफी लोग आये थे।

जब वे सब आ गये तो कोफी बोला — “किसी को मेरे मरने पर रोने की जरूरत नहीं है क्योंकि मैं तुम सब लोगों की वजह से ही मर रहा हूँ। अरबा, मैं तुमको अपना सारा सोना देता हूँ। और मेरे बेटे, मैं तुमको अपनी सारी जायदाद देता हूँ।”

फिर सरदार को सिर झुकाते हुए उसने अपनी हिरन और राजा शेर से मिलने की और शेर की उसके नुकसान भरने के बदले में भेंट देने की कहानी सुनायी।

तब उसने उनको बताया कि वह अपने बेटे की दावत वाले दिन क्यों हँस रहा था। जैसे ही उसने अपनी बात खतम की वह मर कर जमीन पर गिर पड़ा।

वह दावत तो रोने में बदल गयी। गाँव वाले तो इतने ज़्यादा दुखी और गुस्सा थे कि उनको यह पता ही नहीं था कि वे कर क्या रहे थे जब उन्होंने कोफ़ी की दूसरी पत्नी को पकड़ा और उसको मार दिया।

उसको उन लोगों ने जला दिया और उसकी राख एक थैले में भर कर कौए को दे दी ताकि वह उसको नदी में फेंक दे।

पर कौआ शायद यह जानने के लिये बहुत इच्छुक था कि उस थैले में क्या था सो जब वह उसको ले कर उड़ा तो उसने उस थैले को बीच में ही खोल कर देखा कि उसमें क्या था।

थैले के खुलते ही उसमें से कोफ़ी की पत्नी की राख उड़ कर चारों तरफ बिखर गयी। वह जहाँ भी गिरी लोगों के दिलों में एक दूसरे के लिये जलन पैदा हो गयी।

यहीं से बुरे आदमियों और बुरी चीजों की शुरुआत हुई। इससे पहले यहाँ हर जगह दया और प्यार था।



4 जानवरों की बातें और उत्सुक पत्नी¹³

जानवरों की भाषा जानने वाली लोक कथाओं की यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है। तो लो तुम भी पढ़ो इटली की यह लोक कथा अब हिन्दी में।

एक बार एक जवान किसान था जिसकी शादी हो गयी थी पर उसकी आमदनी इतनी कम थी कि वह बेचारा अपनी जरूरतें भी पूरी नहीं कर पाता था।



एक बार जब वह खेत में काम कर रहा था तो उसको एक बहुत बड़ा मशरूम¹⁴ मिला। वह उसको अपने मालिक पादरी के पास ले गया।

पादरी ने उससे कहा — “तुम कल उसी जगह चले जाना जहाँ से यह मशरूम ले कर आये हो। वहाँ जा कर गड्ढा खोदना और उसमें से जो कुछ मिले उसे मुझे ला कर देना।”

अगले दिन वह जवान किसान फिर वहीं गया और गड्ढा खोदा तो उसको वहाँ दो जहरीले साँप मिले। उसने उनको मार दिया और अपने मालिक के पास ले गया और उन्हें पादरी को दे दिये।

¹³ Animal Talk and the Nosy Wife (Story No 177) – a folktale from Italy from its Province of Agrigento. Adapted from the book “Italian Folktales”, by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

Hindi translation of 125 tales out of 200 tales of this book is available from hindifolktales@gmail.com

¹⁴ Mushroom – a kind of vegetable. See its picture above



उसी शाम को पादरी के पास कुछ ईल मछलियाँ¹⁵ भी लायी गयी। तो उन्होंने अपनी नौकरानी से कहा — “ये ईल मछली उस नौजवान आदमी के खाने के लिये हैं। इनमें से दो पतली वाली ईल निकाल लो और उनको उसके लिये तल दो।”

नौकर ने गलती कर दी। उसने दो ईल मछली की बजाय उस किसान के लिये वे दो साँप तल दिये जो वह नौजवान ले कर आया था और उनको उस नौजवान किसान को खाने में परस दिये।

जब किसान का खाना खत्म हो गया तो उसकी निगाह नीचे गयी तो उसने देखा तो वहाँ एक बिल्ली और एक कुत्ता बैठे थे। उसने उनको बात करते सुना।

कुत्ता बिल्ली से कह रहा था — “मुझे जितनी बड़ी तुम हो उससे भी ज़्यादा माँस मिलने वाला है।”

बिल्ली बोली — “नहीं, मुझे सबसे ज़्यादा माँस मिलेगा।”

कुत्ता बोला — “नहीं, मुझे मिलेगा क्योंकि मैं मालिक के साथ बाहर जाता हूँ और तुम तो केवल घर में ही रहती हो इसलिये मुझे तुमसे ज़्यादा माँस मिलना चाहिये।”

बिल्ली बोली — “यह तो तुम्हारा काम है कि जहाँ मालिक जाये तुम उनके साथ साथ जाओ, जैसे कि मेरा यह काम है कि मैं घर में रहूँ। इसमें खास बात क्या है।”

¹⁵ Eel fish – a kind of snake-like fish. See its picture above.

आश्चर्य किसान उनकी ये सब बातें समझ रहा था। किसान को विश्वास हो गया कि वे सॉप खा कर ही उसमें जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है।



वहाँ से वह खच्चरों को जौ¹⁶ खिलाने के लिये नीचे घुड़साल में चला गया तो वहाँ उसने उनको बात करते सुना।

उन खच्चरों में से एक खच्चर कह रहा था — “उसको मुझे तुम से ज़्यादा जौ देना चाहिये था क्योंकि मैं उसको अपनी पीठ पर बिठा कर ले जाता हूँ।”

दूसरा खच्चर बोला — “पर उसको मुझे भी काफी जौ खिलाना चाहिये क्योंकि मैं उसका इतना सारा बोझा उठाता हूँ।”

ये बातें सुनने के बाद किसान ने जौ को दो बराबर हिस्सों में बाँटा और उनको दे दिया। दूसरा खच्चर बोला — “देखा न मैंने तुमसे क्या कहा था। यह किसान हमको खाना खिलाने में कितना न्यायपूर्ण है।”

किसान उन खच्चरों को खाना खिला कर फिर ऊपर गया तो उसको वहाँ बिल्ली मिली। वह उससे बोली — “सुनो, मुझे पता चल गया है कि जो कुछ हम लोग बात करते हैं वह तुम सब समझते हो।

¹⁶ Barley – a kind of grain. See its picture above.

मालिक ने जब उस नौकरानी से उन साँपों को माँगा तो उनकी नौकरानी ने उनको बताया कि वह उसने गलती से तुमको परस दिये थे। और अब मालिक यह जानना चाहते हैं कि तुमको जानवरों की भाषा समझने की ताकत आ गयी है या नहीं।

उन्होंने ऐसी चीजें एक जादू की किताब में पढ़ी थीं और अब वह तुम पर दबाव डालेंगे कि तुम यह मान लो कि तुम हमारी भाषा समझते हो।

पर याद रखना तुम इस बात को बिल्कुल साफ मना कर देना क्योंकि अगर तुमने यह मान लिया कि तुम जानवरों की भाषा समझते हो तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे और फिर वह ताकत मालिक के पास पहुँच जायेगी।”

बिल्ली की चेतावनी के बाद उस किसान ने उस पादरी के कई सवाल पूछने के बाद भी यह मान कर नहीं दिया कि उसको जानवरों की भाषा आ गयी थी। आखिर पादरी ने उससे यह जानने की कोशिश छोड़ दी और उसको वापस घर भेज दिया।

जब वह किसान घर जा रहा था तो उसको भेड़ों का एक झुंड मिला। उन भेड़ों के मालिक को यह चिन्ता थी कि हर रात उसकी कुछ भेड़ें गायब हो जाती थीं। उस किसान ने उन भेड़ों के मालिक से पूछा — “तुम मुझे क्या दोगे अगर मैं कुछ ऐसा कर दूँ कि तुम्हारी भेड़ें फिर गायब न हों।”

भेड़ों के मालिक ने जवाब दिया — “जब मैं यह देखूँगा कि अब मेरी कोई भेड़ गायब नहीं हो रही है तो मैं तुमको एक नर और एक मादा खच्चर दे दूँगा।”

सो वह किसान उस रात उन भेड़ों के साथ रहा और बाहर भूसे पर सोया। आधी रात को उसने कुछ आवाजें सुनी। वे आवाजें भेड़ियों की थीं जो कुत्तों को बुला रहे थे।

एक भेड़िया चिल्लाया — “ओ भाई वाइटस¹⁷”

कुत्ते ने जवाब दिया — “हॉ भाई निक¹⁸।”

भेड़िया बोला — “चलो इन भेड़ों के पीछे चलते हैं।”

कुत्ता बोला — “नहीं, आज तुम इन भेड़ों के पास भी नहीं जा सकते क्योंकि आज वहाँ एक चरवाहा सो रहा है।”

इस तरह वह किसान वहाँ एक हफ्ते तक बाहर सोया। इससे वे भेड़िये उन भेड़ों के पास तक नहीं आ पाये। इस तरह उन भेड़ों के मालिक की भेड़ों में से एक भी भेड़ कम नहीं हुई।

नवें दिन उन भेड़ों के मालिक ने अपने बेवफा कुत्तों को मार डाला और दूसरे नये कुत्तों को ला कर रख लिया। उस रात भेड़िये फिर चिल्लाये — “ओ भाई वाइटस, क्या हम भेड़ों के पास आ जायें?”

¹⁷ Vitus – the name of the dog

¹⁸ Nick – the name of the wolf

नये कुत्तों ने जवाब दिया — “हाँ अब तुम लोग आ सकते हो। तुम्हारे दोस्तों को तो मार दिया गया है और अब हम तुमको पीस कर तुम्हारा माँस खा लेंगे।”

अगली सुबह भेड़ों के मालिक ने किसान को एक नर और एक मादा खच्चर दे दिया। वह किसान उनको ले कर अपने घर चला गया।

जब वह उनको ले कर घर पहुँचा तो उसकी पत्नी ने पूछा कि वह किसके जानवर ले आया है। तो उसने जवाब दिया कि वे जानवर उसके अपने ही थे।”

“पर तुमको ये मिले कैसे?” इसके जवाब में किसान ने कुछ नहीं कहा और वह चुप ही रहा।

कुछ दिन बाद पड़ोस के शहर में एक मेला लगा तो किसान ने सोचा कि वह अपनी पत्नी को वह मेला दिखा कर लायेगा। सो उसने अपनी पत्नी कहा कि वह तैयार हो जाये और वे लोग मेला देखने जायेंगे।

पत्नी खुशी खुशी तैयार हो गयी और वे दोनों मादा खच्चर पर बैठ कर मेला देखने चले। उन्होंने नर खच्चर को भी साथ ले लिया था वह उनके साथ साथ चल रहा था।

नर खच्चर बोला — “माँ, ज़रा धीरे चलो, मेरा इन्तजार तो करो।”

मादा खच्चर बोली — “आओ, तुम ज़रा तेज़ तेज़ आओ। तुम्हारे ऊपर तो कोई बोझा भी नहीं है जब कि मेरे ऊपर तो दो दो आदमी बैठे हैं।”

उन दोनों माँ बेटे की बातें सुन कर किसान हँस पड़ा। किसान को हँसता सुन कर उसकी पत्नी चौंक गयी क्योंकि उस समय वहाँ कुछ ऐसा था ही नहीं जिस पर हँसा जाता तो फिर उसका पति क्यों हँसा।

सो उसने पूछ ही लिया — “आप किस बात पर हँसे जी?”

किसान ने बात को टाला — “कुछ नहीं। किसी बात पर नहीं। बस मुझे कुछ ऐसे ही हँसी आ गयी।”

पत्नी बोली — “ऐसे ही तो कोई नहीं हँसता। मुझे अभी अभी बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे नहीं तो मैं इस खच्चर पर से अभी उतर जाऊँगी और वापस घर चली जाऊँगी।”

किसान बोला — “ठीक है मैं तुमको घर पहुँच कर बताऊँगा। अभी तो तुम मेला देखने चलो।”

वे मेला देखने सैनटो शहर¹⁹ पहुँचे पर उसकी पत्नी ने उससे फिर पूछना शुरू कर दिया — “अब बताइये मुझे कि आप वहाँ क्यों हँसे थे? ऐसा क्या था वहाँ हँसने वाला?”

किसान ने फिर कहा — “मैंने कहा न जब हम घर वापस जायेंगे तब बताऊँगा।”

¹⁹ Cento city is in Italy

इस पर पत्नी ने कहा — “मैं मेला तब तक नहीं घूमूँगी जब तक आप मुझे यह नहीं बतायेंगे कि आप वहाँ किस बात पर हँसे थे। नहीं तो पहले घर चलिये।”

पति ने उसको बहुत समझाया पर वह अपनी जिद पर अड़ी रही सो उसको अपनी पत्नी को ले कर मेला छोड़ कर घर जाना ही पड़ा। घर पहुँचते ही वह फिर अपने पति के पीछे पड़ गयी। तब वह बोला — “अच्छा पहले पादरी के पास चलो फिर मैं तुम्हें बताऊँगा।”



जल्दी से पत्नी ने अपने चेहरे का परदा हटाया और दोनों पादरी के पास गये। जब पति पादरी का इन्तजार कर रहा था तो उसने सोचा — “अब तो मुझे इसे बताना ही पड़ेगा और फिर मैं मर जाऊँगा। यह मेरी बदकिस्मती होगी पर क्या करूँ। पहले मैं अपने पाप स्वीकार कर लूँ और कम्यूनियन²⁰ ले लूँ तब मैं शान्ति से मर सकूँगा।”

जब वह यह सोच रहा था तो उसने मुर्गियों को थोड़ा सा दाना फेंका। दाना फेंकते ही मुर्गियाँ उसके पास जमा हो गयीं पर उनसे पहले मुर्गा अपने पंख फड़फड़ाता वहाँ आ गया और उसने उन मुर्गियों को वहाँ से भगा दिया।

²⁰ First I should make confession and perform communion (see its picture above). Communion is a Christian ceremony in which bread is eaten and wine is drunk as a way of showing devotion to Jesus Christ.

किसान ने मुर्गे से पूछा — “तुमने मुर्गियों को दाना क्यों नहीं खाने दिया?”

मुर्गे ने कहा — “मुर्गियों को वही करना चाहिये जो मैं कहता हूँ चाहे वे कितनी भी सारी क्यों न हों। मैं तुम्हारी तरह नहीं हूँ जिसकी केवल एक पत्नी है और वह भी उससे सँभलती नहीं है। वह तुम्हारे ऊपर राज करती है और तुम उसको केवल यह बताने के बाद ही मर जाओगे कि तुम हमारी भाषा समझते हो।”

किसान ने इसके ऊपर विचार किया और फिर मुर्गे से बोला — “तुम तो मुझसे कहीं ज़्यादा होशियार हो।”

कह कर उसने अपनी कमर से अपनी पेटी निकाल ली, उसको पानी लगा कर थोड़ा सा गीला किया ताकि वह थोड़ी से मुलायम और लचीली हो जाये और फिर अपनी पत्नी का इन्तजार करता बैठ गया।

उसकी पत्नी वापस आयी और बोली — “पादरी जी आ रहे हैं। अब बताइये कि आप क्यों हँस रहे थे।”

पति ने अपनी पेटी उठायी और उस पेटी से उसे तड़ातड़ मारना शुरू कर दिया। पत्नी ज़ोर ज़ोर से चिल्लाने लगी।

इतने में पादरी जी आ गये और पूछा — “कौन कन्फ़ेशन²¹ करना चाहता है?”

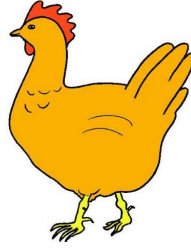
²¹ To confess – in Christianity people confess their sins at time to time before the priest. A confession is a statement made by a person or a group of people acknowledging some personal fact that the

पति तुरन्त बोला — “मेरी पत्नी !”

पादरी को इशारा मिल गया सो वह वहाँ से लौट गया। पत्नी उस पादरी के पीछे पीछे चली गयी। थोड़ी देर बाद पत्नी वापस आयी तो उसके पति ने कहा — “तुमने सुना कि मैं तुमसे क्या कहना चाहता था?”

पत्नी रोते हुए बोली — “मुझे आपसे कुछ नहीं पूछना। मैं कुछ नहीं जानना चाहती।”

और उसके बाद से उसने फिर पति के कामों में बेकार ही बीच में बोलना छोड़ दिया। इस तरह मुर्गे ने उस किसान की जान बचायी।



5 एक बैल और एक गधा²²

जानवरों की भाषा जानने की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के फारस देश की अरेबियन नाइट्स की कथाओं से ली है।

इस कथा में भी देखने वाली बात यह है कि जानवरों की भाषा जानने का भेद बताने पर मर जाने की जो शर्त है उससे हमारी कथा का हीरो कैसे बचता है।

एक बार एक सौदागर था जो बहुत अमीर था। उसके पास बहुत सारे नौकर चाकर और जानवर थे। उसकी एक पत्नी थी और परिवार था और वह अपने खाने पीने के लिये खेती करता था।

उसके पास जंगली जानवरों और हर तरह की चिड़िया की बोली समझने की ताकत थी। अपने मरने के समय वह अपनी इस ताकत को किसी को भी भेंट कर सकता था। इसलिये उसने इस बात को अभी तक किसी को बताया नहीं था। सबसे छिपा कर रखा हुआ था।

एक दिन वह अपने नौकरों के साथ बैठा हुआ था और उसके बच्चे उसके आस पास खेल रहे थे। उसने बैल को गधे से कहते सुना — “तुम्हारे नीचे सब साफ और ताजा रहता है। लोग तुम्हारी

²² The Tale of the Bull and the Ass – Adapted from the book “More Stories From the Arabian Nights” by Richard Burton. 1957. It may be read in English at

<http://sushmajee.com/shishusansar/stories-arabian-nights/arabian-3/51-bull-ass.htm> also.

नौकरी में लगे रहते हैं। वे तुमको साफ छना हुआ बाजरा खिलाते हैं, पीने के लिये साफ पानी देते हैं।



जबकि मेरे साथ ऐसा नहीं है। वे मुझे काम के लिये बीच रात में भी ले जाते हैं। मेरे गर्दन पर जुआ²³ रखते हैं और मैं सुबह से शाम तक जमीन जोतते जोतते थक जाता हूँ।

उसके बाद भी वे मुझसे अच्छा बरताव नहीं करते। मुझे एक बाड़े में बन्द कर देते हैं और मेरे सामने वे मिट्टी मिला भूसा और दाना फेंक देते हैं।

फिर मैं तो धूल मिट्टी में पड़ा रहता हूँ जबकि तुम साफ जगह रहते हो। मैं अक्सर ही भूखा रहता हूँ जबकि तुमको भर पेट खाना मिलता है।”

गधा बोला — “ओ बैलों के पिता, पहली बात तो यह है कि तुम बहुत सीधे हो और दूसरे तुमको सलाह देने वाला भी कोई नहीं है। तुम ताकत और उत्साह से भरे हुए हो और तुम अपने मालिक के साथ नम्र भी बहुत हो। तुम दूसरों को सुख पहुँचाने के लिये बहुत ज़्यादा तकलीफ तक सह जाते हो।

²³ Translated for the word “Yoke”. Yoke is wooden log kept on the necks of bulls to manouvre them to take work from them. See its picture above.

अब तुम मेरी बात सुनो और जैसा मैं कहता हूँ वैसा ही करो। जब वे तुमको गन्दी जगह में बाँधते हैं तब तुम अपने माथे से जमीन को खुरच कर उनको यह दिखाते हो कि तुम वहाँ बहुत सन्तुष्ट हो।

जब वे तुम्हारी तरफ सूखा खाना फेंकते हो तब तुम उसके ऊपर बहुत लालची हो कर गिरते हो और उसको बहुत जल्दी से खा जाते हो।

पर अगर तुम मेरी बात मानोगे तो तुम ज़्यादा अच्छे रहोगे और मुझसे भी ज़्यादा अच्छी ज़िन्दगी गुजारोगे।

तो अब तुम मेरी बात ध्यान से सुनो। जब वे तुमको खेत पर ले जायें तो तुम बस लेट जाना और जब तक न उठना जब तक कि वे तुमको बहुत ज़ोर ज़ोर से हिला कर न उठायें। और अगर तुम उठ भी जाओ तो फिर दोबारा लेट जाना।

जब वे तुमको खाना दें तो उसको केवल सूँघ कर छोड़ देना। उसको छूना भी नहीं। बस अपने भूसे और दाने से ही खुश रहना। तुम इसको तीन चार दिन कर के देखो तब तुमको शायद थोड़ा आराम मिलेगा।”

बैल ने सोचा कि गधा उसका अच्छा दोस्त था सो उसने उसको धन्यवाद दिया और बोला — “तुम ठीक कहते हो गधे भाई।”

अगले दिन किसान उस बैल को उसकी गरदन पर जुआ रख कर खेत ले गया और उसको काम में लगा दिया। पर बार बार वह बैल उस हल को झटका देता था इस पर उस किसान ने उसको बहुत

मारा तो उसने अपनी गरदन पर रखा जुआ नीचे गिरा कर तोड़ दिया ।

वह किसान तो यह सब देख कर हैरान रह गया । उसने बैल को खाने के लिये दाना और भूसा दिया पर बैल ने उसको केवल सूँघा और उसको वहीं छोड़ कर उससे जितनी दूर हो सकता था उतनी दूर जा कर लेट गया । सारी रात उसने बिना खाये ही निकाल दी ।

अगले दिन जब किसान आया तो उसने सारा का सारा भूसा और दाना ऐसा का ऐसा ही पड़ा देखा और बैल को बिना खाना खाये अपनी पीठ के बल लेटा देखा तो वह उसके बारे में चिन्ता करने लगा ।

उसने सोचा कि बैल बीमार लगता है इसी लिये यह कल खेत भी नहीं जोत सका और ठीक से खाना भी नहीं खा सका । उसने जा कर सौदागर से कहा कि लगता है बैल बीमार है उसने कल खेत पर भी काम नहीं किया और कल से खाना भी नहीं खाया ।

सौदागर सब समझ गया कि ऐसा क्यों हो रहा था क्योंकि उसने कल बैल और गधे की बात सुन ली थी । सो वह बोला — “उस गधे को ले जाओ और हल का जुआ उसकी गरदन पर रख दो । बैल का काम उस गधे को करने दो ।”

सो उस दिन सारे दिन बैल का काम गधे ने किया । जब शाम को गधा घर वापस आया तो मुश्किल से हिल डुल पा रहा था ।

जबकि बैल सारा दिन आराम से रहा और अपना दाना और भूसा खाता रहा। उसने इस सबके लिये गधे को बहुत बहुत धन्यवाद दिया।

जब गधा बाड़े में लौट कर आया तो बैल उसकी इज़्ज़त में उठ कर खड़ा हो गया और बोला — “धन्यवाद गधे भाई। आज केवल तुम्हारी वजह से ही मैं सारा दिन आराम कर सका और मैंने अपना खाना भी बड़ी शान्ति से खाया।”

पर गधे ने इस बात का उसे कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि वह बहुत थका हुआ था और बैल को अपनी सलाह देने के लिये पछता रहा था कि केवल उसी की सलाह से आज उसको बैल का काम करना पड़ा। फिर उसने उसको अपनी जगह लौटाने का फैसला किया।

जब गधा अपनी जगह लौट आया तो सौदागर चॉदनी का आनन्द लेने के लिये अपनी छत पर आया। उसने गधे को बैल से कहते सुना — “कल तुम क्या करोगे?”

बैल बोला — “जैसा तुमने मुझे करने के लिये कल कहा था वैसा ही मैं कल भी करूँगा।”

गधा बोला — “नहीं, कल तुम वैसा नहीं करोगे।”

“क्यों?”

“अब मैं तुमको एक और अच्छी सलाह देता हूँ। क्योंकि आज मैंने मालिक को यह कहते सुना है कि “अगर बैल काम करने के

लिये न उठे तो उसको कसाई को दे आना ताकि वह उसको काट सके और उसका माँस गरीब लोगों को दे सके।”

इसलिये अब मुझे तुम्हारे लिये डर लगता है। इसलिये तुम्हारे लिये अच्छा तो यही होगा कि कल तुम काम पर चले जाओ।” बैल ने गधे को इस सलाह के लिये भी धन्यवाद दिया और जोर से रँभाया।

अगली सुबह वह सौदागर अपनी पत्नी के साथ उस जगह गया जहाँ वह बैल बँधा हुआ था। तभी किसान उसको खेत पर ले जाने के लिये वहाँ आया तो उसका रोज का सा बरताव देख कर वह एक बार फिर आश्चर्य में पड़ गया।

यह देख कर सौदागर इतनी जोर से हँसा कि वह तो लेट सा ही गया। उसकी पत्नी ने पूछा — “तुम इतना क्यों हँस रहे हो जी?”

सौदागर बोला — “कोई खास बात नहीं। मैं एक ऐसी छिपी हुई बात पर हँस रहा हूँ जो मैंने सुनी है पर मैं तुमको तब तक नहीं बता सकता जब तक मैं मर न रहा होऊँ।”

पत्नी बोली — “तुमको यह बात मुझे बतानी ही होगी चाहे तुम उसकी वजह से मर ही क्यों न जाओ।”

वह बोला — “क्या कह रही हो तुम? क्या तुम चाहती हो कि मैं मर जाऊँ? मैं तुमको अपनी मौत के डर की वजह से जानवरों और चिड़ियों की भाषा नहीं बता सकता।”

पत्नी को पति की इस बात पर विश्वास ही नहीं हुआ कि वह जानवरों और चिड़ियों की भाषा जानता था और उसको बताने से वह मर भी सकता था।

इसलिये वह बोली — “अल्लाह कसम, लगता है कि तुम मुझ से झूठ बोल रहे हो। तुम मेरे ऊपर हँस रहे हो। और क्योंकि तुम मुझे बता नहीं रहे हो इसलिये मैं अब तुम्हारे साथ नहीं रहने वाली। मैं जा रही हूँ।” और उसने रोना शुरू कर दिया।

सौदागर बोला — “क्या हो गया है तुम्हें? कम से कम अल्लाह से तो डरो और मुझसे कोई और सवाल मत पूछो।”

“पर तब तुम मुझे यह तो बताओ कि तुम हँस क्यों रहे थे?”

वह बोला — “जब मैंने अल्लाह से जानवरों और चिड़ियों की बोली समझने की प्रार्थना की उस समय मैंने कसम खायी थी कि मैं अपना यह भेद मरते दम तक किसी को नहीं बताऊँगा।”

पर उसकी पत्नी तो कुछ सुनना ही नहीं चाहती थी। उसने उससे फिर उस बात को बताने की जिद की — “मुझे इस बात से कोई मतलब नहीं कि तुम्हारा क्या होता है। मुझे तो तुम बस इतना बता दो कि बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।”

जब उसकी पत्नी किसी तरह से नहीं मानी तो उसने उससे कहा कि वह अपने माता पिता को, दूसरे सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को वहाँ बुलवा ले ताकि सब लोग यह जान लें कि वह क्यों मरा।

उसके ऊपर इस बात का भी कोई असर नहीं पड़ा और उसने ऐसा ही किया। उसने अपने माता पिता और सभी सगे रिश्तेदारों को और पड़ोसियों को अपने घर बुलवा लिया।

फिर सौदागर ने काज़ी और अपने वकील को बुलवाया और अपनी वसीयत तैयार की क्योंकि वह एक भेद खोलने जा रहा था और उस भेद को खोलने के बाद वह मर जाता।

सौदागर अपनी पत्नी को बहुत प्यार करता था क्योंकि वह उसकी चाची की बेटी थी और उसके बच्चों की माँ थी। उसको उसके साथ रहते बीस साल हो गये थे।

जब सब लोग इकट्ठा हो गये तब वह बोला — “मेरे पास एक आश्चर्यजनक कहानी है अगर उसको मैं किसी को भी बताऊँगा तो मैं मर जाऊँगा।

इसलिये पहली बात तो यह है कि इस औरत को समझाओ कि यह अपनी जिद छोड़ दे क्योंकि इससे इसका पति और इसके बच्चों के पिता मर जायेगा।”

पर पत्नी बोली — “पर मैं अपनी बात से नहीं मुकरने वाली चाहे मेरा पति मर ही क्यों न जाये। मुझे तो यह जान कर ही रहना है कि उस बैल और गधे के बीच में क्या भेद की बात हुई।”

यह सुन कर सौदागर उठा, उसने वजू किया और अपनी नमाज²⁴ पढ़ी और अपना भेद बताने और मरने के लिये वापस लौटा।

अब हुआ यह कि उस सौदागर के पास पचास मुर्गियाँ और एक मुर्गा भी था। वह उनसे विदा लेने के लिये उनके बाड़े में गया। वहाँ उसने अपने कई कुत्तों में से एक कुत्ते को मुर्गे से बात करते हुए सुना। वह मुर्गा उस समय एक मुर्गी के ऊपर से दूसरी मुर्गी के ऊपर कूद रहा था।

कुत्ता कह रहा था — “तुम कितने नीच हो। जिसने भी तुमको पाला होगा वह तुमसे कितना नाउम्मीद होगा। क्या तुमको आज जैसे दिन भी, जैसा कि आज का दिन है, अपनी करनी पर शर्म नहीं आती?”

मुर्गा बोला — “आज के दिन में क्या खास बात है। क्या हुआ आज?”

कुत्ता बोला — “क्या तुम्हें मालूम नहीं कि आज हमारे मालिक मरने जा रहे हैं? उनकी पत्नी ने यह जिद पकड़ रखी है कि वह अपना भेद उसको बतायें और अगर उन्होंने उसको वह भेद बताया तो फिर वह मर जायेंगे।

²⁴ Vazoo and Namaaz are the parts of a Muslim's daily worship which a Muslim does normally five times a day. While doing Vazoo he cleanses himself with water and then worships Allah.

हम कुत्ते तो उनके लिये दुख मना रहे हैं और तुम खुशी मना रहे हो। यह समय क्या खुशी मनाने का है यह समय तो दुखी होने का है।”

मुर्गा जोर से हँसा और बोला — “तब फिर ऐसा लगता है कि हमारे मालिक में अक्ल की कमी है। अगर वह अपने मामले एक पत्नी के साथ नहीं सिलट सकता तो उसकी पत्नी इस लायक ही नहीं है कि उसके साथ आगे रहा जा सके।

मुझे देखो, मेरे पास पचास मुर्गियाँ हैं। मैं एक को खुश करता हूँ तो दूसरी को छेड़ता हूँ, एक को भूखा रखता हूँ तो दूसरी को ज्यादा खिलाता हूँ। और मेरे शासन में सब मुर्गियाँ मेरी बात मानती हैं। वह बेवकूफ है जो एक पत्नी को भी ठीक से नहीं रख सकता।”

इस पर कुत्ता बोला — “पर तुम क्या सोचते हो कि इस समय उसको क्या करना चाहिये।”



मुर्गा बोला — “उसको शहतूत²⁵ के पेड़ की कुछ डंडियाँ लेनी चाहिये और उसकी पीठ पर उसको उससे रोज मारना चाहिये जब तक कि वह रो रो कर यह न कहने लगे — “मेरे स्वामी, मुझसे गलती हो गयी। मैं वायदा करती हूँ कि अब जब तक मैं ज़िन्दा रहूँगी तब तक ऐसे सवाल मैं फिर कभी नहीं पूछूँगी।”

²⁵ Translated for the word “Mulberry bush”. See its picture above.

उसके बाद भी उसे उसको एकाध बार और मारना चाहिये तभी वह आजादी से रह सकता है और ज़िन्दगी का आनन्द ले सकता है। पर क्या करें, इस हमारे मालिक के पास न तो अक्ल है और न ही वह कुछ सोच सकता है।”

यह सुन कर सौदागर एक शहतूत के पेड़ के पास गया, उसकी कुछ डंडियाँ तोड़ीं और उनको अपनी पत्नी के कमरे में छिपा दिया।

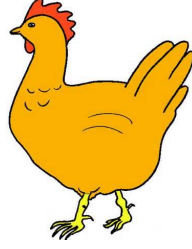
फिर उसने उसको बुलाया — “आओ यहाँ आओ इस कमरे में, मैं तुमको वह भेद यहाँ बताता हूँ ताकि कोई मुझे देखे नहीं और बस फिर मैं मर जाऊँगा।”

पत्नी उसके साथ उस कमरे में घुसी तो उसने दरवाजा बन्द कर लिया और उसके शरीर के हर हिस्से पर यह कहते हुए उन डंडियों से उसकी पिटाई की — “अब आगे से क्या तुम फिर ऐसे सवाल पूछोगी जिनसे तुम्हारा कोई मतलब नहीं है?”

वह उसको तब तक मारता रहा जब तक वह मार खा खा कर बेहोश नहीं हो गयी। और जब तक वह उसे मारता रहा वह बार बार यही कहती रही — “मैं सच कहती हूँ मैं अब आपसे कोई सवाल नहीं करूँगी। मुझे छोड़ दीजिये। मैं अब आपसे कुछ नहीं पूछूँगी।”

फिर पत्नी ने पति के हाथ और पैर दोनों चूमे और दोनों उस कमरे में से बाहर आ गये। अब वह एक बहुत ही अच्छे स्वभाव की औरत बन गयी थी जैसी कि उसको होना चाहिये था।

पत्नी के माता पिता अपने दामाद को ज़िन्दा देख कर बहुत खुश हुए और सौदागर ने इस तरह से मुर्गे से अपना घर चलाना सीखा। फिर वे मरते दम तक खुशी खुशी रहे।

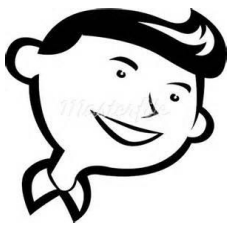


6 जानवरों की बोली²⁶

जानवरों की भाषा जानने की एक और लोक कथा। यह लोक कथा यूरोप महाद्वीप के इटली देश की लोक कथाओं से ली गयी है।

पर यह कहानी इस लोक कथा से पहले दी जाने वाली सब कथाओं से अलग है क्योंकि इसमें जानवरों की भाषा जानने वाला जानवरों की भाषा एक हुनर के रूप में सीखता है।

अब क्योंकि यह एक हुनर है और उसने इसको खास तरीके से सीखा है तो वह इस हुनर को किसी को बताने पर मरता भी नहीं है बल्कि इससे उसका अपना भी फायदा होता है और वह इसको एक हुनर की तरह से ही इस्तेमाल कर के दूसरों का फायदा भी करता है।



एक बार एक बहुत ही अमीर सौदागर था जिसके एक बेटा था। उस बेटे का नाम था बोबो²⁷। बोबो बहुत ही तुरत बुद्धि मजाक करता था और सीखने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

उसकी यह अक्लमन्दी देख कर उसके पिता ने उसको एक बहुत ही अक्लमन्द आदमी की देखरेख में रख दिया था और उसको उसे सारी भाषाएँ सिखाने के लिये कह दिया।

²⁶ Animal Speech – a folktale from Italy from its Mantua area.

Translated from the book: "Italian Folktales", by Italo Calvino. Translated by George Martin in 1980.

²⁷ Bobo – the name of the boy

जब बबो की पढ़ाई खत्म हो गयी तो वह घर आ गया। एक दिन वह अपने पिता के साथ बगीचे में घूम रहा था। वहाँ बहुत सारी चिड़ियों एक पेड़ पर बैठी बैठी इतनी जोर जोर से चीं चीं चीं कर रही थी कि कुछ भी सुनायी नहीं पड़ रहा था।

सौदागर अपने कानों में उँगलियाँ घुसाता हुआ बोला — “ये चिड़ियों हर शाम मेरे कानों का परदा फाड़ती हैं।”

बबो ने पूछा — “क्या मैं आपको बताऊँ कि ये चिड़ियों क्या कह रही हैं?”

उसके पिता ने उसकी तरफ आश्चर्य से देखा और पूछा — “तुम्हें कैसे पता कि ये चिड़ियों क्या कह रही हैं। तुम तो ज्योतिषी नहीं हो न, या हो?”

बबो बोला — “नहीं नहीं, मैं ज्योतिषी तो नहीं हूँ पर मुझे मेरे गुरु ने कई जानवरों की भाषाएँ सिखायी हैं इसलिये मैं आपको यह बता सकता हूँ कि ये क्या कह रही हैं।”

सौदागर बोला — “अब तुम मुझसे यह मत कहना कि मेरा पैसा तुमको जानवरों की भाषा सिखाने में गया है। तुम्हारे उस गुरु ने क्या सोचा कि मैंने तुमको उसके पास जानवरों की भाषा सीखने के लिये भेजा था? मेरा मतलब तो यह था कि उसको तुमको आदमियों की भाषा सिखानी चाहिये थी न कि इन गूंगे जानवरों की।”

बोबो बोला — “क्योंकि जानवरों की भाषा समझना ज़्यादा मुश्किल होता है इसलिये उन्होंने मुझे उन्हीं की भाषा से सिखाना शुरू करने का विचार किया।”

उसी समय एक कुत्ता भौंकता हुआ भागा चला गया तो बोबो बोला — “क्या मैं आपको बताऊँ कि यह कुत्ता क्या कह रहा था?”

“नहीं नहीं। मुझे अब तुम्हारे इन गूंगे जानवरों के बारे में एक शब्द भी और नहीं सुनना। उफ़, लगता है कि मैंने तो तुमको वहाँ पढ़ने के लिये भेज कर अपना पैसा ही बरबाद किया।”

वे चलते रहे चलते रहे। चलते चलते वे एक खाई के किनारे आ गये। वहाँ कुछ मेंढक चिल्ला रहे थे। उनकी आवाज सुन कर पिता फिर दुखी हो कर बोला — “उफ़, ये मेंढक भी मुझे बहुत तंग करते हैं।”

“पिता जी क्या मैं बताऊँ कि ये मेंढक क्या...?”

पिता बोला — “भगवान करे शैतान तुमको और तुमको जिसने यह सिखाया है दोनों को उठा कर ले जाये।”

यह देख कर कि अपने बेटे के ऊपर उसका इतना पैसा बेकार गया सौदागर बहुत गुस्सा हो रहा था। उसको लग रहा था कि यह जानवरों की भाषा किसी जादू टोने से सम्बन्धित है।

यह सोच कर उसने अपने दो नौकरों को बुलाया और चुपचाप उनको अगली सुबह के लिये कुछ बता दिया।

बोबो को सुबह ही उठा दिया गया। एक नौकर ने उसको एक गाड़ी में बिठाया और वह खुद भी उसके साथ ही बैठ गया। दूसरा नौकर आगे बैठ गया और उसने घोड़े को चाबुक मार कर गाड़ी हॉक दी।

बोबो को पता ही नहीं था कि वे लोग कहाँ जा रहे थे। पर उसने देखा कि जो नौकर उसके पास बैठा था उसकी आँखें सूजी हुई थीं और वह कुछ दुखी था।

बोबो ने उससे पूछा — “हम लोग कहाँ जा रहे हैं? और तुम इतने दुखी क्यों हो?” पर उस नौकर ने कोई जवाब नहीं दिया।

तभी घोड़ों ने हिनहिनाना शुरू किया तो बोबो समझ गया कि वे क्या कह रहे थे। वे कह रहे थे — “यह हमारा जाना आना अच्छा नहीं है कि हम अपने छोटे मालिक को मौत की तरफ ले कर जा रहे हैं।”

दूसरा घोड़ा बोला — “यह तो उसके पिता का बड़ी बेरहमी का हुक्म है।”

बोबो ने अपने पास बैठे वाले नौकर से कहा — “तो क्या तुम लोगों को मेरे पिता ने यह हुक्म दिया था कि तुम लोग मुझे बाहर ले जाओगे और मार डालोगे?”

नौकरों ने आश्चर्य से पूछा — “आपको कैसे मालूम?”

बोबो बोला — “इन घोड़ों ने मुझसे ऐसा कहा। ठीक है तुम मुझको अभी अभी मार दो देर तक इन्तजार करा के मुझे क्यों परेशान करते हो?”

नौकर बोले — “पर हमारा दिल नहीं करता कि हम आपको मार दें। हम उस पाप से छूटेंगे कैसे?”

जब वे यह बात कर रहे थे तो उनका अपना कुत्ता भौंकता हुआ उनके पीछे दौड़ा। असल में वह घर से ही उस गाड़ी के पीछे पीछे भागता हुआ चला आ रहा था।

बोबो ने उसकी भी सुनी कि वह क्या कह रहा था। वह कह रहा था कि मैं अपने छोटे मालिक को बचाने के लिये अपनी जान भी कुर्बान कर दूंगा।

बोबो बोला — “अगर मेरे पिता बेरहम हैं तो क्या हुआ कम से कम और दूसरे लोग तो हैं जो मेरे वफादार हैं जैसे तुम ओ वफादार नौकर और यह कुत्ता जो मेरे लिये अपनी जान तक देने को तैयार है।”

नौकर बोले — “अगर ऐसा है तो हम कुत्ते का दिल निकाल कर ले जायेंगे और जा कर बड़े मालिक को दे देंगे। छोटे मालिक, आप भाग जायें यहाँ से।”

बोबो ने अपने नौकरों को और अपने कुत्ते को गले से लगाया और वहाँ से चला गया। सारा दिन वह इधर उधर घूमता रहा। जब रात हुई तो वह एक किसान के घर आया और उससे रहने की जगह

माँगी। जब सब लोग मेज के चारों तरफ शाम का खाना खाने बैठे तो बाहर एक कुत्ता भौंकने लगा।

बोबो उसको सुनने के लिये खिड़की के पास गया और फिर आकर बोला — “जल्दी करो। स्त्रियों और बच्चों को सोने के लिये भेज दो और तुम लोग अपने अपने हथियार सँभाल लो और तैयार हो जाओ। कुछ डाकू आधी रात को यहाँ हमला करने वाले हैं।”

वहाँ बैठे सब लोगों को लगा कि यह आदमी पागल हो गया है। वे बोले — “तुम ऐसा कैसे कह सकते हो? यह सब तुमसे किसने कहा?”

बोबो बोला — “मुझे यह सब इस कुत्ते ने बताया जो अभी यहाँ भौंक रहा था। बेचारा जानवर। अगर मैं यहाँ न होता तब तो इस बेचारे का भौंकना बेकार ही जाता। तुम लोग मेरी बात मानोगे तो सुरक्षित रहोगे।”

किसानों ने अपनी बन्दूकें उठा लीं और छोटे पेड़ों की एक कतार के पीछे छिप गये और उनकी पत्नियाँ और बच्चे घर के अन्दर बन्द हो कर बैठ गये।

आधी रात को पहले एक सीटी की आवाज सुनायी दी, फिर दूसरी और फिर तीसरी और फिर उसके बाद दौड़ते हुए पैरों की।

ये आवाजें सुनते ही उन छोटे पेड़ों के पीछे से दनादन गोलियाँ चलने लगीं सो सारे चोर भाग गये। उनमें से दो चोर मारे भी गये। वे अपने हाथ में अपने चाकू पकड़े हुए कीचड़ में पड़े पाये गये।

बोबो की तो इसके बाद वहाँ बड़ी आवभगत हुई। हालाँकि किसान चाहते थे कि वह वहीं उन्हीं के साथ रहे पर उसने उनको बाई बाई कहा और अपने रास्ते चल दिया।

मीलों चलने के बाद शाम को वह एक और किसान के घर आया। वह यह सोच ही रहा था कि वह उसके घर दरवाजा खटखटाये या नहीं कि उसने पास में ही कुछ मेंढकों को टरते हुए सुना।

उसने उनको पास से सुना तो उनमें से एक मेंढक कह रहा था — “आओ और होस्ट²⁸ को यहाँ फेंको। उसे यहाँ मेरे पास फेंको। अगर तुम उसे मेरे पास नहीं फेंकोगे तो मैं तुम्हारे साथ नहीं खेलूँगा।”

“पर तुम उसे पकड़ नहीं पाओगे और उसके दो टुकड़े हो जायेंगे। हमने उसे कितने सालों से पूरा का पूरा बचा कर रखा है। हम उसको तोड़ना नहीं चाहते।”



बोबो तुरन्त ही उस गड्ढे के पास गया और उसके अन्दर झाँका। उसने उस गड्ढे में देखा कि मेंढक एक पवित्र पतली सी चौरस पत्ती से एक गेंद की तरह से खेल रहे थे। बोबो ने उसको देखते ही कास का निशान

बनाया।

²⁸ Host is bread or wafer consecrated in the celebration of the Eucharist (a sacred ceremony in the Church)



एक मेंढक बोला — “यह होस्ट छह साल से इस गड्ढे में है। छह साल पहले जब शैतान ने किसान की बेटी को बहकाया था तो कम्यूनियन²⁹ में होस्ट को निगलने की बजाय उस लड़की ने उस होस्ट को अपनी जेब में छिपा लिया था और फिर चर्च से घर जाते समय उसने उसको इस गड्ढे में फेंक दिया था।”

बोबो ने अब उस किसान के घर का दरवाजा खटखटाया तो उस किसान ने उसको शाम के खाने के लिये अन्दर बुला लिया।

वह जब किसान से बात कर रहा था तो उसको पता चला कि उसकी बेटी पिछले छह सालों से बीमार चली आ रही थी। कई डाक्टरों को दिखाया पर कोई भी यह नहीं बता सका कि उसको बीमारी क्या है और अब वह मरने वाली हो रही है।

बोबो बाला — “मुझे लगता है कि भगवान उसको सजा दे रहा है। छह साल पहले उसने चर्च का पवित्र होस्ट एक गड्ढे में फेंक दिया था। तुम लोग उस होस्ट को ढूँढो और उससे कम्यूनियन करवाओ तो वह बिल्कुल ठीक हो जायेगी।”

यह सुन कर उस किसान को बहुत आश्चर्य हुआ। वह बोला — “पर तुमसे यह सब किसने कहा?”

बोबो बोला — “मेंढकों ने।”

²⁹ Communion is a Christian worshipping activity in the Church in which the attendees eat bread and drink wine.

हालाँकि उस किसान को बोबो की बातों पर विश्वास नहीं हुआ पर फिर भी उसने उस गड्ढे में उस होस्ट को ढूँढा तो होस्ट तो गड्ढे में ही था सो वह उसको मिल गया।

फिर उस किसान ने उस लड़की का ठीक से कम्यूनियन भी करवा दिया और वह ठीक हो गयी। वह किसान तो सोच ही नहीं सका कि बोबो ने जो कुछ भी उसके लिये किया वह बोबो को इसके बदले में क्या दे।

पर बोबो को तो उससे कुछ चाहिये नहीं था सो वह उसको गुड बाई कह कर आगे चल दिया।



एक दिन जब दिन बहुत गरम हो रहा था तो बोबो को दो नौजवान मिले जो एक चेस्टनट के पेड़³⁰ के नीचे लेटे आराम कर रहे थे। उसने उनसे पूछा कि क्या वह भी वहाँ लेट सकता है। उन्होंने हाँ कर दी तो वह भी वहीं पैर फैला कर लेट गया।

उसने उनसे पूछा — “तुम लोग कहाँ जा रहे हो?”

“हम लोग रोम जा रहे हैं। क्या तुमको नहीं पता कि पहला पोप³¹ मर गया है और अब नया पोप चुना जाने वाला है?”

³⁰ Chestnut is a kind of very dark brown color nut which is normally eaten after roasting on coal fire and then peeling it. It is very common in Italy but it is found in other places too. Hawkers sell them there as people sell hot roasted corn ears on streets in India – see the picture of its tree above.

³¹ Pope is the Head of the Catholic Church, lives in Vatican City (a city country) where he has his everything – currency, army, administration etc, and he is the King of that city state.

तभी उनके सिरों के ऊपर उस चेस्टनट के पेड़ के ऊपर चिड़ियों का एक झुंड आ कर बैठ गया तो बोबो बोला — “ये चिड़ियें भी रोम जा रही हैं।”

उन दोनों नौजवानों ने पूछा — “तुमको कैसे मालूम?”

“मुझे इन चिड़ियों की भाषा आती है।” उसने उनको और ध्यान से सुना और बोला — “ज़रा सोचो तो कि वे और क्या कह रही हैं।”

“क्या कह रही हैं?”

“वे कह रही हैं कि हममें से एक को पोप चुन लिया जायेगा।”

उन दिनों पोप का चुनाव इस तरह से होता था कि एक फाख्ता को सेन्ट पीटर्स स्क्वायर³² के ऊपर उड़ा दिया जाता था जहाँ बहुत सारी भीड़ इकट्ठी रहती थी और वह फाख्ता जिस किसी के सिर पर भी जा कर बैठ जाती थी वही पोप होता था।

सो वे तीनों रोम चल दिये और जा कर सेन्ट पीटर्स स्क्वायर में भीड़ के साथ खड़े हो गये। फाख्ता को छोड़ दिया गया और वह फाख्ता चारों तरफ घूम कर बोबो के सिर पर आ बैठी।

खुशी की तालियों और प्रार्थनाओं के बीच बोबो को ऊपर उठा लिया गया और पोप के कपड़े पहना कर उसके सिंहासन के ऊपर बिठा दिया गया।

³² St Peter's Square – a part of Vatican City where Pope lectures and shows himself to the public. See its picture in the end of this folktale.

फिर बोबो भीड़ को आशीर्वाद देने के लिये उठा तो भीड़ के शोर के बीच में से एक चीख उठी। भीड़ में एक बूढ़ा बेहोश हो कर गिर पड़ा था। वह बूढ़ा एक मरे हुए के बराबर सा पड़ा था।

नया पोप उसकी तरफ दौड़ा तो उसने उसको पहचान लिया। वह तो उसका अपना पिता था। वह बूढ़ा तो अपने आपको नफरत से देख रहा था और अपने बेटे की बाँहों में मरने से पहले उससे माफी माँगना चाहता था।

बोबो ने उसे माफ कर दिया। बोबो बाद में चर्च का एक बहुत ही अच्छा पोप साबित हुआ।



7 साँप की भेंट जानवरों की भाषा³³

जानवरों की भाषा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये यूरोप महाद्वीप के सर्बिया देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि एक जगह एक गड़रिया³⁴ रहता था जो अपने मालिक की बड़ी वफादारी और ईमानदारी से सेवा करता था।

एक बार जब वह जंगल में भेड़ चरा रहा था तो उसने हिस्सस्स की आवाज सुनी। इसने सोचा कि यह आवाज किसकी हो सकती थी सो वह इस बात को पता करने के लिये जंगल में कुछ दूर और आगे चला गया।

उसने देखा कि जंगल में तो आग लगी है और एक साँप उस आग में घिरा हुआ चिल्ला रहा है। गड़रिये ने कुछ देर रुक कर देखा कि वह साँप अब क्या करेगा क्योंकि वह साँप आग में काफी घिरा हुआ था और आग उसके पास और और पास आती जा रही थी।

गड़रिये को देख कर साँप चिल्लाया — “ओ भले गड़रिये। मेहरबानी कर के मुझे इस आग से बचाओ।”

³³ Snake's Gift: animal's language (Tale No 3) - a folktale from Serbia, Europe.

From the book : "Serbian Folk-Lore: popular tales", by Madam. 1874.

Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

³⁴ Translated for the word "Shepherd"

सो गड़रिये ने अपना हुक आग में फेंका तो साँप जल्दी से उससे लिपट गया और उसके कन्धे पर आ गया। फिर वह उसकी गरदन के चारों तरफ लिपट गया।

यह देख कर तो गड़रिये की जान ही निकल गयी। उसके मुँह से निकला — “ओह अब मैं क्या करूँ। मैं भी कितना बेवकूफ हूँ। मैंने तो तुम्हें बचाया और तुम मुझको मारे डाल रहे हो।”

साँप बोला — “तुम डरो नहीं। तुम बस मुझको मेरे पिता के घर ले चलो। मेरे पिता साँपों के राजा हैं।”

पर गड़रिया तो पहले से ही बहुत डरा हुआ था सो उसने वहाँ न जाने के बहाने बनाने शुरू कर दिये कि वह अपने मालिक की भेड़ें वहाँ इस तरह से छोड़ कर नहीं जा सकता।

इस पर साँप बोला — “तुम मुझे मेरे घर छोड़ आओ तुम्हारी भेड़ों को कुछ नहीं होगा। तुम उनकी चिन्ता मत करो। बस तुम मुझे जल्दी से मेरे घर छोड़ आओ।”

अब गड़रिये के पास उसको उसके घर छोड़ने जाने के अलावा और कोई चारा नहीं था सो वह उसको ले कर जंगल से हो कर उसके घर चल दिया जब तक कि वे एक दरवाजे के पास नहीं आ गये। वह दरवाजा पूरा का पूरा साँपों का बना हुआ था।

उसको देख कर गड़रिये के गले में पड़े हुए साँप ने हिस्सस्सस्स की आवाज की जिससे दरवाजे पर बने हुए साँप खुल गये ताकि वह गड़रिया उसके अन्दर जा सके।

जैसे ही वे दरवाजे के अन्दर गये तो साँप ने गड़रिये से कहा — “जब तुम मेरे पिता के घर पहुँचोगे तो मेरे पिता तुमको कुछ भी देने के लिये कहेंगे – सोना चाँदी जवाहरात आदि।

पर तुम इनमें से कोई भी चीज़ मत लेना बल्कि उनसे तुम जानवरों की भाषा माँग लेना। पहले तो वह उसे तुम्हें देने से हिचकिचायेंगे पर आखीर में वह तुमको वह दे ही देंगे।”

यह बात करते करते वे साँपों के राजा के महल में आ गये। अपने बच्चे को देखते ही साँपों के राजा ने रोते हुए कहा — “मेरे बच्चे तुम कहाँ थे।”

इस पर साँप ने उनको सारी कहानी सुना दी कि किस तरह वह आग में घिर गया था और किस तरह इस गड़रिये ने उसकी जान बचायी। साँपों के राजा ने गड़रिये से कहा — “तुम्हारी क्या इच्छा है जो मैं तुम्हें अपने बेटे की ज़िन्दगी बचाने के लिये पूरी करूँ।”

गड़रिया बोला — “मुझे कुछ नहीं चाहिये बस जानवरों की भाषा चाहिये।”

साँपों का राजा बोला — “यह तुम्हारे लिये ठीक नहीं है क्योंकि मैं यह अगर तुम्हें दे दूँ और तुम अगर इसे किसी से कह दोगे तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे। इसलिये तुम्हारे लिये यही अच्छा होगा कि तुम कुछ और माँग लो।”

पर गड़रिया फिर वही बोला — “अगर आप मुझे कुछ देना ही चाहते हैं तो मुझे जानवरों की भाषा दे दीजिये। अगर आप मुझे वह नहीं देना चाहते तो फिर मुझे आपसे कुछ नहीं चाहिये। नमस्ते।”

यह कह कर वह वहाँ से चल दिया। यह देख कर साँपों के राजा ने उसको बुलाया और कहा — “अगर तुम सचमुच में उसी को लेना चाहते हो तो लो। अपना मुँह खोलो।”

गड़रिये ने अपना मुँह खोल दिया तो साँपों के राजा ने उसके मुँह में एक फूँक मारी और उससे कहा कि वह भी अपने मुँह से एक फूँक उसके मुँह में मारे। सो गड़रिये ने भी उसके मुँह में एक फूँक मारी। ऐसा उन्होंने तीन बार किया।

इसके बाद साँपों के राजा ने उससे कहा — “अब तुमको जानवरों की भाषा मिल गयी है। जाओ और भगवान के लिये दुनियाँ में किसी को यह बात बताना नहीं। क्योंकि अगर तुमने यह बात किसी को भी बतायी तो तुम तुरन्त ही मर जाओगे।”

गड़रिया वहाँ से जंगल वापस चला आया। जब वह जंगल में से हो कर आ रहा था तो वह सब जानवरों और चिड़ियों की बोली समझ पा रहा था। यहाँ तक कि पेड़ पौधे भी आपस में जो बात कर रहे थे वह भी वह समझ रहा था।

जब वह अपनी भेड़ों के पास आया तो उसने अपनी सब भेड़ों को सुरक्षित पाया सो वह आराम करने के लिये कुछ देर के लिये



लेट गया। जैसे ही वह वहाँ लेटा तो उसके पास वाले पेड़ पर दो तीन रैवन³⁵ आ कर बैठ गये।

वे आपस में बात कर रहे थे — “काश यह गड़रिया यह जानता कि जहाँ इसकी काली भेड़ लेटी हुई है वहाँ उसके नीचे जमीन के नीचे एक गड्ढा है जो सोने और चाँदी से भरा हुआ है।”

अब गड़रिया क्योंकि जानवरों की भाषा समझता था सो उसने उनकी बातें समझ लीं। वह उठा और जा कर उसने यह बात अपने मालिक को बतायी तो मालिक ने अपनी गाड़ी उठायी और जा कर वहीं गड्ढा खोदा तो वहाँ तो सच में ही बहुत सारा सोना चाँदी पाया। उसने वह सारा खजाना निकाला और उसको ले कर घर चला गया।

पर उस गड़रिये का मालिक बहुत ही ईमानदार आदमी था। उसने उसमें से एक पैसा भी अपने लिये नहीं रखा। उसने सारा खजाना गड़रिये को यह कह कर दे दिया — “लो मेरे बेटे। यह सारा खजाना तुम्हारा है क्योंकि भगवान ने यह तुम्हें दिया है। इससे तुम अपने लिये एक मकान बनवाओ शादी करो और इस खजाने की सहायता से अपनी ज़िन्दगी गुजारो।”

सो गड़रिये ने वह खजाना लिया अपने लिये एक मकान बनवाया शादी की और उस शहर का सबसे ज़्यादा अमीर आदमी बन गया। अब उसके पास अपनी भेड़ें हो गयीं अपने गड़रिये हो

³⁵ Raven is a crow-like bird. It has its own importance all over the world.

गये। थोड़े में कहो तो उसके पास बहुत सारी सम्पत्ति हो गयी और उसने बहुत सारा पैसा बना लिया।

एक बार किसमस के मौके पर उसने अपनी पत्नी से कहा — “थोड़ी शराब और खाना तैयार रखो कल हम लोग अपने गड़रियों को दावत देंगे।”

उसकी पत्नी ने ऐसा ही किया। अगले दिन वे अपने खेत पर चले गये। शाम को मालिक ने अपने गड़रियों से कहा — “तुम सब लोग आज यहाँ आओ, खाओ पियो और आनन्द करो और आज की रात भेड़ों की देखभाल मैं करूँगा।”

सो मालिक तो भेड़ों की देखभाल करने चला गया और गड़रिये दावत खाने और पीने के लिये आ गये। करीब करीब आधी रात को भेड़ियों ने अपनी भाषा में चिल्लाना शुरू किया “क्या हम भी आ कर तुम्हारी दावत खा सकते हैं। तुमको भी शिकार का कुछ हिस्सा मिल जायेगा।”

यह सुन कर कुत्तों ने अपनी भाषा में उन्हें जवाब दिया — “हाँ हाँ क्यों नहीं। हम भी कुछ खाने के लिये तैयार हैं।”

पर उन कुत्तों में एक बूढ़ा कुत्ता भी था जिसके केवल दो दाँत रह गये थे। यह कुत्ता गुस्से से चिल्लाया — “ओ नीच। तुम ज़रा आ कर तो देखो। जब तक मेरे ये दो दाँत कायम हैं तुम मेरे मालिक की किसी चीज़ को कोई नुकसान नहीं पहुँचा सकते।”

मालिक उनकी ये सब बातें सुन भी रहा था और समझ भी रहा था सो अगले दिन उसने उस बूढ़े कुत्ते को छोड़ कर बाकी सब कुत्तों को मरवा दिया ।

उसके नौकरों ने उससे कहा भी कि यह ठीक नहीं है पर उसने उन सबको यह कह कर मना कर दिया कि उनसे जो कहा जाये वे लोग वही करें । और यह कह कर वह अपनी पत्नी के साथ अपने घर चला गया ।

मालिक अपने एक सुन्दर घोड़े पर सवार था और उसकी पत्नी एक सुन्दर घोड़ी पर सवार थी । पर मालिक का घोड़ा इतना तेज़ भाग रहा था कि उसकी पत्नी उससे पीछे रह गयी । तो मालिक के घोड़े ने पत्नी की घोड़ी से कहा — “जल्दी जल्दी आ न । तू इतनी पीछे क्यों रह गयी ।”

घोड़ी बोली — “तुम्हारे लिये तो यह बहुत आसान है क्योंकि तुम तो केवल एक ही आदमी का बोझा ढो रहे हो पर मैं तो तीन आदमियों का बोझा उठा रही हूँ ।”

यह सुन कर मालिक ने पीछे देखा और हँस दिया । पत्नी ने उसको हँसते देखा और घोड़ी को मारा ताकि वह थोड़ा जल्दी जल्दी चले और वह अपने पति के पास पहुँच जाये । जब वह अपने पति के पास आ गयी तो उसने उससे पूछा कि वह क्यों हँस रहा था ।

पति ने कहा कि वह ऐसे ही किसी वजह से हँस रहा था पर पत्नी तो इस जवाब से सन्तुष्ट होने वाली थी नहीं सो उसने उससे फिर पूछा कि वह क्यों हँस रहा था।

इस पर वह बोला — “मुझसे सवाल पूछना बन्द करो। तुमने क्या सोचा कि मैं क्यों हँस रहा था। मैं तो भूल ही गया कि मैं क्यों हँसा था।”

आखिर में मालिक ने कहा — “अगर मैंने तुम्हें यह बता दिया कि मैं क्यों हँसा था तो मैं तुरन्त ही मर जाऊँगा।”

पर यह जवाब भी उसको शान्त नहीं कर सका। वह उससे पूछती ही रही — “तुम मुझे बताओ न।”

इस बीच वे घर पहुँच गये। घर पहुँचने पर उस आदमी ने एक ताबूत बनाने के लिये कहा और जब वह तैयार हो गया तो उसको अपने घर के सामने रखने के लिये कहा। फिर वह उसके अन्दर लेट गया।

उसमें लेट कर उसने अपनी पत्नी से कहा — “अब मैं तुम्हें बताता हूँ कि मैं क्यों हँसा था। क्योंकि जैसे ही मैंने तुम्हें यह बताया कि मैं क्यों हँसा था मैं मर जाऊँगा।”

कह कर एक बार उसने अपने चारों तरफ देखा तो उसने देखा कि उसका बूढ़ा कुत्ता जिसे उसने मारने से छोड़ दिया था खेत पर से दौड़ा चला आ रहा है। वह उसके सिर की तरफ आ कर खड़ा हो गया और भौंकने लगा।

जब आदमी ने यह देखा तो अपनी पत्नी से कहा — “इस बेचारे कुत्ते के लिये कुछ रोटी ला दो।” पत्नी ने उसके लिये रोटी ला दी और उसकी तरफ फेंक दी पर उसने रोटी की तरफ आँख उठा कर भी नहीं देखा।

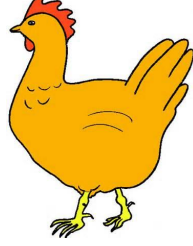
इतने में एक मुर्गा आया और उस रोटी में अपनी चोंच मारने लगा। कुत्ता मुर्गे से बोला — “तुम तो केवल खाने के बारे में ही सोचते हो। क्या तुमको पता है कि हमारा मालिक मरने वाला है।”

मुर्गा बोला — “मरने दो उसको क्योंकि वह तो है ही बेवकूफ। मेरी सौ पत्नियाँ हैं। अक्सर रात को मैं उन सबको मक्का के एक दाने के चारों तरफ इकट्ठा कर लेता हूँ और जब वे सब वहाँ मौजूद होती हैं तो मैं उस दाने को उठा कर खा जाता हूँ।

अगर उनमें से कोई भी गुस्सा होता है तो मैं उसको अपनी चोंच मार मार कर काबू में कर लेता हूँ। इस तरह से मैं उन सबको शान्त रखता हूँ। जबकि तुम हमारे मालिक को देखो उसके पास तो केवल एक पत्नी है और वह उसको भी काबू में नहीं रख पाता।”

यह सुन कर आदमी की आँखें खुल गयीं। वह ताबूत में से उठ कर खड़ा हो गया। उसने एक डंडा उठाया और अपनी पत्नी को अपने पास बुलाया और उससे कहा — “इधर आओ। अब बताता हूँ मैं तुमको जो तुम जानना चाहती हो।”

जब पत्नी ने यह देखा तो उसको लगा कि उसको पीटे जाने का खतरा है तो उसने उससे पूछना छोड़ दिया और फिर कभी उससे यह नहीं पूछा कि वह क्यों हँसा था ।



8 मारो लेकिन सुनो भी³⁶

जानवरों की भाषा जानने की यह कहानी हमने तुम्हारे लिये एशिया महाद्वीप के भारत देश के बंगाल प्रान्त की लोक कथाओं से ली है। असल में इस कथा में दो कहानियाँ हैं जिसमें से यह एक कहानी जानवरों की भाषा जानने वाली कहानी है।

यह कथा इस पुस्तक में दी गयी पहली कथाओं से बिल्कुल अलग है। इसमें एक स्त्री के पास यह ताकत है कि वह जानवरों की भाषा समझती है।

हालाँकि इस कथा में यह नहीं बताया गया कि उसके पास यह ताकत कहाँ से आयी पर उसकी इस ताकत का किसी को पता नहीं है इसलिये गलतफहमी की वजह से वह बेचारी मारी जाती है न कि इसलिये कि उसको यह बात किसी को बताने के लिये मना कर रखा है।

एक बार की बात है कि किसी देश में एक राजा राज करता था। उसके तीन बेटे थे।

एक दिन उसकी जनता उसके पास आयी और बोली — “हे न्याय के अवतार, राज्य में चोर और डाकू बहुत हो गये हैं। हम

³⁶ Strike But Hear (Tale No 10) – a folktale from India, Asia. Taken from the Web Site :

https://en.wikisource.org/wiki/Folk-tales_of_Bengal/Strike_but_Hear

Adapted from the book: “Folk-tales of Bengal”, by Lal Behari Dey. 1912. 1st ed 1883. Hindi translation of this book is published by NBT, Delhi, 2020.

लोगों के घर भी अब सुरक्षित नहीं रह गये हैं। हम योर मैजेस्टी से यह प्रार्थना करने आये हैं कि इनको पकड़ा जाये और सजा दी जाये।”

राजा ने अपने तीनों बेटों को बुलाया और कहा — “बच्चों, देखो मैं तो अब बूढ़ा हो गया हूँ पर तुम तो अपनी जवानी में अभी अपने कदम ही रख रहे हो। ऐसा कैसे हो रहा है कि हमारे राज्य में इतने सारे चोर डाकू हैं। तुम लोग जाओ और उनको पकड़ो।”

यह सुन कर तीनों बेटों ने सोचा कि वे हर रात शहर में घूमेंगे और चोर डाकूओं को पकड़ने की कोशिश करेंगे। ऐसा सोच कर उन्होंने शहर के बाहर अपने लिये एक ठहरने के लिये जगह बना ली और वहाँ उन्होंने अपने घोड़े भी रख लिये।

रात के शुरू के हिस्से में सबसे बड़े बेटे ने अपना घोड़ा उठाया और सारे शहर का चक्कर लगा आया पर उसको कहीं कोई चोर या डाकू दिखायी नहीं दिया।

आधी रात को बीच वाले बेटे ने अपना घोड़ा उठाया और वह भी सारे शहर का चक्कर लगा आया पर उसको भी कहीं कोई चोर या डाकू दिखायी नहीं दिया। वह भी ऐसे ही अपने ठहरने की जगह वापस आ गया।

आधी रात के कुछ घंटों बाद सबसे छोटा बेटा उठा। उसने भी अपना घोड़ा लिया और वह भी शहर का चक्कर लगाने चल दिया।

जब वह अपने पिता के महल के दरवाजे के पास आया तो उसने महल में से एक बहुत सुन्दर स्त्री को बाहर निकलते देखा।

राजकुमार उस स्त्री की तरफ बढ़ा और उससे पूछा — “तुम कौन हो और इस समय रात को कहाँ जा रही हो?”

उस स्त्री ने जवाब दिया — “मैं राजलक्ष्मी हूँ। मैं इस महल की देखभाल करने वाली देवी हूँ। आज की रात राजा मारा जायेगा अब मेरी यहाँ कोई जरूरत नहीं है इसलिये मैं यहाँ से जा रही हूँ।”

राजकुमार समझा नहीं कि वह स्त्री क्या कह रही थी और उसके कहे का वह क्या मतलब समझे।

पर एक पल सोचने के बाद ही वह उस देवी से बोला — “पर मान लो कि राजा अगर आज की रात नहीं मारा जाता तो क्या तुम्हें इसमें कोई ऐतराज है कि तुम फिर राज्य में लौट जाओगी और फिर वहीं रहोगी?”

देवी बोली — “नहीं। मुझे इसमें कोई ऐतराज नहीं है। अगर राजा ज़िन्दा रहेगा तो मैं राज्य में ही रहूँगी।”

तब राजकुमार ने देवी से प्रार्थना की कि अभी वह महल के अन्दर जाये और वहीं रहे। वह अपनी पूरी कोशिश करेगा कि राजा आज की रात न मरे। सो वह देवी महल के अन्दर चली गयी और राजकुमार को पता भी नहीं चला कि वह पल भर में ही किधर चली गयी।

राजकुमार वहाँ से सीधा अपने पिता के सोने के कमरे में गया। वहाँ जा कर उसने देखा कि उसका पिता तो गहरी नींद में सोया हुआ है। राजा की दूसरी पत्नी यानी राजकुमार की सौतेली माँ भी उसी कमरे में एक दूसरे पलंग पर सोयी हुई थी। कमरे में एक बहुत हल्की सी रोशनी जल रही थी।

उस हल्की सी रोशनी में राजकुमार ने देखा कि एक कोबरा साँप राजा के सोने के पलंग के चारों तरफ घूम रहा है। यह देख कर उसको बहुत आश्चर्य हुआ। उसने तुरन्त ही अपनी तलवार निकाली और उस साँप के दो टुकड़े कर दिये।

लेकिन साँप के दो टुकड़े कर के भी जब राजकुमार सन्तुष्ट नहीं हुआ सो उसने उनके भी सैंकड़ों टुकड़े कर दिये और उन टुकड़ों को पान रखने की थाली में रख दिया जो वहीं कमरे में रखी हुई थी।

जब राजकुमार साँप को काट रहा था तो उस साँप के खून की एक बूँद उसकी सौतेली माँ के सीने पर गिर पड़ी जो वहीं पास में सो रही थी। राजकुमार सोचने लगा कि अब वह क्या करे। उसने सोचा कि मैंने अपने पिता को तो बचा लिया पर माँ को मार दिया। यह तो ठीक नहीं है।

यह सोच कर उसने अपनी जीभ पर सात तह कर के एक कपड़ा लगाया और साँप का खून चाट लिया। पर जब वह खून चाट रहा था तो उसकी सौतेली माँ जाग गयी और उसने देखा कि उसका सौतेला बेटा उसके ऊपर झुका हुआ है - उसका सबसे छोटा

सौतेला बेटा। राजकुमार यह देख कर कमरे में से बाहर भाग लिया।

रानी उस राजकुमार से बहुत नफरत करती थी सो उसने यह सब देख कर यह सोचा कि अब तो वह राजकुमार को मरवा कर के ही रहेगी चाहे कुछ हो जाये।

उसने राजा को जगाया — “क्या आप जागे हुए हैं? ज़रा उठिये तो। यहाँ आपके लिये एक बहुत ही अच्छा काम है।”

राजा उठा तो रानी से उसने पूछा कि क्या बात है।

रानी बोली — “क्या बात है? आपका लायक बेटा, सबसे छोटा राजकुमार, जिसके बारे में आप इतना अच्छा बोलते हैं वह अभी अभी यहीं था। मैंने उसको अपने सीने पर झुका हुआ देखा।

मुझे पूरा विश्वास है कि वह यहाँ किसी बुरे इरादे से आया था। क्या यही आपका लायक बेटा है? क्या लायक बेटे ऐसे ही होते हैं?”

राजा तो यह सुन कर दंग रह गया। राजकुमार तुरन्त ही जंगल में वहीं चला गया जहाँ वह अपने दोनों भाइयों के साथ ठहरा हुआ था। मगर उसने वहाँ जा कर उनसे कुछ कहा नहीं।

अगले दिन राजा ने अपने सबसे बड़े बेटे को बुलाया और उससे कहा — “अगर किसी आदमी में मैं अपनी ज़िन्दगी और अपनी

इज्जत रख देता हूँ और फिर वह आदमी मेरा विश्वास तोड़ देता है तो उसकी क्या सजा होनी चाहिये?”

राजकुमार बोला — “बेशक उसका सिर तो उसके धड़ से अलग कर देना चाहिये। पर इससे पहले कि आप उसे मारें आपको पक्के तरीके से यह देख लेना चाहिये कि उसने वाकई में आपका विश्वास तोड़ा है कि नहीं।”

राजा ने पूछा — “तुम कहना क्या चाहते हो?”

राजकुमार बोला — “योर मैजेस्टी इसके लिये आप यह कहानी सुनें।

एक बार की बात है कि एक सुनार था जिसका एक बेटा था जो बड़ा था। उसके एक पत्नी भी थी। उसकी इस पत्नी के पास एक अजीब ताकत थी कि वह जंगली जानवरों की भाषा समझती थी। पर यह बात न तो उसको पति को और न ही किसी और को पता थी कि उसके पास यह ताकत थी।

उनका घर एक नदी के पास था। एक रात जब वह अपने घर में अपने बिस्तर में लेटी हुई थी तो उसने एक गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुनी जो यह कह रही थी — “एक लाश नदी के ऊपर तैरी जा रही है। क्या कोई ऐसा है जो उसकी उँगली से हीरे की अँगूठी निकाल कर मुझे वह लाश खाने के लिये देगा?”

उसकी पत्नी ने गीदड़ की भाषा समझ ली। वह तुरन्त अपने बिस्तर से उठी और नदी की तरफ चल दी।

उसका पति अभी सोया नहीं था सो वह भी उसके पीछे पीछे कुछ दूरी रख कर चल दिया ताकि वह अपनी पत्नी से छिप कर यह जान सके कि वह इस समय घर से बाहर कहाँ जा रही थी क्यों जा रही थी और क्या करने जा रही थी।

उसने देखा कि वह नदी की तरफ चली जा रही थी। नदी के पास जा कर उसकी पत्नी पानी में चली गयी। वहाँ उसको एक तैरती हुई लाश मिल गयी तो वह उसको खींच कर नदी के किनारे ले आयी।

उसकी पत्नी ने देखा कि उसकी एक उँगली में तो वाकई एक हीरे की अँगूठी थी।

उसने उसे निकालने की कोशिश की पर क्योंकि लाश पानी में पड़े पड़े फूल गयी थी और उसकी उँगली मोटी हो गयी थी सो वह उसकी उँगली में से वह अँगूठी निकाल नहीं सकी।

उसने अपने दाँत से उसकी उँगली काटी उसकी अँगूठी निकाली और लाश को किनारे पर ही छोड़ कर घर आ गयी। वहाँ से आ कर वह अपने बिस्तर पर लेट गयी और सो गयी। उसका पति वहाँ उससे पहले ही आ गया था और लेटा हुआ था।

यह सब देख कर वह बेटा सुनार डर के मारे जमा हुआ सा पड़ा था। उसने यह देख कर यह सोच लिया था कि उसकी पत्नी कोई आदमी नहीं थी बल्कि कोई राक्षसी थी। वह सारी रात यही सोचता

रहा और सो नहीं सका। वह सारी रात उसने करवटें बदल बदल कर ही काटी।

अगले दिन सुबह वह जल्दी ही उठा और सारा किस्सा अपने पिता को इस तरह बताया — “पिता जी जिस स्त्री से आपने मेरी शादी की है वह मुझे लगता है कि असली औरत नहीं है बल्कि राक्षसी है।

कल रात जब मैं सो रहा था तो मैंने घर के बाहर नदी के किनारे एक गीदड़ की आवाज सुनी। यह सोचते हुए कि मैं सो रहा था वह बिस्तर से उठी और घर का दरवाजा खोल कर नदी के किनारे चली गयी।

मैं तो आश्चर्यचकित रह गया कि वह इतनी रात में अकेली वह जा कहाँ रही है सो मैंने उसका पीछा किया और ऐसे किया कि वह मुझे न देख सके। क्या आप सोच सकते हैं पिता जी कि उसने वहाँ जा कर क्या किया? उफ़ बहुत ही भयानक काम किया पिता जी वहाँ उसने आप तो सोच ही नहीं सकते।

वह नदी में चली गयी वहाँ से एक लाश किनारे पर खींच लायी जो वहीं पास में ही तैर रही थी। उसने उसे खाना शुरू कर दिया। यह तो मैंने अपनी आँखों से देखा।

जब वह उसे खा रही थी तो मैं उसे और नहीं देख सका और घर लौट आया और आ कर बिस्तर में लेट गया। कुछ मिनट बाद

वह भी लौट आयी। पिता जी मैं ऐसी राक्षसी के साथ कैसे रह सकता हूँ? एक रात वह मुझे भी मार देगी और खा जायेगी।”

पिता सुनार तो यह सुन कर सकते में आ गया। पर फिर पिता और बेटे दोनों ने मिल कर यह तय किया कि उस स्त्री को जंगल ले कर जाया जाये और उसको वहाँ जंगली जानवरों को खाने के लिये छोड़ आया जाये।

सो बेटे सुनार ने अपनी पत्नी से कहा — “तुम आज की सुबह कुछ ज़्यादा खाना मत बनाना। बस केवल थोड़े से चावल उबाल लेना और एक बैंगन भून लेना। आज मैं तुमको तुम्हारे माता पिता से मिलाने ले जाऊँगा। तुमको उनसे मिले हुए बहुत दिन हो गये हैं वे तुम्हें देखने के लिये बहुत तरस रहे हैं।”

अपने पिता के घर का नाम सुन कर उसकी पत्नी बहुत खुश हो गयी और उसने अपना खाना भी बहुत जल्दी बना लिया। पति पत्नी ने जल्दी से नाश्ता किया और दोनों पत्नी के माता पिता के घर की तरफ चल पड़े।

रास्ते में एक बहुत घना जंगल पड़ता था। बेटे सुनार ने अपनी पत्नी को उसी जंगल में छोड़ देने का विचार बना रखा था। पर जब वे उस घने जंगल से हो कर जा रहे थे तो उसकी पत्नी ने एक साँप की फुंकार सुनी।

अब जैसा कि उसने उस फुंकार से समझा वह साँप कह रहा था “ओ जाने वाले मैं तुम्हारा बहुत बहुत ऋणी रहूँगा अगर तुम वह

टर्ता हुआ मेंढक पकड़ लो जो तुम्हारे पास वाले गड्ढे में पड़ा है। उस गड्ढे के अन्दर सोना और जवाहरात भरे हुए हैं। वह सोना और जवाहरात तुम ले लो और मेंढक मुझे खाने के लिये दे दो।”

सो वह स्त्री उस मेंढक के गड्ढे की तरफ चली गयी और वहाँ जा कर एक डंडी से उस छेद को और खोदने लगी। वह नौजवान बेटा सुनार यह देख कर बहुत डर गया कि बस अब उसकी राक्षसी पत्नी उसको मार कर खा जायेगी।

पर उसके आश्चर्य का ठिकाना न रहा जब उसने अपने पति को पुकार कर कहा — “लीजिये ज़रा यह सोना और जवाहरात तो सँभालिये।”

बेटा सुनार अपने ख्यालों में इतना डूबा हुआ था कि पहले तो उसकी समझ में ही नहीं आया कि उसकी पत्नी कह क्या रही थी सो वह सकुचाता हुआ उस जगह की तरफ गया जहाँ उसकी पत्नी बैठी थी पर फिर यह देख कर आश्चर्य से भर गया कि वहाँ तो बहुत सारा सोना और जवाहरात थे।

उन्होंने जितना सोना और जवाहरात उनसे उठाये जा सकते थे उठा लिये। इसके बाद पति ने पत्नी से पूछा कि उसको यह कैसे पता चला कि वहाँ सोना और जवाहरात थे।

तो पत्नी ने उसको बताया कि उसको जानवरों की भाषा आती थी। साँप जो वहाँ पास में ही कुंडली मार कर बैठा हुआ था उसने ही उसको बताया।

यह सुन कर सुनार तो बहुत खुश हो गया कि उसको कितनी गुणवान पत्नी मिली है।

वह बोला — “प्रिये अब बहुत देर हो चुकी है। अब शाम से पहले तुम्हारे माता पिता के घर पहुँचना नामुमकिन है और फिर इस घने जंगल में जंगली जानवर हमको खा भी सकते हैं इसलिये अभी हम लोग घर वापस चलते हैं वहाँ फिर कभी चलेंगे।”

उन लोगों को घर वापस आने में काफी समय लग गया क्योंकि उन दोनों के पास सोना और जवाहरात बहुत सारे थे।

जब वे घर के पास आ गये तो बेटा सुनार बोला — “तुम पीछे के दरवाजे से आओ और मैं सामने के दरवाजे से चलता हूँ। मैं ज़रा दूकान में अपने पिता जी से मिलता हुआ और उनको यह सोना और जवाहरात दिखाता हुआ आता हूँ।”

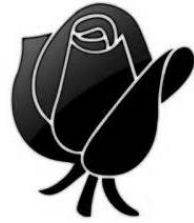
सो सुनार की पत्नी घर के पिछले दरवाजे से घर के अन्दर घुसी और बेटा सुनार घर के बाहर के दरवाजे की तरफ चला गया।

जैसे ही वह घर में घुसी तो उसको उसका ससुर मिल गया। वह उस समय किसी काम से घर आ रहा था उसके हाथ में हथौड़ा था। पिता सुनार ने जब अपनी राक्षसी बहू को देखा तो उसने सोचा कि वह उसके बेटे को मार कर खा कर अब मुझे खाने के लिये घर आ गयी है।

उसने तुरन्त ही अपना हथौड़ा उसके सिर पर दे मारा जिससे वह तुरन्त ही मर गयी। उसी समय बेटा सुनार भी आ गया। वह अपने

पिता को अपने लाये हीरे जवाहरात दिखाता और अपनी पत्नी के बारे में कुछ बताता पर अब उसके लिये तो बहुत देर हो चुकी थी।

इसी लिये पिता जी मैं आपसे कहता हूँ कि आप जब भी किसी का गला काटें उससे पहले यह पक्का कर लें कि उस आदमी ने वाकई ऐसा जुर्म किया है या नहीं जिसकी वजह से आपको उसका गला काटना ही है। कहीं ऐसा न हो कि बाद में आपको पछताना पड़े।”



9 चिड़ियों की भाषा-1³⁷

जानवरों की भाषा की यह लोक कथा हमने तुम्हारे लिये एशिया के रूस देश की लोक कथाओं से ली है।

एक बार की बात है कि पवित्र रूस के किसी शहर में एक बहुत ही अमीर सौदागर अपनी पत्नी के साथ रहता था। उसके एक अकेला बेटा था जो बहुत ही प्यारा होनहार और बहादुर था। उसका नाम था इवान।

एक दिन इवान अपने माता पिता के साथ खाने की मेज पर बैठा हुआ था। उसी कमरे में खिड़की के पास एक पिंजरा टंगा हुआ था जिसमें एक मैना और एक मीठा बोलने वाली भूरे रंग की चिड़िया बन्द थीं।

मैना ने अपनी ऊँची आवाज में अपना मीठा गाना गाना शुरू किया। सौदागर ने उसका गाना सुना और सुना और सुन कर बोला — “काश मैं सब चिड़ियों के गानों के मतलब समझ सकता। तो मैं उस आदमी को अपनी आधा पैसा दे देता अगर कहीं कोई ऐसा आदमी होता तो जो मुझे सारी चिड़ियों के सारे गानों के मतलब समझा देता।”

³⁷ The Language of the Birds – a folktale from Russia, Asia. Taken from the Web Site :

http://www.sacred-texts.com/neu/fttr/chap03.htm#page_66

From the Book “Folk Tales from the Russian”, by Verra Xenofontovna Kalamatiano de Blumenthal. 1903. Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com

इवान ने अपने पिता के ये शब्द अपने दिमाग में रख लिये और इस बात से उसे कोई मतलब नहीं वह कहाँ गया, कोई मतलब नहीं वह कहाँ था, कोई मतलब नहीं उसने क्या किया वह हमेशा यही सोचता रहा कि वह किस तरह से चिड़ियों की भाषा सीख सकता था

कुछ समय बाद की बात है कि एक दिन इवान एक जंगल में शिकार खेलने के लिये गया कि तेज़ हवा बह निकली बादल आसमान पर छा गये बिजली चमकने लगी बादल गरजने लगे और बहुत ज़ोर से बारिश होने लगी।

इस तूफान से बचने के लिये इवान एक बड़े पेड़ के नीचे आ गया। वहाँ उसने उस पेड़ की शाखाओं में एक घोंसला देखा। उस घोंसले में चार छोटी छोटी चिड़ियाँ बैठी थीं। वे वहाँ अकेली ही थीं क्योंकि वहाँ उनके माता पिता कहीं दिखायी नहीं दे रहे थे। वहाँ कोई उनको ठंड और पानी से बचाने वाला भी नहीं था।

भले इवान को उन पर दया आ गयी। वह पेड़ पर चढ़ गया और अपने काफ्तान से उन बच्चों को ढक दिया। काफ्तान रूसी किसानों और सौदागरों के पहनने का एक लम्बा सा कोट होता है।

कुछ देर बाद तूफान थम गया तो एक बड़ी चिड़िया वहाँ उड़ती हुई आयी और घोंसले के पास की एक शाख पर बैठ गयी।

वह बड़े प्यार से इवान से बोली — “इवान तुम्हारा बहुत बहुत धन्यवाद कि तुमने ठंड और बारिश से मेरे छोटे छोटे बच्चों की रक्षा

की। इसके बदले में मैं तुम्हारे लिये कुछ करना चाहती हूँ। कहो तुम्हारी क्या इच्छा है।”

इवान बोला — “मुझे किसी चीज़ की कमी नहीं है। मेरी अपनी सुख सुविधा के लिये मेरे पास सब कुछ है पर तुम मुझे चिड़ियों की भाषा सिखा दो तो तुम्हारी बड़ी मेहरबानी होगी।”

वह चिड़िया बोली — “तुम मेरे साथ तीन दिन ठहरो तो तुम उसके बारे में सब जान जाओगे।”

इवान तीन दिन जंगल में रहा उसने उस बड़ी चिड़िया का सिखाया हुआ सब कुछ ठीक से सीख लिया। और इस तरह वह घर पहले से कहीं ज़्यादा होशियार हो कर लौटा।

एक दिन जब वह अपने माता पिता के साथ फिर से बैठा हुआ था तो मैना ने कुछ गाया। उसका गाना बहुत दुख का था इतने दुख का था कि उसका गाना सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी भी दुखी हो गये।

और उनका बेटे भले इवान पर जो उसका गाना बड़े ध्यान से सुन रहा था उस पर तो उसका और भी ज़्यादा असर पड़ा। उसके तो आँसू ही बहने लगे।

इवान के माता पिता ने इवान से पूछा — “प्यारे बेटे तुम क्यों रो रहे हो क्या बात है?”

रोते रोते इवान बोला — “ऐसा इसलिये है कि मैं इस मैना के गीत का मतलब समझता हूँ। इस गीत का मतलब हम सबके लिये दुख का है।”

उसके माता पिता ने कहा — “क्या मतलब है इसके गीत का बेटा? तुम हमको सब कुछ सच सच बताओ। कोई बात हमसे छिपाना नहीं।”

इवान बोला — “कितने दुख की बात है। कितना अच्छा होता कि मैं कभी पैदा ही न हुआ होता।”

माता पिता ने कहा — “बेटा अब तुम हमें और ज़्यादा डराओ नहीं। अगर तुम सचमुच में ही इस गीत का मतलब समझते हो तो हमको तुरन्त ही बतलाओ कि यह मैना क्या गा रही है।”

इवान बोला — “क्या आपको खुद पता नहीं चल रहा है कि यह मैना यह कह रही है कि वह समय आने वाला है जब सौदागर का बेटा इवान एक राजा का बेटा इवान बन जायेगा और उसका पिता उसके यहाँ एक सादा से नौकर की हैसियत से काम करेगा।”

सौदागर और उसकी पत्नी दोनों ही यह सुन कर परेशान हो गये और उन्होंने अपने भले बेटे इवान का विश्वास नहीं किया। पर फिर भी उनके मन में कहीं कुछ खटका लगा रहा।

सो एक दिन उन्होंने अपने बेटे को सुलाने वाला एक पेय पिला दिया और जब वह गहरी नींद सो गया तो वे उसको नाव में रख

कर समुद्र में ले गये। वहाँ ले जा कर उन्होंने नाव की पाल खोल दीं और उसको समुद्र में धकेल दिया।

काफी समय तक नाव समुद्र में बहती रही। आखीर में वह एक सौदागर के जहाज़ के पास आ गयी और उससे टकरा गयी। वह इतनी ज़ोर से टकरायी कि इवान की आँख खुल गयी।

उधर उस बड़े जहाज़ पर काम करने वालों ने भी इवान को देखा तो उन्हें उस पर दया आ गयी। उन्होंने उसको अपने साथ ले जाने का निश्चय किया सो उन्होंने उसको अपने जहाज़ पर चढ़ा लिया।

फिर उन्होंने आसमान में बहुत ऊँचे उड़ते हुए सारस देखे तो इवान उन लोगों से बोला — “सावधान रहना। ये सारस तूफान आने की भविष्यवाणी कर रहे हैं। हमको किसी बन्दरगाह पर चले जाना चाहिये वरना हम खतरे में पड़ जायेंगे और हमारे जहाज़ को बहुत नुकसान पहुँचेगा। हमारे पाल फट जायेंगे और मस्तूल टूट जायेंगे।”

पर इवान के कहने पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया और वे चलते रहे। कुछ ही देर में तूफान आ गया। हवा ने जहाज़ तोड़ दिया और उनको अपना जहाज़ मरम्मत करने में काफी मेहनत करनी पड़ी।

जब उन्होंने अपना काम खत्म कर लिया तब उन्होंने बहुत सारे जंगली हंस अपने ऊपर उड़ते हुए देखे और आपस में बात करते हुए सुने।

इस बार जहाज़ के लोगों ने बड़ी रुचि से इवान से पूछा कि वे जंगली हंस क्या कह रहे थे।

इवान ने कहा — “वे कह रहे हैं कि सावधान रहना। वे क्या कह रहे हैं यह मैं साफ तरीके से सुन सकता हूँ कि समुद्री डाकू पास ही हैं और अगर हम पास के किसी बन्दरगाह में जा कर शरण नहीं ले लेते तो वे हमें बन्दी बना लेंगे और फिर मार देंगे।”

इस बार जहाज़ के लोगों ने बिल्कुल भी देर नहीं की वे तुरन्त ही बन्दरगाह की तरफ मुड़ गये। जैसे ही वे बन्दरगाह में पहुँचे कि समुद्री डाकूओं की नावें उनके सामने से गुजर गयीं। उन्होंने उन डाकूओं को कई और नावों को पकड़ते हुए और लूटते हुए देखा।

जब समुद्री डाकूओं का खतरा टल गया तो जहाज़ के लोग इवान के साथ और आगे तक चलते चले गये। अन्त में उनके जहाज़ ने एक शहर में अपना लंगर डाला। यह शहर बड़ा था और सौदागरों के लिये अनजाना था।

इस शहर के राजा को तीन काले कौओं ने तंग कर रखा था। वह उनसे बहुत परेशान था। ये तीन कौए हमेशा ही राजा के महल की खिड़की पर बैठे रहते थे और कुछ कुछ बोलते रहते थे।

किसी को नहीं पता था कि उनको वहाँ से कैसे भगाया जाये और कोई उनको मार भी नहीं सकता था।

राजा ने अपने शहर हर चौराहे पर और हर मुख्य इमारत पर यह नोटिस लगवा दिया था कि जो भी कोई इन शोर मचाने वाली चिड़ियों को राजा के महल से हटाने में कामयाब होगा उसकी शादी राजा की सबसे छोटी कोरोलेवना³⁸ यानी बेटी से कर दी जायेगी।

और जो कोई इस काम को करने का साहस करेगा और महल से उनको हटाने में नाकामयाब रहेगा उसका सिर कटवा दिया जायेगा।

इवान ने यह नोटिस बड़े ध्यान से पढ़ा एक बार, दो बार, तीन बार...। आखीर में उसने कास का निशान बनाया और महल की तरफ चल दिया। वहाँ जा कर उसने नौकरों से कहा “खिड़की खोलो मैं ज़रा सुनना चाहता हूँ कि वे क्या बात करते हैं।”

नौकरों ने वैसा ही किया जैसा इवान ने उनसे करने के लिये कहा था। उन्होंने खिड़की खोल दी। वे कौए तभी भी वहीं बैठे हुए थे और शोर मचा रहे थे। इवान ने कुछ देर तक उनको सुना और फिर नौकरों से कहा कि वे उसको राजा के पास ले चलें।

नौकर उसको राजा के पास ले गये। जब वह राजा के कमरे में पहुँचा तो राजा अपनी राजगद्दी पर बैठा हुआ था। इवान ने उसको

³⁸ Korolevna – Princess, the daughter of a King

सिर झुकाया और कहा — “योर मैजेस्टी यहाँ तीन कौए बैठे हैं। एक पिता कौआ है एक माता कौवी है और एक बेटा कौआ है।

अब मुश्किल यह है कि वे इस बारे में आपका शाही हुक्म लेना चाहते हैं कि बेटे कौए को अपने पिता कौए की बात माननी चाहिये या माता कौवी की।”

राजा ने जवाब दिया कि बेटे कौए को तो अपने पिता कौए की ही बात माननी चाहिये।

जैसे ही राजा ने अपना यह शाही हुक्म सुनाया पिता कौआ और बेटा कौआ दोनों एक तरफ को उड़ गये। और माँ कौवी दूसरी तरफ को गायब हो गयी। उसके बाद से उन कौओं को फिर कभी किसी ने वहाँ नहीं देखा।

राजा ने इवान को अपना आधा राज्य दे दिया और सबसे छोटी कोरोलेवना ब्याह दी।

इधर इवान की माँ चल वसी और उसका पिता भी गरीब हो गया। अब उसके पिता की देखभाल करने वाला भी कोई नहीं रह गया था। अब वह बूढ़ा बेचारा सब जगह भीख मँग मँग कर गुजारा करता था। वह एक घर से दूसरे घर जाता एक गाँव से दूसरे गाँव जाता और एक शहर से दूसरे शहर जाता।

एक दिन वह उस शहर में आ निकला जिसमें इवान रहता था। वह महल के पास से भीख मँगता गुजर रहा था कि इवान ने उसे देख लिया। उसने उसको पहचान लिया और अन्दर आने का हुक्म

दिया। उसने उसको बहुत अच्छा खाना खिलाया और उसको पहनने के लिये अच्छे कपड़े दिये।

फिर उसने उससे पूछा — “मैं आपके लिये क्या कर सकता हूँ।”

गरीब पिता ने अपने बेटे को पहचाना नहीं और कहा — “अगर तुम इतने ही अच्छे हो तो तुम मुझे यहाँ रहने की जगह दे दो और अपने वफादार नौकरों के साथ मुझे भी अपना नौकर रख लो।”

तब इवान बोला — “मेरे प्यारे पिता जी, वह मैना उस समय जो गाना गा रही थी तो उस समय तो आपने उस पर शक किया और आज आप वही होता देख रहे हैं।”

यह सुन कर वह बूढ़ा डर गया और अपने बेटे के पैरों में पड़ गया। पर उसका बेटा इवान अभी भी पहले जैसा ही अच्छा बेटा रहा। उसने अपने पिता को अपनी बाँहों में ले कर अपने गले लगा लिया। दोनों अपने अपने दुखों पर कुछ देर तक रोते रहे।

पिता को वहाँ रहते रहते कई दिन हो गये तो एक दिन उसने हिम्मत कर के अपने बेटे को रोलेविच³⁹ से पूछा — “बेटा ज़रा बताओ तो कि ऐसा कैसे हुआ कि तुम उस नाव में मरे नहीं।”

³⁹ Korolevich – Prince

इवान कोरोलेविच बहुत ज़ोर से हँसा और बोला — “मुझे लगता है पिता जी कि वह मेरी किस्मत में था ही नहीं कि मैं उस नाव में मर जाऊँ।

मेरी किस्मत में तो यह था कि मैं अपनी सुन्दर पत्नी कोरोलेवना से शादी करूँ और अपने पिता का बुढ़ापा सुखी करूँ।



10 चिड़ियों की भाषा-2⁴⁰

यह कहानी इससे पहले वाली कहानी जैसी ही है पर इन दोनों कहानियों का स्रोत अलग अलग है। पढ़ो और देखो कि उसी कहानी का रूप कैसे बदलता है।

एक शहर में एक सौदागर अपनी पत्नी और बेटे के साथ रहता था। उसका बेटा अपनी उम्र से कहीं ज़्यादा होशियार था। उसका नाम था वासिली⁴¹।

एक दिन वे तीनों साथ बैठ कर खाना खा रहे थे। वहीं पास में मेज के ऊपर एक पिंजरे में एक बुलबुल गा रही थी। वह इतना दुखी हो कर गा रही थी कि सौदागर उसको और न सह सका।

वह बोला — “काश कोई आदमी ऐसा होता जो मुझे यह बता देता कि यह बुलबुल क्या गा रही है और क्या आफत आने वाली है तो मैं उससे मिलना चाहता उसको अपनी ज़िन्दगी की आधी कमाई दे देता। और अपने मरने के बाद भी उसको बहुत कुछ दे देता।”

तो उसका बेटे ने जो उस समय केवल छह साल का था अपनी माँ और पिता की आँखों में देखा और बोला — “मैं जानता हूँ कि यह बुलबुल क्या कह रही है। बस मैं उसको कहने से डरता हूँ।”

⁴⁰ The Language of the Birds. A folktale from Russia, Asia.

[My Note: The same story is given in my book “Roos Ki Lok Kathayen-2” also but that is from some other source.

⁴¹ Vasili – name of the son of the merchant

माँ और पिता ने कहा — “तुम हमको साफ साफ बताओ कि यह क्या कह रही है।”

वासिली की आँखों में आँसू आ गये। वह बोला — “यह बुलबुल एक ऐसे समय के आने की भविष्यवाणी कर रही है जब आप लोग मेरे नौकर बनेंगे। मेरे पिता मेरा पानी खींचेंगे और मेरी माँ मुझे मेरा मुँह और हाथ पोंछने के लिये तौलिया देगी।”

यह सुन कर सौदागर और उसकी पत्नी को बहुत गुस्सा आ गया। उन्होंने उस बच्चे को मारने का निश्चय किया। उन्होंने एक छोटी सी नाव बनायी और रात के अँधेरे में सोते हुए लड़के को उस नाव में रखा और उसे खुले समुद्र में बहा दिया।

उसी समय वह भविष्यवाणी करने वाली बुलबुल पिंजरा तोड़ कर उड़ गयी और जा कर वह नाव में उस लड़के के कन्धे पर बैठ गयी।

नाव समुद्र के किनारे लग गयी तो एक जहाज़ उससे मिलने के लिये उसके पास आया। जहाज़ के मालिक ने नाव में एक अकेले लड़के को सोते हुए देखा तो उसको उस पर दया आ गयी। वह उसको अपने साथ ले गया।

घर ले जा कर उससे बहुत सारे सवाल पूछे फिर उससे वायदा किया कि वह उसको अपने पास रखेगा और उसको वैसे ही प्यार करेगा जैसे कि वह अपने बेटे को करता।

अगले दिन लड़के ने अपने नये पिता से कहा — “यह बुलबुल कह रही है कि एक तूफान आने वाला है जो इसके पाल खराब कर देगा और पतवार तोड़ देगा। आप कहीं सुरक्षित जगह चलिये।”

पर जहाज़ के मालिक ने उसकी बात सुनी ही नहीं। जल्दी ही एक तूफान आ गया जिससे उनके जहाज़ की पालें फट गयीं और पतवार टूट गये। यह तो ठीक नहीं था। जो कुछ नष्ट हो चुका था उसको अब सुधारा नहीं जा सकता था। सो नयी पालें बनायी गयीं नये पतवार बनाये गये और जहाज़ फिर आगे चल दिया।

कुछ देर बाद फिर वासिली ने कहा — “अबकी बार यह बुलबुल कह रही है कि हमको बारह जहाज़ मिलेंगे वे सब समुद्री डाकुओं के जहाज़ होंगे और हम सबको बन्दी बना लेंगे।”

इस बार जहाज़ के मालिक ने उसका विश्वास कर लिया और टापू पर वापस आ गया। उसने देखा कि वाकई समुद्री डाकुओं के बारह मजबूत जहाज़ उधर से जा रहे थे। सो जहाज़ के मालिक ने वहाँ उतनी देर इन्तजार किया जब तक कि वे वहाँ से चले नहीं गये। वे फिर वहाँ से आगे बढ़ चले।

कुछ समय बीत गया, न बहुत ज़्यादा न बहुत कम। अब जहाज़ ख्वालिनस्क⁴² शहर आ पहुँचा। वहाँ कई सालों से ख्वालिनस्क के राजा के महल के सामने एक कौआ उसकी पत्नी और एक बेटा

⁴² Khvalynsk – name of a city

रहते थे। वे हमेशा ही वहाँ उड़ते रहते चीखते रहते और दिन हो चाहे रात किसी को भी आराम से नहीं रहने देते।

राजा और रानी ने बहुत कोशिश की पर वे उनको अपनी खिड़की से उड़ा नहीं सके। छोटे छोटे पत्थर भी मारे पर वे वहाँ से नहीं गये।

सो राजा ने परेशान हो कर हर चौराहे पर बन्दरगाह पर सभी जगह यह नोटिस लगवा दिये थे — “जो कोई भी उन तीनों कौओं को वहाँ से उड़ायेगा उसको इनाम में आधा राज्य दिया जायेगा और राजा की सबसे छोटी बेटी शादी में दी जायेगी। पर जो कोई इस काम का बीड़ा उठायेगा अगर उसने इस काम को पूरा नहीं किया तो उसका सिर काट लिया जायेगा।”

बहुत सारे शिकारी राजा के सम्बन्धी बनने के उत्सुक थे पर जो भी आये उन सबको अपने अपने सिर खोने पड़े। वासिली ने भी यह सब सुन तो जहाज के मालिक से कह कि वह भी वहाँ जा कर अपना भाग्य अजमाना चाहता है।

उसने कहा — “मेहरबानी कर के मुझे वहाँ जाने दीजिये। हो सकता हूँ कि मैं कौए उसकी पत्नी और उसके बच्चे को वहाँ से भगाने में सफल हो जाऊँ।”

जहाज के मालिक और दूसरे लोगों ने उसको वहाँ जाने से रोकने की कोशिश की पर सब बेकार। सो वे बोले — “ठीक है

अगर तुम जाना चाहते हो तो जाओ। पर अगर तुम्हारे ऊपर कोई मुसीबत आयी तो उसके जिम्मेदार तुम खुद होगे।”

सो वासिली महल चला गया।

महल पहुँच कर उसने राजा को बताया कि वह वहाँ किसलिये आया है। राजा ने उसको इजाज़त दे दी। वासिली ने वह खिड़की खुलवायी जिसके सामने वे कौए उड़ रहे थे।

उसने कुछ देर तक उनकी बातें सुनीं फिर राजा से कहा — “योर मेजेस्टी देखिये ये यहाँ तीन कौए उड़ रहे हैं - कौआ बाप कौआ माँ और कौआ बेटा। कौआ बाप अपनी पत्नी से झगड़ रहा है कि उनका बेटा किसका है - बाप का या माँ का। इसमें वे आपका फैसला चाहते हैं।”

राजा बोला — “बेटा तो बाप का होता है।”

यह सुनते ही तीनों कौए वहाँ से उड़ गये - बाप और बेटा दायी तरफ और माँ बाँयी तरफ।

इसके बाद राजा ने नौजवान को अपने पास बिठाया। अब वह एक शाही महल में रहता था। वह राजा के प्यार और इज़्जत के सहारे एक बहुत ही बढ़िया नौजवान बन गया। उसने राजकुमारी से शादी कर ली और राजा के आधे राज्य का मालिक बन गया।

एक दिन उसने सोचा कि वह विदेश घूम कर आयेगा और अच्छी अच्छी जगह देख कर आयेगा। सो वह दुनियाँ घूमने निकला। इस घूमने में वह एक रात एक शहर में रुका।

रात गुजार कर जब वह सुबह चलने के लिये तैयार हुआ तो उसने इच्छा प्रगट की वह हाथ मुँह धोना चाहता है तो मालिक उसके लिये पानी ले कर आया और उसकी पत्नी हाथ मुँह पोंछने के लिये तौलिया ले कर आयी ।

नौजवान ने उनको देखा तो वे तो उसके माता पिता थे । उसके तो खुशी से आँसू निकल पड़े । वह अपने माता पिता के पैरों पर गिर पड़ा । उसके बाद वह उन दोनों को अपने शहर ख्वालिनस्क ले गया और वे सब एक साथ बहुत दिनों तक खुशी खुशी रहे ।



11 चार राजकुमार⁴³

जानवरों की भाषा जानने वाली यह लोक कथा एशिया महाद्वीप के भारत देश के काश्मीर प्रान्त की लोक कथाओं से ली गयी है।

यह बहुत पुरानी बात है कि एक राजा था जो बहुत होशियार था बहुत ही संत स्वभाव का और बहुत ही अक्लमन्द था। इस तरह वह एक आदर्श राजा था। उसका दिमाग हमेशा अपने देश का और अपनी जनता का भला चाहने में लगा रहता था।

उसका दरबार हर एक के लिये हर समय खुला रहता था। वह नीचे से नीचे आदमी की भी हर बात सुनने के लिये हमेशा तैयार रहता था। उसने हर तरीके के व्यापार को बढ़ावा दिया था। उसने बीमारों के लिये अस्पताल बनवाये। यात्रियों के लिये सराय बनवायीं और पढ़ने वालों के लिये बड़े बड़े स्कूल खोले। ये और ऐसे ही कई और काम उसने अपने लोगों के लिये किये।

ऐसे अक्लमन्द होशियार न्यायप्रिय और भला चाहने वाले राजा की देखरेख में लोग बहुत खुश थे और फल फूल रहे थे। गरीब अज्ञानी और नीच आदमियों का मिलना वहाँ मुश्किल था।

⁴³ The Four Princes – a folktale of Kashmir, India. Taken from the book “Folk-Tales of Kashmir”, by James Hinton Knowles. 2nd edition. London, Kegan Paul. 1887.

Hindi translation of this book is available from hindifolktales@gmail.com.

पर इस इतने बड़े और अच्छे राजा के कोई बेटा नहीं था। इस बात से वह बहुत दुखी रहता था। यही ऐसा एक काला बादल था जो उसकी खुश और शानदार जिन्दगी पर छाया रहता था। वह रोज शिव जी⁴⁴ की प्रार्थना करता कि वह उसको एक बेटा दे दें जो उसके बाद उसकी राज गद्दी पर बैठे।

वह बहुत दिनों तक अपनी प्रार्थना के जवाब का इन्तजार करता रहा कि एक दिन शिव जी एक जोगी के वेश में उसके पास आये और उसके अच्छे व्यवहार से इतने खुश हुए कि वह उससे बोले — “बच्चा माँग तेरी क्या इच्छा है मैं तुझे वही दूँगा।”

राजा बोला — “महाराज मुझे किसी चीज़ की इच्छा नहीं है। भगवान ने मुझे पैसा इज्जत ताकत शान शान्ति सन्तोष सब कुछ दे रखा है केवल एक चीज़ के। और वह मुझे कौन देगा।”

जोगी ने पूछा — “क्या तू उस चीज़ को मुझसे माँगने में डरता है? ओ राजा क्या तू जानता है कि तू क्या कह रहा है?”

राजा बोला — “आप सच कह रहे हैं। मैं एक ऐसे आदमी की तरह से बात कर रहा हूँ जो धार्मिक तरीके से पागल होता है। ओ महात्मा आप मुझे माफ करें पर अगर आपकी किसी देवता के ऊपर

⁴⁴ One of the three main Gods of Hindus – Brahmaa, Vishnu and Shiv. Shiv is the great representative of Jogi or Tapaswi (ascetic), the ideal of what can be attained by keeping of the body in subjection and by exclusive contemplation of divine things, hence he Mahajogi. And in this character he is depicted with ash-covered body, matted locks and in a most emaciated condition

ताकत है तो मैं आपसे प्रार्थना करता हूँ कि आप उनसे मेरी तरफ से कहें।”

जोगी बोला — “तू खुश रह बच्चा। तेरे कई बेटे होंगे। ले ये चार फल ले और इन्हें अपनी पत्नी को खाने के लिये दे देना और उससे कहना कि वह इनको रविवार की सुबह सूरज निकलने से पहले खाये। इससे उसके चार बेटे होंगे जो बहुत होशियार और बहुत अच्छे होंगे।”⁴⁵

राजा ने जोगी से वे चारों फल ले लिये और उन्हें बहुत धन्यवाद दिया। जोगी राजा को चारों फल दे कर वहाँ से चले गये।

जोगी के जाने के बाद वे फल ले कर राजा अपने महल में गया और अपनी पत्नी को जोगी के आने की और उनके फल देने की बात बतायी। यह अच्छी खबर सुन कर रानी तो बहुत ही खुश हो गयी। वे दोनों अब आने वाले रविवार का बड़ी उत्सुकतापूर्वक इन्तजार करने लगे। अगले रविवार को रानी ने सूरज निकलने से पहले वे चारों फल खा लिये।

जैसा जोगी ने कहा था वैसा ही हुआ। फल खाने के बाद रानी को बच्चे की आशा हो हो गयी और समय आने पर उसने चार बेटों को जन्म दिया। बच्चों के होने के समय का कष्ट उसके लिये कुछ

⁴⁵ Among other extraordinary powers of Jogi or Fakir seem to be able to grant sons to the barren. Some special fruit eating is the general remedy. In Indian folktales mangoes, Lychi, apple, a drug to be swallowed with the juice of pomegranate flowers, barley corn can be cited.

ज़्यादा ही हो गया सो जैसे ही उसने चौथे बेटे को जन्म दिया उसने एक चीख मारी और मर गयी। बेचारी रानी, जब उसकी इच्छा पूरी हुई तो वह खुद चल बसी।

बेचारे राजा की भी यह इच्छा तो पूरी हुई कि उसको उसका वारिस मिल गया पर किस कीमत पर - अपनी प्रिय पत्नी को खोने के बाद। महल पर दुख के बादल एक बार फिर बहुत दिनों तक छाये रहे। राजा इतना ज़्यादा दुखी था कि उसको तसल्ली देना मुश्किल हो गया।

चारों बच्चों को चार धारों की देखभाल में रख दिया गया। बड़े हो कर वे बहुत मजबूत तन्दुरुस्त चतुर और सुन्दर लड़के बन गये। राजा उन सबको बहुत प्यार करता था।

उसने उनको पढ़ना लिखना सिखाने के लिये अच्छे से अच्छे मास्टर रख दिये। वह उनको मँहगी से मँहगी और अद्भुत से अद्भुत चीज़ें ला कर देता था। वह अपने चारों सुन्दर और होशियार बेटों के लिये कोई भी मुश्किल उठाने के लिये हमेशा तैयार रहता था।

इस बीच राजा ने दूसरी शादी कर ली। पर वह दिन बहुत बुरा दिन था जब उसने दूसरी शादी की। जब उसकी दूसरी पत्नी ने राजा की पहली पत्नी के बच्चों को इतना सुन्दर और होशियार होते देखा तो वह उन चारों बच्चों से बहुत जलने लगी क्योंकि उसको लगा कि

राजा उन्हीं को चाहेंगे और राजा के बाद वे ही राजा की गद्दी के मालिक होंगे उसके अपने बच्चे नहीं।

सो उसने अपने पति की नजरों में उनकी ज़िन्दगी खराब करने का निश्चय किया। उसने उनको कुछ ऐसा काम देने का तय किया जिसे या तो वे न कर सकें या फिर उसको करने में उनकी मौत हो जाये।

यह तो हम पहले ही कह चुके हैं कि राजा अपने लोगों और देश की उन्नति में लगा रहता था। पर इस काम को करने में अब उसको अपनी पोजीशन बाधा डाल रही थी क्योंकि उसके पास बहुत काम थे।

हालाँकि राजा इस काम के लिये अपने मन्त्रियों और अपने नीचे काम करने वालों पर निर्भर करता था क्योंकि वह यह समझता था कि अधिकतर वे सब न्यायपूर्ण और ईमानदार थे फिर भी उसने यह निश्चय किया कि वह खुद इन सब कामों को जा कर देखेगा और जानने की कोशिश करेगा कि लोग उसके बारे में क्या सोचते हैं और देखेगा कि उसके बारे में सबका सोचना ठीक है या नहीं।

इसलिये वह अक्सर वेश बदल कर गाँव गाँव शहर शहर दिन और रात में जा कर यह देखा करता था कि लोगों को उसका राज कैसा लग रहा है। इस तरीके से वह अपने लोगों की जरूरतों को भाँपता था और उनको पूरी करने की कोशिश करता था और लोग इस बात पर आश्चर्य करते थे कि राजा इतना होशियार कैसे है।

यह सब कुछ समय तक चलता रहा कि एक दिन सुबह को जल्दी ही जब राजा एक पड़ोस के गाँव का चक्कर काट कर घर लौट रहा था बहुत जोर की बारिश शुरू हो गयी। राजा को इतनी भारी बारिश का उस समय आशा ही नहीं था सो वह उसके लिये तैयार नहीं था।

अब क्योंकि वह लम्बी सवारी कर के आ रहा था तो कीचड़ की वजह से उसका हुलिया बहुत खराब हो गया था। जब वह अपने महल में घुसा तो वह राजा की बजाय एक मजदूर जैसा लग रहा था।

दरवाजे पर जो सन्तरी आदि खड़े रहते हैं उन्होंने भी उसको नहीं पहचाना सो उन्होंने उसको वह शाही सैल्यूट भी नहीं मारा जो राजा को दिया जाता है।

रानी ने जब राजा की हालत के बारे में सुना तो जब राजा ने अपने गीले और कीचड़ भरे कपड़े बदल लिये और वह उसके कमरे में गया तो वह उससे बहुत गुस्से में मिली।

राजा ने पूछा — “प्रिये तुम इतना गुस्सा किसलिये हो।”

वह बोली — “माई लौर्ड और राजा, मैं यह बिल्कुल नहीं चाहती कि आप यह सब काम करें। ये काम अब आपके इस उम्र और ओहदे के लायक करने के नहीं हैं। आप अपने बेटों को अब यह काम क्यों नहीं सौंप देते।

वे अब बड़े हो गये हैं। वे काफी अक्लमन्द भी हैं और अच्छे भी हैं। मैं आपसे विनती करती हूँ कि अब ऐसे काम आप बच्चों को दे दीजिये। इससे मेरी आपके लिये चिन्ता भी कम हो जायेगी और राज्य के काम का भी नुकसान नहीं होगा। इसके अलावा वे लोग भी राज्य का काम करना सीखेंगे।”

राजा बोला — “यह तुमने ठीक ही कहा है प्रिये। यही ज़्यादा ठीक रहेगा कि मैं ये सब काम अब उन जवान हाथों को दे दूँ जो मुझसे भी ज़्यादा अक्लमन्द और मेहनती हैं। वे भी किसी दिन राजा और राज करने वाले बनेंगे। उनको भी यह सब काम सीखना चाहिये।

जब तक मैं जिन्दा हूँ तब तक कम से कम मैं उनको बताता रहूँगा और उनकी सहायता करता रहूँगा कि जब वे राज करें तब उनको क्या करना चाहिये। मैं अभी उन्हें बुलाता हूँ और अपनी इच्छा बताता हूँ।”

सो राजा ने अपने चारों बेटों को तुरन्त बुलाया और जब वे आ गये तो उसने रानी से हुई अपनी बातचीत उनको बतायी कि उसने अपना यह रात को घूमने वाला काम अब उनको देने का फैसला किया है।

चारों राजकुमारों को यह जान कर बहुत खुशी हुई कि राजा को उन पर पूरा विश्वास है और वे भी अब राजकाज में राजा का हाथ बँटाने के काबिल हो गये हैं। उन्होंने राजा को विश्वास दिलाया कि

राजा उनके काम में कभी भी कोई ढील या कमी नहीं पायेगा जिससे उसके विश्वास को ठेस पहुँचे।

उसी दिन से रात को उन्होंने अपना काम शुरू कर दिया यानी उस रात से अब वे वेश बदल कर गाँव गाँव शहर शहर यह देखने के लिये चक्कर काटने लगे कि उनके राज्य में कोई दुखी तो नहीं था या किसी को किसी चीज़ की जरूरत तो नहीं थी।

उनमें से हर एक को इस तरह चक्कर काटना था और अगर कोई खास बात देखे तो वह बात आ कर राजा को बतानी थी। अब इस तरह की सख्त निगरानी में राज्य का खुशहाल और शान्तिपूर्ण रहना तो जरूरी था।

पर इन राजकुमारों के खिलाफ धोखाधड़ी के बीज तो राजमहल में बोये जा रहे थे। रानी की जलन राजकुमारों के लिये रोज ब रोज बढ़ती ही जा रही थी। उससे जितना भी हो सकता था वह उतने तरीके से उनके खिलाफ जालसाजी करती रहती थी।

पहले तो राजा ने उसके झूठे इलजाम और बेरहम इच्छाएँ सुनी नहीं पर बाद में उसकी चतुरायी और सुन्दरता का जादू उस पर चल गया क्योंकि रानी बहुत सुन्दर भी थी और चतुर भी।

राजकुमारों ने देखा कि राजा अब उनकी तरफ से काफी बदल गया था। राजा ने अपने चारों बेटों से कठोरतापूर्वक बोलना शुरू कर दिया था। अक्सर वह उन पर शक भी करने लगा था।

इस विश्वास की कमी ने राजा का उनके लिये प्यार भी कम कर दिया और इसी वजह से राजकुमारों की मेहनत भी कम होने लगी। वे अब अपना काम ठीक से नहीं कर पाते थे।

यह सब काफी समय तक चलता रहा। आखिर वे दिन के झगड़ों से और रात के पहरे से तंग आ गये तो एक दिन वे चारों आपस में मिले कि इस बारे में उन्हें क्या करना चाहिये। उन्होंने अपनी यह मीटिंग आधी रात को की और जंगल के ऐसे हिस्से में की जहाँ कोई आता जाता नहीं था।

हर राजकुमार ने अपनी दुखभरी कहानी सुनायी और सिवाय सबसे बड़े भाई के। सब भाइयों ने यह नतीजा निकाला कि “मेरी सलाह यह है भाइयो कि हम देश के इस हिस्से से कहीं और चले जायें जहाँ भी परमेश्वर हमें ले जाये और फिर जो होगा सो देखा जायेगा भुगतेंगे।”

सबसे बड़े राजकुमार ने कहा — “ऐसा नहीं करो मेरे भाइयो। तुम सब यहीं रुको। यह क्या बेवकूफी तुम लोगों ने अपने दिल में पाल रखी है। ऐसा नहीं करो। मैं तुम्हें बताता हूँ कि हमें क्या करना चाहिये।

तुम लोग जानते ही नहीं कि तुम लोग क्या कह रहे हो। अगर तुम समझदारी से काम लो तो तुम लोगों को ऐसी बात करनी ही नहीं चाहिये। सो नहीं पाने की वजह से तुम्हारी अक्ल भी चली गयी है। समझदारी की हालत में तुमको ऐसी बातें नहीं करनी चाहिये।

क्या एक बहुत बड़े और अच्छे राजा के जो राजगद्दी पर बैठा हो उसके बच्चों को इस तरह उसका हुक्म न मान कर नीच लोगों की तरह से भाग जाना चाहिये। नहीं कभी नहीं। मैं तुमसे फिर कहता हूँ कि इस देश को छोड़ कर कहीं नहीं जाना। कभी ऐसा विचार अपने मन में भी नहीं लाना।

जाओ अब तुम सब अपने घर जाओ और जा कर सो जाओ। इस रात मैं पहरा दूँगा। कल को कोई दूसरा पहरा देगा परसों को तीसरा और फिर चौथा। इस तरह हम लोगों को काफी आराम मिल पायेगा और इस पहरे काम भी हमेशा ठीक से होता रहेगा।”

कह कर सबसे बड़े राजकुमार ने सबको विदा कहा और अपने पहरे पर चला गया बाकी सब अपने अपने घर चले गये। वे अपने बड़े भाई की सलाह से बहुत प्रभावित थे सो उनका भी दुख जाता रहा और वे भी जा कर तुरन्त ही सो गये।

अगली रात दूसरा राजकुमार पहरे पर गया और पहले राजकुमार ने आराम किया। तीसरी रात तीसरा राजकुमार पहरे पर गया और चौथी रात को सबसे छोटा राजकुमार पहरे पर गया जबकि दूसरे राजकुमार सोते रहे।

यह सब भी कई महीने तक चला और सफलतापूर्वक चला। राजकुमार अपने पिता की बेरहमी को बहादुरी से सहते रहे और वैसे ही करते रहे जैसा कि राजा चाहता था।

उनकी पवित्रता अच्छाई और लोगों की परेशानियों की तरफ ध्यान की सब लोग बड़ाई करते थे सिवाय राजा और रानी के जो उनकी बुराई करते थे।

यह कितना सच है कि “जिनमें सच्चे गुण होते हैं देवता हमेशा उनको इनाम देते हैं।”

एक रात सबसे बड़ा राजकुमार अपने पहरे पर था तो वह एक मकान के पास पहुँचा जिसमें एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। राजकुमार ने उनको उनकी खुली हुई खिड़की से देखा। जब वह उनको देख रहा था तभी ब्राह्मण ने उठ कर दरवाजा खोला और बाहर आया।

उसने रोज की तरह से आसमान की तरफ देखा और जैसे ही उसने ऐसा किया कि वह घर के अन्दर “त्राहि त्राहि”⁴⁶ कहता हुआ भाग गया। उसकी पत्नी ने परेशान हो कर पूछा “क्या हुआ।”

ब्राह्मण बोला — “मैंने अपने राजा का तारा किसी और तारे से लड़ता हुआ देखा।”

पत्नी ने पूछा — “तो इसका क्या मतलब हुआ।”

ब्राह्मण बोला — “इसका मतलब यह है कि आज से सातवें दिन हमारा राजा मर जायेगा।”

⁴⁶ Means “Have mercy, Please pardon”

यह सुन कर ब्राह्मणी की आँखों में आँसू आ गये। वह रोती हुई बोली — “क्या? राजा मर जायेगा? राजा कैसे मर जायेगा बीमारी से या किसी दुश्मन के मारने से?”

ब्राह्मण बोला — “आज से सातवें दिन रात के पहले प्रहर के बाद एक जहरीला काला साँप आसमान से उतरेगा और राजा के सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के आँगन में खुलने वाले दरवाजे से कमरे में घुसेगा। यह साँप राजा के कमरे में घुस कर राजा के पैर के अँगूठे में काट लेगा और राजा मर जायेगा।”

ब्राह्मणी बोली — “पर यकीनन ऐसा नहीं होना चाहिये। क्या राजा को इस तरह की मौत से बचाया जा सकता है। अगर इसका कोई तरीका हो तो मुझे बताओ। सच पूछो तो ऐसे न्यायपूर्ण और चतुर राजा को इस तरह से नहीं मरना चाहिये।”

ब्राह्मण बोला — “देवता ही ऐसे भयानक नुकसान को बचा सकते हैं। मुझे कुछ घी⁴⁷ और कुछ लकड़ी दो ताकि मैं उसके लिये देवताओं को कोई भेंट दे सकूँ।

क्योंकि शास्त्रों में लिखा है कि अगर किसी आदमी को राजा की बदकिस्मती का पता चल जाये और अगर वह उस समय देवताओं को भेंट दे तो उस राजा को उसकी बदकिस्मती से बचाया जा सकता

⁴⁷ Translated for the word “Gyav” – Ghee or clarified butter. It is used in Havan also as the Brahman is talking about the offerings to Devtaa.

है नहीं तो राजा नहीं बचेगा। कौन जाने कि हमारा राजा हमको वापस मिल जाये।”

ऐसा कह कर ब्राह्मण ने कुछ लकड़ियाँ लीं उनमें आग जलायी और उसमें ग्यव डाला। उसने बहुत सारी प्रार्थनाएँ कीं और बहुत सारी आहुतियाँ दीं फिर उठ कर अपनी पत्नी से बोला — “राजा की जान बच जायेगी अगर उसका कोई सम्बन्धी इन बातों का पालन करेगा।

वह आदमी जो भी इस काम को करना चाहे महल के पूर्व की तरफ वाले आँगन में कुछ गड्ढे खोदे। उनमें से कुछ वह पानी से भर दे और बाकी बचे गड्ढे दूध से भर दे। फिर वह इन सब गड्ढों में और उस रास्ते पर जो राजा के सोने के कमरे तक जाता है बीच बीच में फूल डाल दे।

इसके बाद जब साँप के आने का समय हो तो वह तलवार ले कर दरवाजे पर खड़ा हो कर वहाँ उसका इन्तजार करे।

साँप वहाँ जरूर आयेगा। वह पानी और दूध के गड्ढों में तैरता हुआ रास्ते पर आयेगा जहाँ वह फूलों के ऊपर से हो कर दरवाजे तक पहुँचेगा। तब तक वह किसी को नुकसान पहुँचाने लायक नहीं रहेगा।

जब साँप दरवाजे पर आये वह आदमी जिसने इस काम को करने का जिम्मा ले रखा है और जो तलवार लिये दरवाजे पर खड़ा है तुरन्त ही उसे तलवार से मार दे। साँप को मारने के बाद वह

उसका थोड़ा सा गरम खून ले और राजा के कमरे में जा कर उसे राजा के पैर के अँगूठे पर मल दे ।

इस तरीके से राजा इस बदकिस्मती से बच जायेगा । पर अफसोस यह काम करेगा कौन ?”

राजकुमार जिसकी उत्सुकता पल पल बढ़ती जा रही थी वहीं खिड़की के पास खड़ा हुआ यह सब सुन रहा था । उसे यह सब सुन कर बहुत आश्चर्य हुआ ।

सुबह को जब वह घर आया तो उसने रात की बात अपने तीनों भाइयों को बतायी पर उन्होंने इस बात की भनक भी राजा के कानों तक नहीं पहुँचने दी । अगली छह रात राजकुमार बारी बारी से पहरे पर जाते रहे । पर सातवीं रात सबसे बड़े राजकुमार ने पहरे पर जाने की इच्छा प्रगट की हालाँकि उस दिन उसकी बारी नहीं थी । वह केवल अपने पिता को बचाना चाहता था ।

सो वह पहरे के लिये गया और राजा के सोने के कमरे के पूर्व की तरफ के आँगन में उसने कुछ गड्ढे खोदे । कुछ को उसने पानी से भरा और कुछ को दूध से । फिर उसने उस रास्ते पर जो राजा के कमरे तक जाता था फूल बिखेर दिये ।

जब सब कुछ तैयार हो गया तो वह नंगी तलवार ले कर राजा के कमरे के पूर्वी दरवाजे पर खड़ा हो कर साँप का इन्तजार करने लगा । यह सब उसने तब किया जब राजा और रानी सोने चले गये ।

रात का पहला प्रहर मुश्किल से ही गुजरा होगा जब राजकुमार ने जो दरवाजे पर चौकन्ना खड़ा था एक आवाज सुनी जैसे ऊपर से कुछ गिरा हो।

फिर उसने किसी जानवर के पानी और दूध भरे गड्डों में से चलने की बहुत धीमी सी आवाज सुनी। और उसके बाद किसी के उन फूलों में से दौड़ने की आवाज जो उसने राजा के कमरे तक आने वाले रास्ते पर बिछाये थे।

और तब उसने देखा कि एक साँप उसकी तरफ लहराता हुआ चला आ रहा था। उसको देखते ही राजकुमार की पकड़ तलवार पर मजबूत हो गयी और पल भर में ही उसने उससे साँप के दो टुकड़े कर दिये।

फिर उसने तुरन्त ही उसका गरम खून लिया और अपनी आँखों पर पट्टी बाँध कर बिना किसी आवाज के राजा के सोने के कमरे का दरवाजा खोला और उसमें घुसा। उसने अपनी आँखों पर पट्टी इसलिये बाँध रखी थी ताकि वह अपने पिता के प्राइवेट कमरे को न देख सके।

सावधानी से उसने राजा के पैर की उँगलियों को महसूस किया और जब उसने उन्हें पकड़ लिया जैसा कि उसने सोचा कि वे राजा के पैर की उँगलियाँ थीं उसने उनमें से कुछ पर वह खून मल दिया। पर वह यह देख नहीं सका कि वह क्या कर रहा था। उसमें से कुछ उँगलियाँ रानी की थीं।

जैसे ही उसने रानी की उँगलियों को छुआ तो रानी की आँख खुल गयी। रानी की नींद बहुत हल्की थी वह बहुत जल्दी जाग जाती थी। जब उसने देखा कि एक आदमी उनके सोने के कमरे से बाहर निकल रहा था तो वह चीख पड़ी। इससे राजा की आँख खुल गयी।

फिर रानी ने देखा कि कुछ खून उसके पैरों की उँगलियों पर लगा है तो उसको लगा कि शायद कोई राक्षस उसके कमरे में आया था। वह डर के मारे पागल सी हो गयी।

राजा की भी आँख ठीक उसी समय खुली जब उसका बड़ा बेटा कमरे से बाहर जा रहा था सो उसने भी किसी को बाहर जाते देखा।

राजा चिल्लाया — “हाँ जैसा तुमने कहा यह ठीक है। मुझे अब अपने बेटों की धोखाधड़ी और नीचता पर विश्वास हो गया है। कल ही मैं उन चारों को मरवाने का हुक्म देता हूँ। ऐसे नीच लोगों को ज़िन्दा रहने का कोई अधिकार नहीं है।”

रानी ने भी मौका देख कर राजा की हाँ में हाँ मिलायी। जब वह इस धक्के से ठीक से बाहर आ गयी तो उसने राजा को वह सब बताया जो उसने सुना था और साथ में उसने उसमें कुछ और भी मिर्च मसाला मिला दिया। उसने राजा को खून लगे अपने पैर भी दिखाये।

यह सब सुन कर और राजा ने खुद भी जो कुछ देखा था उसे मिला कर उसने निश्चय किया कि वह इन चारों को जल्दी से जल्दी

सजा देगा। उसने कहा — “बेशक जब मेरे लड़कों ने देखा कि वे अपनी ज़िन्दगी में खुद मुझे कोई नुकसान नहीं पहुँचा पा रहे हैं तो उन्होंने राक्षसों की सहायता ली। अच्छा हुआ भगवान ने हमें बचा लिया।”

यह सुन कर रानी की खुशी की कोई हद नहीं थी। उसने सोचा आखिर उसकी इच्छा पूरी हो ही गयी। उसकी आँखों में चमकीले सपने तैरने लगे।

उसने देखा कि उसके अपने बेटे बड़े चतुर और अक्लमन्द हो कर उस देश पर राज कर रहे हैं। देश के सारे लोग उनकी बड़ाई कर रहे हैं और दूसरे देश उनकी इज़्ज़त कर रहे हैं।

वह बड़े उतावलेपन से उस दिन का इन्तजार करने लगी जब उसकी इस इच्छा को पूरी होने में जो जो कठिनाइयाँ हैं वे दूर हो जायेंगी।

अगली सुबह ही राजा अपने काउन्सिल वाले कमरे में गया अपने दोस्तों रिश्तेदारों और सलाहकारों को बुलवाया और अपने चारों बेटों को जो अब बन्दी थे अपने सामने लाने के लिये कहा। उनके शाही कपड़े उतरवा लिये गये थे। उनके हाथ जेल की सीली और गन्दी दीवारों को छूने से गन्दे हो गये थे जहाँ वे करीब करीब सारी रात बन्द थे।

वे बहुत दयनीय हालत में लग रहे थे पर फिर भी वे दुखी नहीं थे। उनके चेहरों पर आशा की मुस्कुराहट खेल रही थी।

जब चारों राजकुमार उस कमरे में घुसे तो उस कमरे में चुप्पी छायी हुई थी। वे उस जगह की तरफ बढ़े जहाँ उनको खड़े हो कर अपना फैसला सुनना था।

कुछ मिनटों बाद ही राजा ने गुस्से में भर कर काँपते हुए कहा कि जो कुछ भी उन्होंने किया उसकी सजा मौत है इसलिये उनको माफ नहीं किया जा सकता और उसने उनको मारने की सजा सुना दी।

सजा सुनने के बाद सजा देने वाले राजकुमारों की तरफ बढ़े और उन्होंने उन्हें पकड़ा तो वहाँ बैठे कुछ मन्त्रियों और लोगों ने पूछा कि राजकुमारों का अपराध क्या था। पर राजा ने उनकी कोई बात नहीं सुनी। उसने कहा — “अभी तो इनको मार दो इनका अपराध मैं बाद में बताऊँगा।”

इसी पल एक राजकुमार ने अपना हाथ उठा कर इशारा किया और सिंहासन के सामने लेट गया जैसे वह कुछ कहना चाहता हो। राजा बोला — “इसको बोलने दो। शायद यह अपने दिल के बुरे भेदों को खोल देना चाहता है। बोलने दो इसको बोलने दो।”

X X X X X X X

इसके बाद चारों राजकुमार अपने पिता राजा को एक एक कहानी सुनाते हैं जिनमें यह दिखाया गया है किस तरह से राजा को फैसला करने में जल्दी नहीं करनी चाहिये जिससे उनका खुद का बुरा हो

सकता है और वह फिर बाद में पछता सकते हैं। इसलिये पहले उस पर विचार कर सोच समझ लेना चाहिये कि उसका फैसला ठीक है या नहीं।

नीचे लिखी कहानी उन चारों राजकुमारों में से एक राजकुमार की सुनायी गयी कहानी है जिसे हम जानवरों की भाषा की श्रेणी में रख सकते हैं। वही कहानी हम यहाँ दे रहे हैं।⁴⁸

राजा बोला — “मेरा हुक्म अटल है। मुझे किसी से कुछ नहीं सुनना।”

तब दूसरा राजकुमार राजा के सिंहासन के सामने झुका और राजा से विनती की कि उसको भी कुछ कहने की इजाज़त दी जाये।

राजा ने धीरे से अपना हाथ हिलाते हुए कहा — “बोलो इजाज़त है।”

तब दूसरे राजकुमार ने शुरू किया — “राजा साहब बहुत पहले की बात है कि एक शिकारी रहता था जो अपना गुजारा जंगल में केवल जंगली जानवर मार कर ही करता था। एक दिन ऐसा हुआ कि उसको जंगल में कोई शिकार नहीं मिला। इससे वह बहुत दुखी था क्योंकि अब उसके घर में कल के लिये कोई खाना नहीं था।

⁴⁸ The full story is given in my e-book “Kashmir Ki Lok Kathayen-4”, Tale No 60, under the title “Char Rajkumar” in Hindi. To obtain it write on this address - hindifolktales@gmail.com

सो वह तीन दिन तक जंगल में इस आशा में इधर उधर घूमता रहा कि शायद उसको कहीं कुछ मिल जाये। आखिर वह एक मकान के सामने आ गया जहाँ कुछ शिकारी बैठे हुए थे।

उन्होंने उससे पूछा कि वह कौन था और कहाँ से आया था। जब उन्होंने यह सुना कि वह खाने की तलाश में था और उसने तीन दिनों से कुछ खाया पिया नहीं था तो उन्होंने उसको कुछ मॉस और रोटी खाने के लिये दी और उससे वायदा किया कि वे उसको एक ऐसी जगह ले जायेंगे जहाँ उसको शिकार बहुतायत से मिल जायेंगे।

अच्छा खाना खाने के बाद और खूब सो लेने के बाद जब वह ताजादम हुआ तो एक शिकारी उसको एक तरफ ले कर गया। वहाँ जा कर उसने एक बारहसिंगा मारा और कुछ छोटे शिकार किये। एक दो चिड़िया भी मारीं जिनको दूसरे शिकारी छूना भी पसन्द नहीं करते।

उन्होंने कहा “नहीं नहीं ये तुम्हारे हैं। तुम इनको अपने घर अपनी पत्नी और बच्चों के पास ले जाओ जो अब तक बेचारे भूख से बिलख रहे होंगे। हम तुम्हें अपने साथ देर तक नहीं रखना चाहते क्योंकि तुम अपने घर जाने के लिये बहुत बेचैन होगे। फिर भी हम आशा करते हैं कि हम तुमसे बहुत जल्दी ही मिलेंगे।”

शिकारी ने उनको बहुत बहुत धन्यवाद दिया और कहा कि बेशक मैं तुम लोगों से अक्सर मिलता रहूँगा और तुम जैसे दोस्तों की सहायता करने के लिये हमेशा तैयार रहूँगा। अगर तुम सबने मेरी

यह छोटी सी सहायता न की होती तो मेरा परिवार तो आज मर ही गया होता। हम तुम फिर मिलेंगे। कह कर वह वहाँ से चला गया।

जब वह अपने घर पहुँचा तो भूख से उसने अपने परिवार को करीब करीब मरा हुआ ही पाया। वे उसके लौटने का इन्तजार कर रहे थे। इन्तजार करते करते वे बीमार से हो गये थे सो उसने तुरन्त ही आग जलायी और कुछ मॉस उस पर भूना और उन्हें खाने को दिया।

अगले दिन वे कुछ ठीक हो गये थे तो उन्होंने एक दूसरे को अपना अपना हाल बताया। शिकारी ने बताया कि जंगल में उसको कुछ शिकारी मिल गये थे जिन्होंने उसकी सहायता की।

कुछ दिन बाद शिकारी ने अपनी पत्नी से कहा कि वह अपने उन शिकारी दोस्तों से मिलने जंगल जाना चाहता है जैसा कि उसने उनसे वायदा किया था कि वह उनसे मिलने जरूर आयेगा।

सो उसने उनके लिये कुछ भेंटें लीं और उनसे मिलने चल दिया। वे शिकारी उस शिकारी को देख कर बहुत खुश हुए और उससे बड़ा अच्छा बरताव किया। वह उनके पास कई दिन ठहरा वहाँ उसने इस बीच बहुत सारे शिकार भी मारे।

वहाँ यह भी तय हुआ कि उस शिकार पार्टी के सरदार की लड़की की शादी उसके लड़के से कर दी जाये क्योंकि इस तरह से दोनों परिवार दोस्ती के अलावा रिश्तेदारी में भी बँध जायेंगे।

कुछ समय बाद दोनों की शादी हो गयी और दुलहा अपने ससुर के घर सोने गया। वह वहाँ गया और जा कर सो गया। बीच रात में गीदड़ के चिल्लाने की आवाज सुन कर दोनों की आँख खुल गयी।

अब ऐसा हुआ कि दुलहिन जानवरों की बोली समझती थी सो वह जागी हुई उनका बोलना सुनती रही। उसने सुना कि एक गीदड़ दूसरे गीदड़ से कह रहा था कि एक लाश नदी में बही जा रही है।

उसकी बाँह पर एक ब्रेसलैट है जिसमें पाँच कीमती रत्न जड़े हुए हैं। ऐसा आदमी कहाँ है जो उस लाश को किनारे पर खींच ले और उसका वह कीमती रत्नों वाला ब्रेसलैट निकाल ले।

इस तरह वह तीन अच्छे काम करेगा। एक तो वह नदी को गन्दा होने से बचायेगा। दूसरे वह उन पाँच कीमती रत्नों को नदी में बेकार बहने से बचायेगा और तीसरे हम जैसे गरीब जानवरों को खाना देगा।

दुलहिन ने जब यह सुना तो वह तुरन्त ही अपने बिस्तर से उठी और नदी की तरफ चल दी। उसके पति को उत्सुकता हुई कि वह कहाँ जा रही थी सो वह भी उठ कर उसके पीछे पीछे छिप कर चल दिया। जब वह नदी किनारे पहुँची तो वह पानी में कूद गयी और लाश की तरफ तैर गयी जो चाँदनी में बहुत ही धुंधली दिखायी दे रही थी।

उसने लाश को पकड़ा और पकड़ कर नदी के किनारे ले आयी। उसने उसका वह सुन्दर ब्रेसलैट निकाल लिया जो उसकी एक बाँह पर बँधा था और घर आ गयी।

उसका पति पहले ही घर आ गया था क्योंकि उसने उसका लाश की बाँह से ब्रेसलैट उतारने तक इन्तजार नहीं किया। दुल्हिन भी घर आ कर सो गयी। दुल्हे ने सोचा कि यह इतनी रात गये वहाँ नदी के किनारे क्या करने गयी थी। यह सोचते सोचते वह रात भर सो नहीं सका पर उसकी पत्नी खूब गहरी नींद सोती रही।

जैसा कि रिवाज था पति सुबह उठ कर नदी पर नहाने गया तो उसकी तो डर के मारे जान ही निकल गयी। वह डर और घृणा से देखता रह गया कि वहाँ एक आदमी की आधी खायी हुई लाश उसी जगह पड़ी हुई थी जहाँ कल रात उसकी पत्नी पानी में कूदी थी।

उसके मुँह से निकला कि क्या उसकी पत्नी राक्षसी थी। उसने उसके शरीर का कुछ हिस्सा खा लिया था और यकीनन वह आज रात को इस बच्चे हुए हिस्से को खाने वापस आयेगी।

यह सोच कर वह उसके पास जाने से डरने लगा और वह उसके घर न जा कर फिर अपने पिता के घर लौट गया। घर पहुँच कर उसने अपने पिता से कहा — “पिता जी आपने मेरी शादी एक राक्षसी से क्यों की। मुझे पूरा यकीन है कि वह एक राक्षसी है क्योंकि कल रात वह एक आदमी को मार कर उसे खा कर आयी थी।

अगर आपको इस बात का यकीन न हो तो आप नदी के किनारे जा कर वहाँ पड़ी हुई एक आदमी की आधी खायी हुई लाश देख सकते हैं। ओह मैं भी कितना बदकिस्मत हूँ।”

जब शिकारी ने यह सुना तो उसे लगा कि या तो उसका बेटा सच नहीं बोल रहा या फिर वह पागल हो गया है सो उसने जल्दी से जल्दी ही इस मामले की छानबीन करनी शुरू की।

वह अपनी बहू के घर गया। जब वह उसके घर से थोड़ी ही दूर पर था तो उसकी बहू का पिता और परिवार के कुछ और लोग उसका स्वागत करने के लिये वहाँ तक आये। उन्होंने उससे उसके बेटे के वहाँ से अचानक चले जाने की वजह भी पूछी।

जब तक कि बहू के बारे में सच न पता चल जाये शिकारी ने बात को टालने के ख्याल से उनको अपने बेटे के बारे में कोई भी चिन्ता करने से मना कर दिया क्योंकि वह तो सुरक्षित रूप से उसके घर पर ही मौजूद था।

उसने कहा कि लड़का बहुत बड़ा नहीं था इसलिये उसने उसे जल्दी ही घर वापस आने के लिये कह दिया था। उसने कहा कि उसको आशा थी कि वह उसके इस अजीब व्यवहार के लिये उसे माफ करेंगे और बहू को उसके साथ भेज देंगे।

दूसरे शिकारी इस बात से सन्तुष्ट हो गये और उन्होंने बहू को उस शिकारी के साथ उसकी ससुराल भेज दिया। थोड़ा सा खाना

खाने के बाद लड़के का पिता शिकारी बहू को साथ ले कर घर चल दिया ।

उसने बहुत जल्दी ही उसके पीछे पीछे चलना शुरू कर दिया क्योंकि वह उसके बराबर चलने से डर रहा था ताकि कहीं वह सचमुच में ही राक्षसी न हो और उसे न खा जाये ।

इस तरीके से वे कुछ दूर चलते रहे कि लड़की चलते चलते थक गयी और पानी के एक छोटे से तालाब के पास एक बड़े से पेड़ की छाया में बैठ गयी ।

शिकारी ने अपने इस विचार को बढ़ावा दिया कि शायद उसके बेटे ने कोई बुरा सपना देखा होगा सो वह भी उसके पास ही बैठ गया । उसने लड़की के पिता का दिया हुआ कुछ खाने का सामान निकाला और दोनों खाने लगे ।

जब वे इस तरह बैठे हुए थे खा रहे थे और आराम कर रहे थे तो कुछ कौए वहाँ आ कर इकट्ठा हो गये और बहुत ज़ोर ज़ोर से शोर मचाने लगे । वे एक शाख से दूसरी शाख पर और एक पत्थर से दूसरे पत्थर पर कूद रहे थे पर उनकी आँखें उन दोनों के पास रखे हुए माँस पर लगी थीं जैसे जैसे ही उनको मौका मिलेगा वे उसको ले जायेंगे ।

उनमें से एक कौआ जो बूढ़ा था कुछ दोस्ती सी दिखाना चाह रहा था । उसने कहा कि कौन है वह जो हमारी भाषा सुन सकता है और समझ सकता है । इस पेड़ की जड़ के पास एक बरतन भर कर

कीमती पत्थर हैं और इस बरतन के नीचे हजारों चींटियाँ हैं जो इस पेड़ को खाये जा रही हैं।

ओह वह आदमी कहाँ है जो इस पेड़ की जड़ के पास से खोद कर वह बरतन निकाल ले। इससे यह पेड़ भी बच जायेगा और हम भी इस पेड़ की शाखों पर अपना घोंसल बना सकेंगे। इसके अलावा वह खुद भी बहुत अमीर बन जायेगा।

लड़की यह सुन कर एक बार रो लेती और एक बार हँस लेती। यह देख कर उसका ससुर डर गया। उसने सोचा कि वह हँस और रो इसलिये रही थी क्योंकि वह एक राक्षसी थी और इस तरह से उसे खाने के लिये ध्यान कर रही थी।

डर के मारे वह काँपती आवाज में उससे बोला — “तुम किस तरह की औरत हो। अगर तुम राक्षसी हो तो मैं तुमसे प्रार्थना करता हूँ कि तुम मुझे छोड़ दो।”

ससुर के ये शब्द सुन कर लड़की को बड़ा आश्चर्य हुआ। वह बाली — “पिता जी मैं किसी बुरे स्वभाव की नहीं हूँ। आपने मुझमें ऐसा क्या देखा या मेरे बारे में ऐसा क्या सुना जिसकी वजह से आपने मुझसे यह सवाल किया।”

उसने पूछा — “फिर वह आधी खायी हुई लाश नदी के किनारे कहाँ से आयी और अभी तुम रोयी और हँसी क्यों।”

बहू बोली — “अब मैं आपको क्या बताऊँ। क्या आप केवल इन्हीं वजहों से मुझे राक्षसी समझ रहे हैं। क्या इसी वजह से आपका

बेटा और मेरे पति मेरे घर से बिना बताये चले गये। क्या इसीलिये आप मेरे पीछे पीछे चल कर यहाँ तक आये।

क्या बेवकूफी थी यह भी। अब आप सच्चाई सुनें। जिस दिन आपका बेटा मेरे पिता के घर रात को आया था उस रात गीदड़ बहुत चिल्ला रहे थे और वे इतना चिल्लाये कि हम दोनों की आँख खुल गयी। वे बहुत देर तक बहुत लम्बी बात करते रहे।

इसमें कोई आश्चर्य की बात नहीं क्योंकि उन्होंने एक लाश नदी में तैरती देखी थी जिसकी एक बाँह पर एक पाँच कीमती रत्न जड़ा ब्रेसलैट था। मैंने उनकी भाषा समझ ली तो मैंने सोचा क्यों न मैं वहाँ जा कर उस नदी से वह लाश खींच लाऊँ और उसकी बाँह से वह ब्रेसलैट निकाल लूँ। देखिये यह है वह ब्रेसलैट।”

कह कर उसने वह ब्रेसलैट जो एक मैले से कपड़े में लिपटा हुआ था अपने ससुर को दिखाया। उसने आगे कहा — “वह लाश मैं वहीं छोड़ आयी। हो सकता है कि वे गीदड़ वहाँ बाद में आये हों और उन्होंने उसको खा लिया हो। आप यकीन रखें यह काम मेरा नहीं है।

वही आधी खायी हुई लाश शायद आपके बेटे ने अगली सुबह नदी के किनारे देखी होगी जब वह वहाँ नहाने गये होंगे। क्योंकि मुझे लगता है कि उन्होंने रात को नदी पर मेरा जाना भी देख लिया था। सो उन्होंने सोचा कि मैं राक्षसी हूँ और मैंने ही वह लाश खायी है और यही सोच कर वह भाग गये।”

यह कह कर वह बहुत जोर से हँस पड़ी। शिकारी भी उसकी इस बात पर हँसे बिना न रह सका।

वह फिर बोली — “और अब फिर से। अभी अभी एक कौआ यहाँ एक शाख पर बैठा था और काँव काँव कर के यह कह रहा था कि इस पेड़ की जड़ के पास एक बहुत बड़ा खजाना छिपा है।

चिड़ियों की भाषा समझ पाने की वजह से ही मैं खुशी से हँसी भी और रोयी भी कि मुझे लगा कि मुझे फिर खजाना मिल जायेगा जिससे मैं अपने परिवार में खुशी भी लाऊँगी और खुशहाली भी।

क्या यह बात ठीक नहीं है। मेहरबानी कर के आप यह न सोचें कि मैं राक्षसी या वैसी ही कोई और हूँ। मैं आपके बेटे की वफादार पत्नी बनना चाहती हूँ और आप सबका भला करना चाहती हूँ।”

शिकारी यह सुन कर बहुत खुश हुआ। उसने अपनी बहू की बात पर विश्वास कर लिया। उसके बाद उन दोनों ने मिल कर पेड़ की जड़ के पास खोदा तो उनको वहाँ बहुत सारे कीमती रत्न और दूसरा खजाना मिला।

यह देख कर शिकारी इतना खुश हुआ कि उसने अपनी बहू को गले लगा लिया और उन दोनों को माफ करने के लिये कहा कि उनको उसके बारे में गलतफहमी हो गयी थी।

खजाना निकाल कर दोनों अपने घर की तरफ चले। वे एक बहुत सुन्दर सड़क से हो कर जा रहे थे। सारे रास्ते छायादार पेड़

खड़े थे। सड़क के किनारे फूल भी लगे हुए थे। इधर उधर से झरने निकल कर बह रहे थे।

शिकारी को प्यास लगी थी सो उसने अपनी बहू से उन झरनों में से एक झरने से पानी लाने के लिये कहा। वह तुरन्त ही उसकी बात मान कर पानी लाने चली गयी। वह पानी लेने के लिये झुकी कि तभी एक मेंढक टर्किया — “भगवान के नाम पर क्या कोई सुन रहा है। इस पानी के नीचे एक खजाना दबा है इसलिये इस पानी में इतने कीड़े हैं।

जो कोई मुझे सुन रहा है तो क्या वह यह खजाना निकालेगा जिससे यह पानी पीने लायक हो जायेगा और यात्री लोग इस पानी को पी पायेंगे। मेंढक भी इस पानी में रह कर आनन्द करेंगे और उनका पेट भी खराब नहीं होगा और जो इस खजाने को निकालेगा वह तो अमीर हो ही जायेगा।”

यह सुन कर बहू तुरन्त ही अपने ससुर के पास गयी और जा कर उसको सब बताया तो उन दोनों ने उस पानी में से खजाना निकाल लिया। वह खजाना निकाल कर शिकारी और उसकी बहू ने अपनी कमर में बाँधा⁴⁹ और अपनी यात्रा पर चल दिये।

जब वे अपने घर के पास पहुँचे तो शिकारी ने अपनी बहू से कहा कि वह आगे आगे चले वह उसके पीछे आता है। उसने ऐसा

⁴⁹ Kashmiris have various devices for carrying their money or other little valuables. Sometimes they hide it in their turbans, sometimes in their Kamarband, sometimes in their sleeve-cuffs, sometimes in their ears if the thing is small, sometimes tied up in the small knot in the end of their wrap.

ही किया। जब उसके पति ने उसको अकेले आते देखा तो उसके दिमाग में तुरन्त ही एक विचार आया कि लगता है इसने मेरे पिता को खा लिया है और अब यह मुझे खाने आयी है।

सो उसने अपनी तलवार उठायी और जैसे ही वह इस आशा में अन्दर घुसी कि उसका पति उसका स्वागत करेगा और वह उसको खजाना दिखायेगी। सो बजाय स्वागत करने के उसने उसके ऊपर तलवार चला दी और उसे मार दिया।

एक घंटे बाद उसका पिता घर पहुँचा तो उसको देखते ही बेटा बोला — “अल्लाह की मेहरबानी है कि आप ज़िन्दा हैं। आपको उस राक्षसी ने नहीं मारा। पर अब आप खुश हो जाइये मैंने उसे मार दिया है। देखिये उसके खून के निशान दरवाजे पर पड़े हैं।”

जब शिकारी ने दरवाजे पर खून के निशान देखे तो वह तो बेहोश हो कर गिर पड़ा। बहुत देर बाद वह होश में आया। उसको बहुत दुख था पर इससे भी बड़ा दुख तो उसके पति को हुआ जिसने जल्दी में अपनी पत्नी की हत्या कर दी थी।”

जब राजकुमार यह कहानी सुना रहा था तो दरबार में पूरी चुप्पी छायी हुई थी। इस कहानी से ऐसा लगा जैसे राजा का दिल कुछ नरम हुआ।

राजकुमार ने बाद में कहा — “इसलिये राजा साहब हम आपसे विनती करते हैं कि हमको मारने में आप जल्दी न करें। कहीं ऐसा न हो कि आपको भी हमको मारने के बाद पछताना पड़े।”

पर राजा ने अपना दिल पक्का कर लिया था और वह कुछ सुनने के लिये तैयार नहीं था।.....

यह सुन कर राजा कुछ नरम पड़ा। उसको रानी की कहानी पर कुछ शक सा हुआ हालाँकि उसको यह पता नहीं चला कि वह अपने और रानी के पैरों पर लगे खून का और अपने बड़े बेटे के अपने सोने के कमरे में होने का क्या मतलब निकाले।

अब वह अपने सबसे बड़े बेटे की तरफ पलटा जो अभी तक चुपचाप बैठा था और बोला — “जो कुछ भी कल की रात हुआ अगर तुम मुझे उसका ठीक ठीक जवाब दे कर सन्तुष्ट कर दो तो मैं तुमको और तुम्हारे भाइयों को छोड़ दूँगा।”

तब राजा का सबसे बड़ा बेटा सिंहासन के सामने आया और सिर झुका कर बोला — “राजा साहब और हमारे पिता, आपकी अच्छाइयाँ और मेहरबानियाँ सब लोगों को अच्छी तरह मालूम हैं। हमको आपकी इस बात का जवाब देने में कोई हिचक नहीं है क्योंकि हमारी आत्मा साफ है। और हमें यह भी यकीन है कि हमारी कहानी सुनने के बाद राजा साहब हमें फिर से अपना वफादार समझेंगे।

आपने हमें राज्य के पहरे की जिम्मेदारी सौंपी थी। सो एक दिन जब मैं पहरे पर था तो एक मकान के पास से गुजर रहा था। उस मकान में एक ब्राह्मण अपनी पत्नी के साथ रहता था। जब मैं वहाँ था तो उसी समय ब्राह्मण अपने घर से बाहर निकला और ऊपर

आसमान की तरफ देख कर “त्राहि त्राहि” कह कर अपने घर के अन्दर घुस गया।

उस समय ब्राह्मण यह व्यवहार मुझे कुछ अजीब सा लगा तो उससे आकर्षित हो कर मैं उस घर के पास चला गया। वहाँ मैंने सुना कि ब्राह्मण अपनी पत्नी से कह रहा था कि राजा के तारे को कोई दूसरा तारा नष्ट करने वाला था जिसका मतलब था कि राजा उस दिन से सातवें दिन मर जायेगा।

उन दोनों में आगे जो बात हुई उससे मुझे पता चला कि एक साँप राजा को मारने के लिये आसमान से नीचे उतरेगा और महल के पूर्वी दरवाजे से राजा के महल में घुसेगा।

ब्राह्मण ने आगे कहा कि राजा के बचने की कोई उम्मीद नहीं है जब तक कि उनका कोई रिश्तेदार महल के आँगन में कुछ गड्ढे न खोदे और उनको पानी और दूध से न भरे। फिर वह उस रास्ते पर फूल न बिखेरे जिस पर से हो कर साँप राजा के कमरे में घुसेगा।

जब साँप आयेगा तो वह उन पानी और दूध भरे गड्ढों में से तैरता हुआ आयेगा फिर फूलों से हो कर आयेगा जिससे उसका जहरीलापन खत्म हो जायेगा।

जो आदमी यह काम करे वह कमरे के दरवाजे पर नंगी तलवार लिये खड़ा रहे और जब वह अन्दर आने की कोशिश करे तो वह तलवार से उसके टुकड़े कर दे। फिर उसका ताजा गरम खून राजा के पैरों की उँगलियों पर लगा दे। इससे राजा बच जायेगा।

सो हे राजा साहब हमारे पिता । मैंने खुद यह काम करने का बीड़ा उठाया । मैं ही उस समय महल के पूर्वी दरवाजे पर तलवार लिये खड़ा था ।

जैसा कि ब्राह्मण ने कहा था मैंने गड्ढे खोदे और उनमें पानी और दूध भरा । सड़क पर फूल बिखेरे । और जैसे ही साँप आया मैंने तलवार से उसके दो टुकड़े कर डाले । फिर उसका गरम खून आपके पैरों की उँगलियों पर लगा दिया ।

मैं आपके प्राइवेट कमरे में आँख खोल कर नहीं जाना चाहता था सो मैंने अपनी आँखों पर पट्टी बाँधी और तब उसके अन्दर घुसा । बस यहीं मुझसे गलती हो गयी । देख न पाने की वजह से मैंने रानी माँ के पैरों पर खून लगा दिया । आपके कमरे में कोई राक्षस नहीं घुसा था ।

हे राजा साहब हमारे पिता । आप हमारे ऊपर शक क्यों करते हैं । हम तो आपके असली बेटे हैं । आपने रानी माँ की बात तो सुनी जो अपने बच्चों को यह राज्य दिलवाना चाहती हैं और इसीलिये उन्होंने हमारी बुराई भी की ।

अब आप हमारी बात भी सुनें । हमने कभी आपको धोखा नहीं दिया और न ही कभी आपको कोई नुकसान पहुँचाने की कोशिश की । ”

यह सुन कर राजा का सिर दुख और शर्म से नीचे झुक गया । उसके बाद राजा अपने चारों बेटों को साथ ले कर वे गड्ढे देखने

गया जो उसके बड़े बेटे ने खोदे थे और वह जगह भी देखी जहाँ उसने खून से सना कटा साँप फेंका था। उसके बाद वह उस ब्राह्मण के घर गया जिसने यह सब बताया था। उसने उससे उस रात के बारे में बहुत सारे सवाल पूछे। सब कुछ सच पाया गया।

यह सुन कर कि किस तरह चारों राजकुमार जिन्हें मौत की सजा मिलने वाली थी छोड़ दिये गये हैं उस रात शहर में बहुत खुशियाँ मनायी गयीं।

इन राजकुमारों को राज्य करने के लिये दे दिया गया। सबसे बड़ा राजकुमार राजा बना और राजा के दूसरे बेटे वजीर बने। वे सब बड़े प्रेम से रहे और उनके अच्छे राज में देश खूब फला फूला।

गरीब ब्राह्मण को भी खूब पैसा दिया गया। नीच रानी को राजा ने छोड़ दिया और उसको राज्य से बाहर निकाल दिया। राजा सन्यास ले कर जंगल चला गया। वहाँ राजा बहुत बूढ़ा होने तक ज़िन्दा रहा।



12 जानवरों की भाषा-2⁵⁰

एक बार की बात है कि एक पिता के एक बेटा था जो दस साल तक स्कूल गया। समय खत्म होने के बाद टीचर ने उसके पिता को लिखा कि अब वह उसको ले जा सकते हैं क्योंकि अब वहाँ उसकी पढ़ाई खत्म हो चुकी है।

सो पिता वहाँ गया और अपने बेटे को घर ले आया और उसके आने की खुशी में एक बहुत बड़ी दावत दी। इस दावत में उसने बहुत सारे कुलीन और सभ्य लोगों को बुलाया था। आने वालों ने कई स्पीचें दीं।

उसके बाद आये हुए मेहमानों में से एक ने बेटे से पूछा — “बेटे। मुझे कोई ऐसी चीज़ बताओ जो तुमने वहाँ पर बहुत बढ़िया सीखी हो।”

लड़का बोला — “मैंने कुत्ते मेंढक और चिड़िया की भाषा सीखी।”

यह सुन कर तो वहाँ बैठे सारे लोग बहुत ज़ोर से हँस पड़े। सारे लोग बच्चे के पिता के घमंड की और बेटे की बेवकूफी की हँसी उड़ाने लगे।

किसान बेचारा अपने बेटे के जवाब पर इतना शरमाया और उस पर इतना गुस्सा हुआ कि उसने उसको अपने दो नौकरों को सौंप

⁵⁰ Language of the Animals. By Domenico Comparetti. (Tale No 56).

दिया और कहा कि वे उसको जंगल ले जायें और वहाँ ले जा कर उसे मार दें। फिर उसका दिल ला कर उसे दें।

पर उसके नौकर उसकी इस आज्ञा का पालन नहीं कर सके। लड़के की बजाय उन्होंने एक कुत्ते को मारा और उसका दिल निकाल कर राजा को सौंप दिया।

नौजवान बेटा वह देश छोड़ कर कहीं और चला गया। बहुत दूर चलने के बाद वह एक किले पर आ निकला। वहाँ राजकुमार का एक खजांची रहता था जिसके पास बहुत खजाना था।

वहाँ उसने रहने की एक जगह ढूँढी और जैसे ही वह उसके अन्दर घुसने ही वाला था कि उस किले के आस पास बहुत सारे कुत्ते आ कर इकट्ठे हो गये।

खजांची ने पूछा कि इतने सारे कुत्ते वहाँ कहाँ से आ गये। अब क्योंकि लड़के को कुत्तों की भाषा आती थी तो वह बोला — “इसका मतलब यह है कि सौ मारने वाले इसी शाम को आपको मारने के लिये यहाँ आयेंगे तो आप को सावधान रहना चाहिये।”

किले में रहने वालों ने किले के आसपास दो सौ सिपाही खड़े करवा दिये और रात को जब मारने वाले आये तो उन सबको गिरफ्तार कर लिया। खजांची तो इस बात के लिये लड़के का इतना कृतज्ञ हुआ कि उसको अपनी बेटी देने के लिये तैयार हो गया।

पर लड़के ने कहाँ कि “अभी नहीं। मैं एक साल तीन दिन बाद वापस लौटूँगा तब...।”

ऐसा कह कर वह उस किले को छोड़ कर चला गया तो एक और देश में पहुँचा। वहाँ के राजा की बेटी बहुत बीमार थी क्योंकि राजा के महल के पास ही एक बहुत बड़ा तालाब था जिसमें मेंढक बराबर टरति रहते थे।

लड़के ने देखा कि मेंढक इसलिये टर्रा रहे थे क्योंकि राजकुमारी ने एक बार एक कौस उस तालाब में फेंक दिया था। उसने वह कौस तालाब में से निकलवा दिया तो उनका टर्राना बन्द हो गया और राजकुमारी ठीक हो गयी।

अब यह राजा भी इस लड़के से अपनी बेटी की शादी करना चाहता था तो इसने इस राजा से भी यही कहा कि जब वह एक साल तीन दिन के बाद वापस लौटेगा तब...।

यहाँ से वह आगे चला तो वह रोम की तरफ चल दिया। रास्ते में उसको तीन आदमी मिले जो रोम जा रहे थे। एक दिन बहुत गरम था सो चारों एक ओक के पेड़ के नीचे सो गये। कुछ देर में ही चिड़ियों का एक बहुत बड़ा दल वहाँ आया और उस ओक के पेड़ पर बैठ गया और ज़ोर ज़ोर से गाने लगा।

चारों यात्रियों में से एक ने पूछा — “ये चिड़ियें इतनी खुश हो कर क्यों गा रही हैं।”

लड़का बोला — “ये लोग एक नये पोप के साथ खुशी मना रही हैं जो हममें से एक बनने वाला है।”

और अचानक ही उसके सिर पर एक फाख्ता बैठ गयी और सचमुच में ही कुछ समय में ही वह पोप बन गया ।

पोप बनने के बाद उसने अपने पिता खजॉची और राजा को बुला भेजा । सब उसके सामने काँपते से चले आये क्योंकि उनको मालूम था कि उन्होंने पाप किया है । पर पोप ने उन सबसे कहा कि वे अपने अपने काम बतायें ।

वह फिर अपने पिता की तरफ घूमा और कहा — “पिता जी । मैं आपका वह बेटा हूँ जिसे आपने मारने के लिये भेज दिया था क्योंकि मैंने आपसे कहा था कि मैं चिड़िया कुत्तों और मेंढकों की भाषा जानता हूँ । आपने मेरे साथ ऐसा व्यवहार किया जबकि इस खजॉची और राजा मेरे इसी ज्ञान के लिये बहुत कृतज्ञ थे ।”

पिता ने अपने अपराध के लिये बहुत पछतावा प्रगट किया और बहुत जोर जोर से रोया । बेटे ने उसे माफ कर दिया और फिर जब तक वह जिन्दा रहा उसने अपने पिता को अपने पास ही रखा ।



List of Stories in “Folktales of Animal Language”

1. The King Ashwapati
2. The Grateful Serpent
3. Animal Language
4. Animal Talk and the Nosy Wife
5. The Tale of the Bull and the Ass
6. Animal Speech
7. Snake's Gift: animal's language
8. Strike But Hear
9. The Language of the Birds-1
10. The Language of the Birds-2
11. The Four Princes
12. The Language of the Animals

देश विदेश की लोक कथाओं की सीरीज़ में प्रकाशित पुस्तकें —

इस कड़ी में 100 से भी अधिक पुस्तकें उपलब्ध हैं। पुस्तक सूची की पूरी जानकारी के लिये लिखें —
hindifolktales@gmail.com

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हिन्दी ब्रेल में संसार भर में उन सबको निःशुल्क उपलब्ध है जो हिन्दी ब्रेल पढ़ सकते हैं।

- 1 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-1
- 2 नाइजीरिया की लोक कथाएँ-2
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1
- 4 रैवन की लोक कथाएँ-1

नीचे लिखी हुई पुस्तकें हार्ड कापी में बाजार में उपलब्ध हैं।

- 1 रैवन की लोक कथाएँ-1 — भोपाल, इन्द्रा पब्लिशिंग हाउस, 2016
- 2 इथियोपिया की लोक कथाएँ-1 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
- 3 इथियोपिया की लोक कथाएँ-2 — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2017, 120 पृष्ठ
- 4 शीबा की रानी मकेडा — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 160 पृष्ठ
- 5 राजा सोलोमन — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2019, 144 पृष्ठ
- 6 रैवन की लोक कथाएँ — देहली, प्रभात प्रकाशन, 2020, 176 पृष्ठ
- 7 बंगाल की लोक कथाएँ — देहली, नेशनल बुक ट्रस्ट, 2020, 213 पृष्ठ

Facebook Group

<https://www.facebook.com/groups/hindifolktales/?ref=bookmarks>

Updated in 2022

लेखिका के बारे में



सुषमा गुप्ता का जन्म उत्तर प्रदेश के अलीगढ़ शहर में सन् 1943 में हुआ था। आगरा विश्वविद्यालय से समाज शास्त्र और अर्थ शास्त्र में एम ए किया और फिर मेरठ विश्वविद्यालय से बी एड किया। उसके बाद 1976 में भारत से नाइजीरिया पहुँच कर यूनिवर्सिटी ऑफ़ इबादान से लाइब्रेरी साइन्स में एम एल एस कर के एक थियोलोजिकल कौलज में 10 वर्षों तक लाइब्रेरियन का कार्य किया। उसके बाद इथियोपिया की एडिस अबाबा यूनिवर्सिटी के इन्स्टीट्यूट ऑफ़ इथियोपियन स्टडीज़ की लाइब्रेरी में 3 साल कार्य किया। तत्पश्चात दक्षिणी अफ्रीका के एक देश लिसोटो की नेशनल यूनिवर्सिटी में इन्स्टीट्यूट ऑफ़ सर्न अफ्रीकन स्टडीज़ में 1 साल कार्य करने का अवसर मिला।

तत्पश्चात 1995 में यू एल एस ए से फिर से मास्टर ऑफ़ लाइब्रेरी एंड इनफ़ॉर्मेशन साइन्स कर के 4 साल एक ओटोमोटिव इन्डस्ट्री एक्शन ग्रुप के पुस्तकालय में कार्य किया।

1998 में सेवा निवृत्ति के पश्चात अपनी एक वेब साइट बनायी - www.sushmajee.com। तब से ये उसी वेब साइट पर काम कर रहीं हैं। उस वेब साइट में हिन्दू धर्म के साथ साथ बच्चों के लिये भी काफी सामग्री है।

भिन्न भिन्न देशों में रहने से इनको अपने कार्यकाल में वहाँ की बहुत सारी लोक कथाओं को जानने का अवसर मिला - कुछ पढ़ने से, कुछ लोगों से सुनने से और कुछ ऐसे साधनों से जो केवल इन्हीं को उपलब्ध थे। उन सबको देख कर इनको ऐसा लगा कि ये लोक कथाएँ हिन्दी जानने वाले बच्चों और हिन्दी में रिसर्च करने वालों को तो कभी उपलब्ध ही नहीं हो पायेंगी - हिन्दी की तो बात ही अलग है अंग्रेजी में भी नहीं मिल पायेंगी।

इसलिये इन्होंने न्यूनतम हिन्दी पढ़ने वालों को ध्यान में रखते हुए उन लोक कथाओं को हिन्दी में लिखना प्रारम्भ किया। इन लोक कथाओं में अफ्रीका, एशिया और दक्षिणी अमेरिका के देशों की लोक कथाओं पर अधिक ध्यान दिया गया है पर उत्तरी अमेरिका और यूरोप के देशों की भी कुछ लोक कथाएँ सम्मिलित कर ली गयी हैं।

अभी तक 2500 से अधिक लोक कथाएँ हिन्दी में लिखी जा चुकी है। इनको “देश विदेश की लोक कथाएँ” और “लोक कथाओं की क्लासिक पुस्तकें” क्रम में प्रकाशित करने का प्रयास किया जा रहा है। आशा है कि इस प्रकाशन के माध्यम से हम इन लोक कथाओं को जन जन तक पहुँचा सकेंगे।

विंडसर, कैनेडा

2022